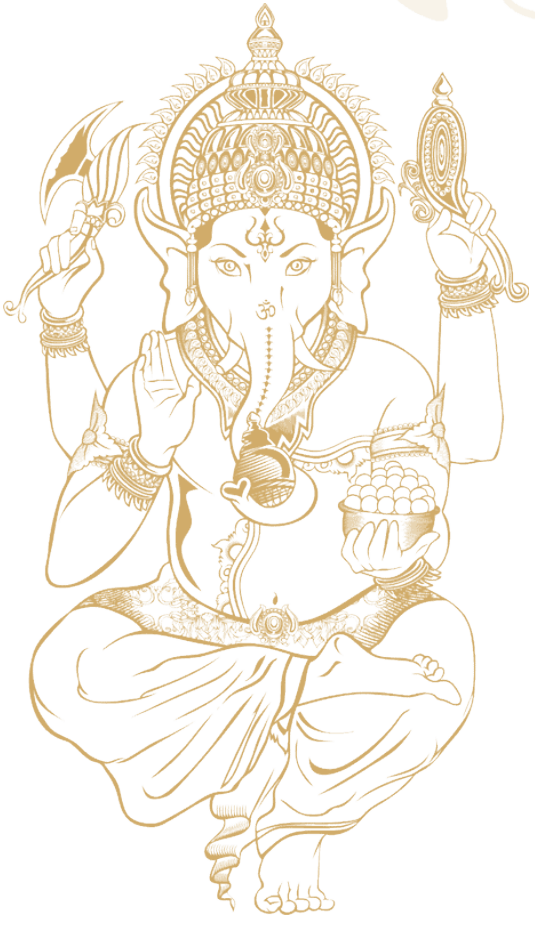

Ashok Malani

10 Jul 1971

02:00 AM

Mancheral

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120590401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**9-10/07/1971**
दिन	शुक्र-शनिवार
जन्म समय	**02:00:00 घंटे**
इष्ट	50:47:08 घटी
स्थान	**Mancheral**
राज्य	Andhra Pradesh
देश	India

अक्षांश	18:52:00 उत्तर
रेखांश	79:26:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:12:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	01:47:44 घंटे
वेलान्तर	-00:05:00 घंटे
साम्पातिक काल	20:56:13 घंटे
सूर्योदय	05:41:08 घंटे
सूर्यास्त	18:53:22 घंटे
दिनमान	13:12:14 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	23:30:32 मिथुन
लग्न के अंश	29:34:15 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मेष - मंगल
राशि-स्वामी	**मकर - शनि**
नक्षत्र-चरण	**श्रवण - 1**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	विष्कुम्भ
करण	गर
गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खी-खिली
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1893	आषाढ़	19
पंजाबी	संवत : 2028	आषाढ़	26
बंगाली	सन् : 1378	आषाढ़	25
तमिल	संवत : 2028	आनी	26
केरल	कोल्लम : 1146	मिथुनम	26
नेपाली	संवत : 2028	आषाढ़	26
चैत्रादि	संवत : 2028	श्रावण	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2028	आषाढ़	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 1
तिथि समाप्ति काल _____: 14:23:07
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 22:51:42 घंटे
जन्म योग _____: श्रवण
सूर्योदय कालीन योग ____: वैधृति
योग समाप्ति काल _____: 17:26:34 घंटे
जन्म योग _____: विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 14:23:07 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 07:50:44
भभोग _____: 56:35:50
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 8 वर्ष 7 मा 13 दि

घात चक्र

मास _____: वैशाख
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: मंगलवार
नक्षत्र _____: रोहिणी
योग _____: वैधृति
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: कुम्भ
सूर्य _____: कुम्भ
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगल _____: मीन
बुध _____: धनु
गुरु _____: मेष
शुक्र _____: वृष
शनि _____: मकर
राहु _____: मिथुन

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

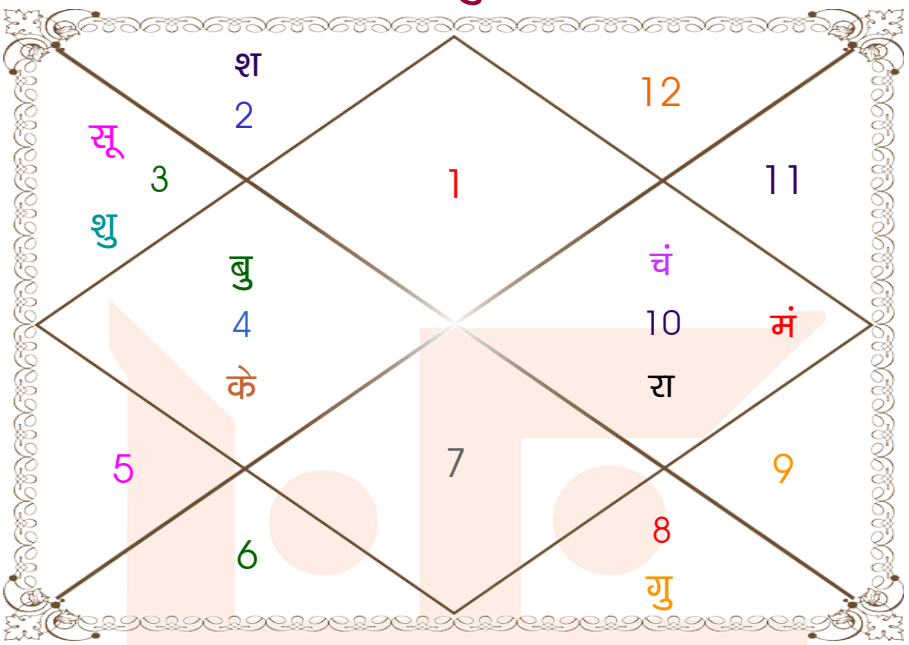

चन्द्र कुंडली

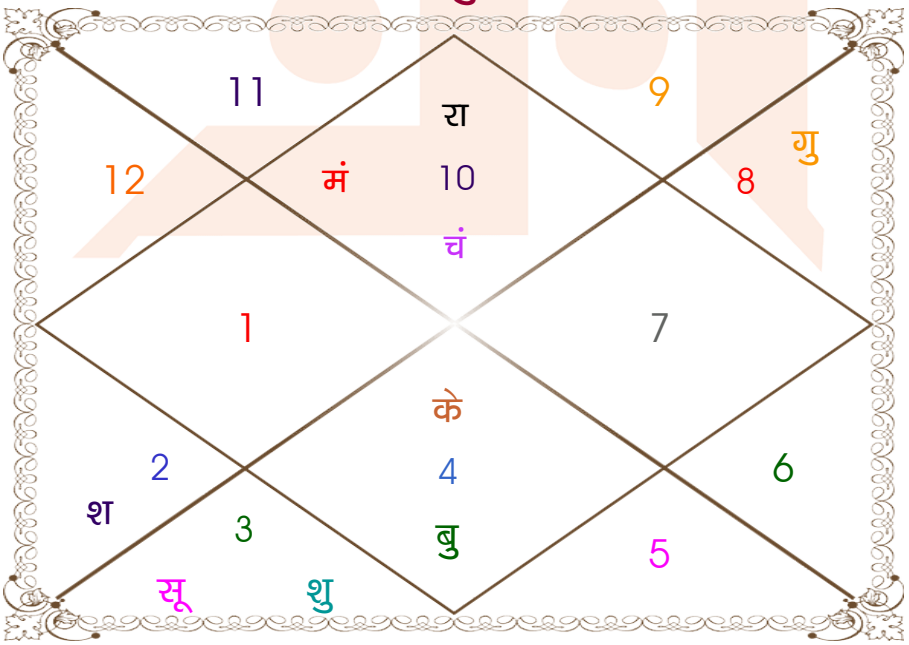

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

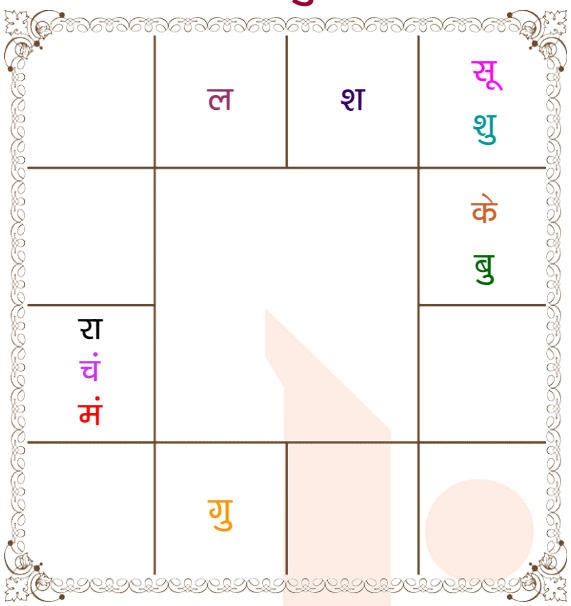

लग्न कुंडली

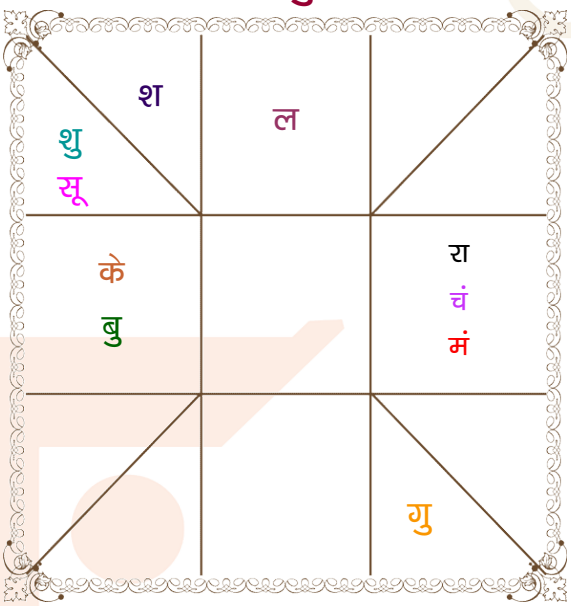

विंशोत्तरी
चन्द्र 8वर्ष 7मा 13दि

चन्द्र

10/07/1971

21/02/2090

चन्द्र	21/02/1980
मंगल	21/02/1987
राहु	20/02/2005
गुरु	20/02/2021
शनि	21/02/2040
बुध	20/02/2057
केतु	21/02/2064
शुक्र	21/02/2084
सूर्य	21/02/2090

योगिनी
मंगला 0वर्ष 10मा 10दि

उल्का

20/05/2022

19/05/2028

उल्का	20/05/2023
सिद्धा	19/07/2024
संकटा	18/11/2025
मंगला	18/01/2026
पिंगला	20/05/2026
धान्या	19/11/2026
भ्रामरी	20/07/2027
भद्रिका	19/05/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	29:34:15	390:16:28	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	राहु	---
सूर्य			मिथु	23:30:32	00:57:11	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	शनि	सम राशि
चंद्र			मक	11:50:23	14:04:50	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	मंगल	सम राशि
मंगल			मक	28:28:53	00:01:05	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	उच्च राशि
बुध			कर्क	12:41:26	01:42:27	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	मंगल	शत्रु राशि
गुरु	व		वृश्चि	03:28:23	00:02:42	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	मित्र राशि
शुक्र			मिथु	10:07:32	01:13:21	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	गुरु	मित्र राशि
शनि			वृष	08:56:02	00:06:17	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
राहु	व		मक	21:11:34	00:00:48	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	21:11:34	00:00:48	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	मित्र राशि
हर्ष			कन्या	16:11:16	00:01:10	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	---
नेप	व		वृश्चि	07:07:56	00:01:00	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	---
प्लूटो			कन्या	03:47:37	00:01:01	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	---
दशम भाव			मक	18:07:58	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:27:46

लग्न-चलित

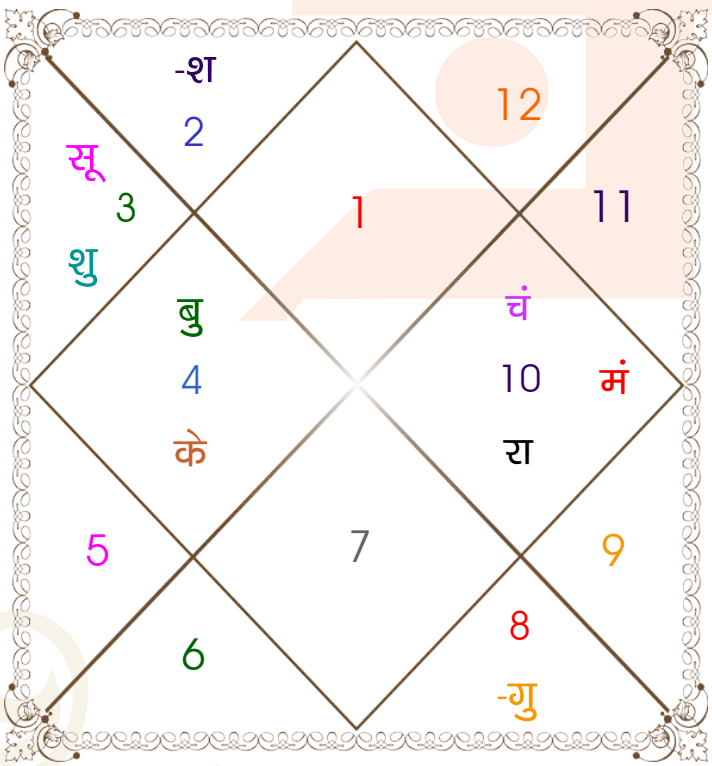

चन्द्र कुंडली

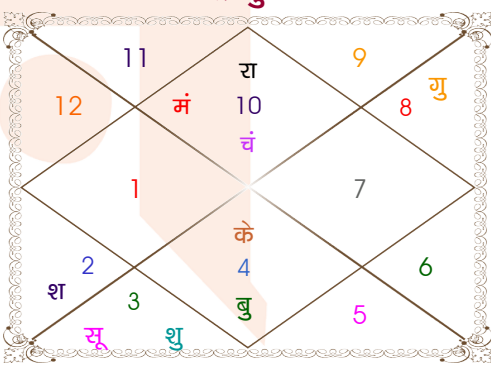

नवमांश कुंडली

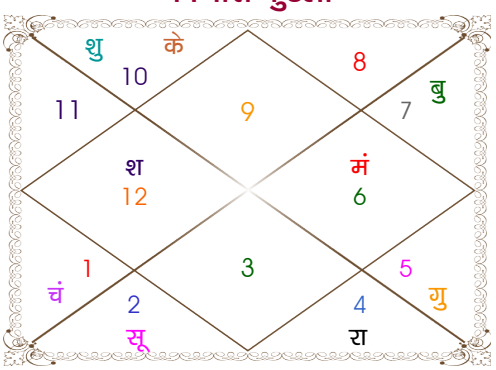

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	12:39:52	मेष	29:34:15
2	वृष	12:39:52	वृष	25:45:29
3	मिथुन	08:51:06	मिथुन	21:56:44
4	कर्क	05:02:21	कर्क	18:07:58
5	सिंह	05:02:21	सिंह	21:56:44
6	कन्या	08:51:06	कन्या	25:45:29
7	तुला	12:39:52	तुला	29:34:15
8	वृश्चिक	12:39:52	वृश्चिक	25:45:29
9	धनु	08:51:06	धनु	21:56:44
10	मकर	05:02:21	मकर	18:07:58
11	कुम्भ	05:02:21	कुम्भ	21:56:44
12	मीन	08:51:06	मीन	25:45:29

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	29:34:15
2	वृष	27:01:12
3	मिथुन	21:59:48
4	कर्क	18:07:58
5	सिंह	18:21:51
6	कन्या	23:26:22
7	तुला	29:34:15
8	वृश्चिक	27:01:12
9	धनु	21:59:48
10	मकर	18:07:58
11	कुम्भ	18:21:51
12	मीन	23:26:22

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा

चलित कुंडली

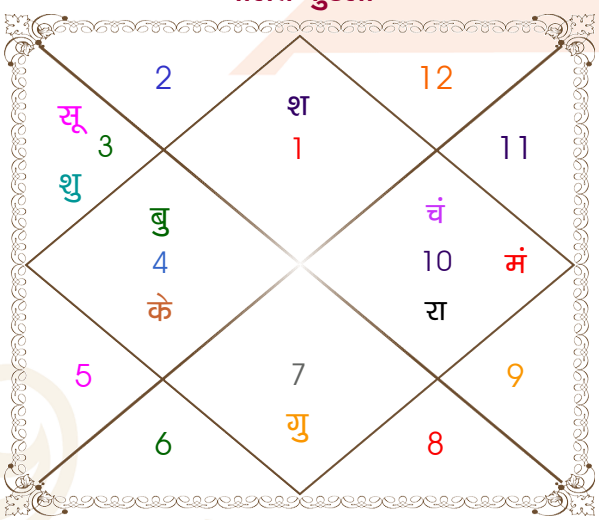

भाव कुंडली

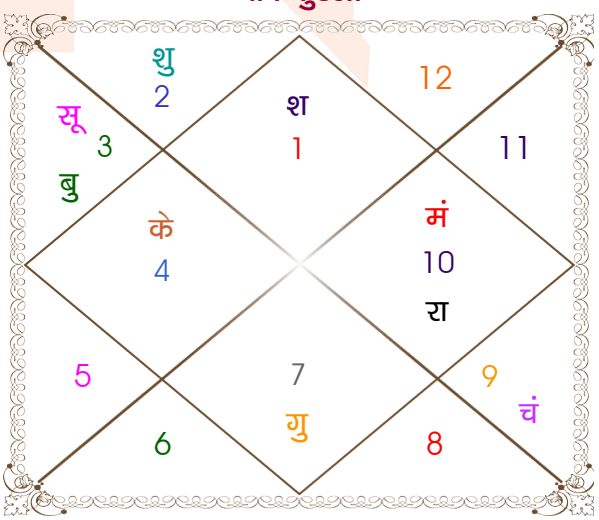

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	वृद्ध	शक्त	भोजन	7.10	68 %
चंद्र	मातृ	मातृ	वृद्ध	निपीदित	भोजन	1.72	51 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	बाल	दीप्त	नृत्यलिप्सा	14.96	41 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	युवा	खल	भोजन	1.31	46 %
गुरु	कलत्र	धन	मृत	मुदित	नेत्रपाणि	3.19	55 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	कुमार	मुदित	शयन	6.33	82 %
शनि	ज्ञाति	आयु	वृद्ध	मुदित	प्रकाश	0.70	18 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	मुदित	भोजन	0.00	81 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	मुदित	प्रकाश	0.00	81 %
कुल						35.31	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा

चलित कुंडली

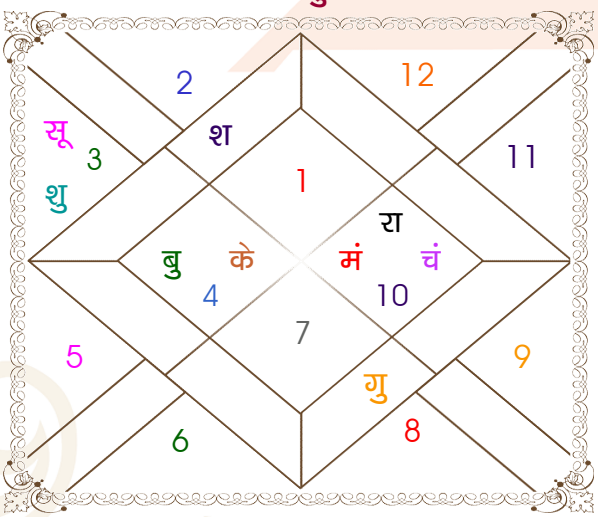

लग्न-चलित

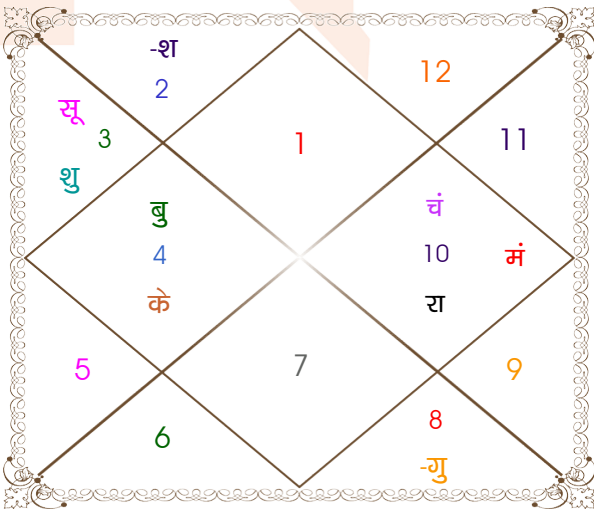

सुदर्शन चक्र

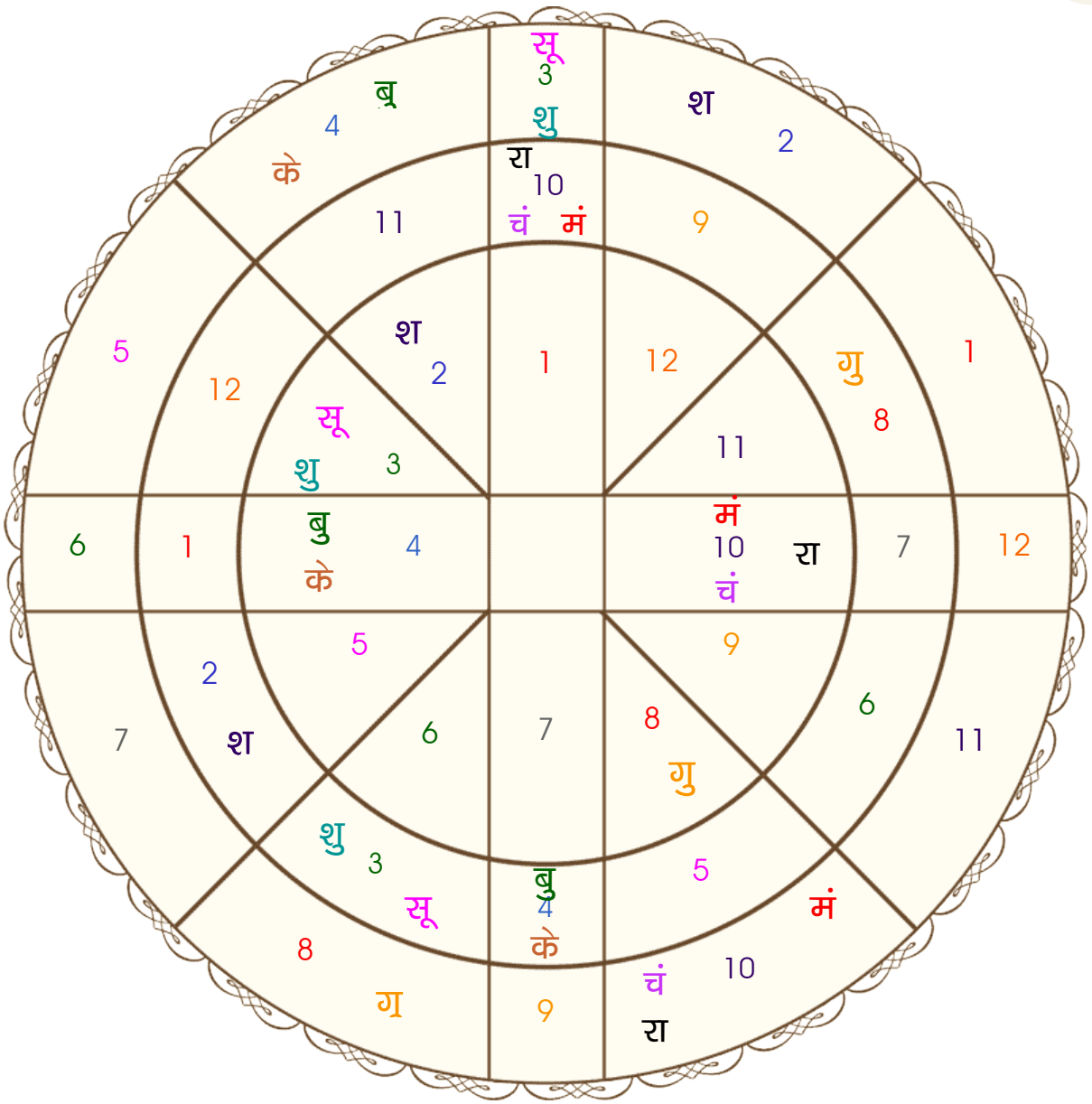

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : चन्द्र 8 वर्ष 6 मास 15 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	23:36:51	बुध	गुरु	शनि	गुरु
चंद्र		मक	11:56:43	शनि	चंद्र	राहु	राहु
मंगल		मक	28:35:13	शनि	मंगल	शनि	केतु
बुध		कर्क	12:47:45	चंद्र	शनि	मंगल	सूर्य
गुरु	व	वृश्चि	03:34:43	मंगल	शनि	शनि	शनि
शुक्र		मिथु	10:13:51	बुध	राहु	गुरु	राहु
शनि		वृष	09:02:22	शुक्र	सूर्य	शुक्र	गुरु
राहु	व	मक	21:17:54	शनि	चंद्र	शुक्र	राहु
केतु	व	कर्क	21:17:54	चंद्र	बुध	शुक्र	बुध
हर्ष		कन्या	16:17:36	बुध	चंद्र	शनि	बुध
नेप	व	वृश्चि	07:14:16	मंगल	शनि	बुध	शनि
प्लूटो		कन्या	03:53:57	बुध	सूर्य	शनि	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मेष	29:40:34	मंगल	सूर्य	राहु	गुरु
2	वृष	27:07:32	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
3	मिथु	22:06:08	बुध	गुरु	शनि	शनि
4	कर्क	18:14:18	चंद्र	बुध	बुध	गुरु
5	सिंह	18:28:11	सूर्य	शुक्र	राहु	गुरु
6	कन्या	23:32:42	बुध	मंगल	मंगल	गुरु
7	तुला	29:40:34	शुक्र	गुरु	चंद्र	राहु
8	वृश्चि	27:07:32	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
9	धनु	22:06:08	गुरु	शुक्र	शनि	शनि
10	मक	18:14:18	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
11	कुंभ	18:28:11	शनि	राहु	चंद्र	गुरु
12	मीन	23:32:42	गुरु	बुध	मंगल	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:21:26

फॉरच्युना : वृश्चिक 18:00:26

लग्न कुंडली

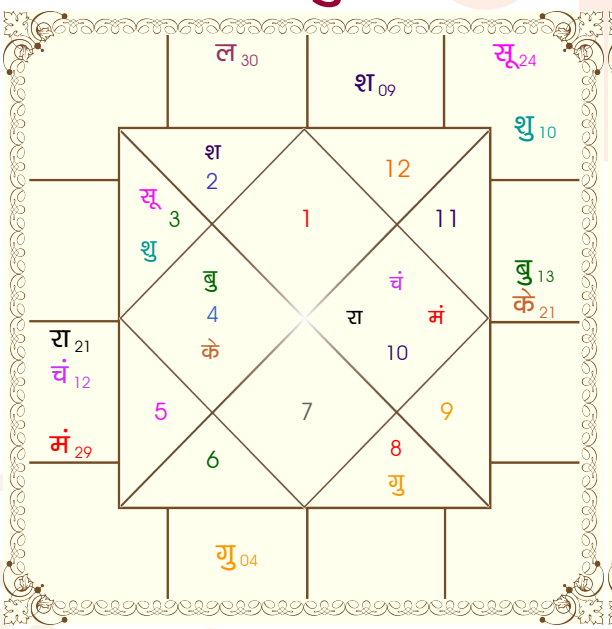

भाव कुंडली

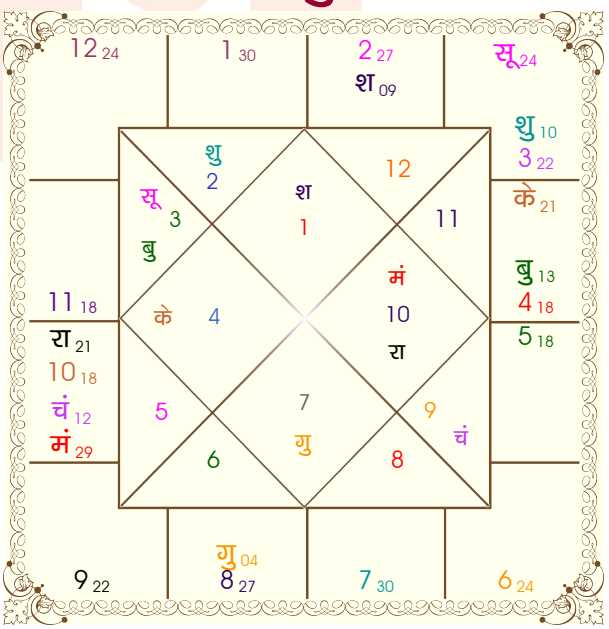

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल, बुध, गुरु, शनि,
2	शुक्र,
3	सूर्य, बुध, शनि, केतु+
4	चंद्र, राहु- केतु,
5	सूर्य- शनि-
6	बुध- केतु-
7	सूर्य, गुरु, शुक्र-
8	मंगल,
9	सूर्य- चंद्र+ गुरु- राहु,
10	मंगल+ बुध- गुरु- शुक्र, शनि- राहु,
11	बुध- गुरु- शनि-
12	सूर्य- गुरु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3, 5- 7, 9- 12-
चंद्र	4, 9+
मंगल	1, 8, 10+
बुध	1, 3, 6- 10- 11-
गुरु	1, 7, 9- 10- 11- 12-
शुक्र	2, 7- 10,
शनि	1, 3, 5- 10- 11-
राहु	4- 9, 10,
केतु	3+ 4, 6-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	मंगल
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	बु गु	श	मं	मं
2	--	शु	--	शु
3	श के	सू बु	के	बु
4	--	के	चं रा	चं
5	--	--	श	सू
6	--	--	के	बु
7	सू	गु	--	शु
8	--	--	मं	मं
9	चं रा	चं	सू	गु
10	मं शु	मं रा	बु गु	श
11	--	--	बु गु	श
12	--	--	सू	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	5	1	मिथुन	3
चंद्र	4	10	मकर	9
मंगल	1,8	2,6	मकर	10
बुध	3,6	4,8,12	कर्क	3
गुरु	9,12	3,7	वृश्चिक	7
शुक्र	2,7	5,9	मिथुन	2
शनि	10,11	---	वृष	1
राहु	---	11	मकर	10
केतु	---	---	कर्क	4

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	9,12	3,7	7	10,11	---	1
चंद्र	4	10	9	---	11	10
मंगल	1,8	2,6	10	10,11	---	1
बुध	10,11	---	1	1,8	2,6	10
गुरु	10,11	---	1	10,11	---	1
शुक्र	---	11	10	9,12	3,7	7
शनि	5	1	3	2,7	5,9	2
राहु	4	10	9	2,7	5,9	2
केतु	3,6	4,8,12	3	2,7	5,9	2

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	83.51	281.84	298.48	102.69	213.47	70.13	38.93	291.19	111.19	166.19	217.13	153.79
सूर्य	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
83.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	पंच	युति	सप्त	--	--	--
281.84	0.00	0.00	0.00	9.96	0.00	0.00	2.17	5.57	5.57	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	--	--	4था	युति	सप्त	--	--	8वां
298.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.58	7.23	7.23	0.00	0.00	8.49
बुध	--	सप्त	--	--	--	--	--	सप्त	युति	तृती	पंच	--
102.69	0.00	9.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.29	6.29	1.83	0.35	0.00
गुरु	9वां	--	चतु	9वां	--	--	सप्त	--	--	--	युति	--
213.47	5.03	0.00	0.78	5.69	0.00	0.00	8.41	0.00	0.00	0.00	9.27	0.00
शुक्र	युति	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
70.13	1.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	अष्ट	--	10वा	3रा	सप्त	--	--	--	3रा	--	सप्त	पंच
38.93	0.79	0.00	4.58	9.24	8.41	0.00	0.00	0.00	2.83	0.00	9.82	0.67
राहु	--	युति	युति	सप्त	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
291.19	0.00	5.57	7.23	6.29	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	सप्त	सप्त	युति	--	--	--	सप्त	--	तृती	--	--
111.19	0.00	5.57	7.23	6.29	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.77	0.00	0.00
हर्ष	--	पंच	--	--	--	--	--	पंच	--	--	--	युति
166.19	0.00	1.26	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.77	0.00	0.00	0.00	2.70
नेप	--	तृती	--	--	युति	--	सप्त	--	--	--	--	--
217.13	0.00	1.00	0.00	0.00	9.27	0.00	9.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	तृती	--	--	--	--	युति	तृती	--
153.79	0.00	0.00	0.00	0.00	2.99	0.00	0.00	0.00	0.00	2.70	1.93	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	29.57	55.76	81.95	108.13	141.95	175.76	209.57	235.76	261.95	288.13	321.95	355.76
सूर्य	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--
83.51	0.00	0.00	9.87	0.00	2.75	2.49	0.00	0.00	9.87	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--
281.84	0.00	0.00	0.00	7.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.91	0.99	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
298.48	9.94	2.27	0.00	4.68	7.75	0.00	0.00	0.00	0.00	4.68	0.00	2.27
बुध	--	--	--	--	नवां	--	--	--	--	सप्त	--	--
102.69	0.00	0.00	0.00	0.00	0.39	0.00	0.00	0.00	0.00	8.42	0.00	0.00
गुरु	सप्त	--	9वां	9वां	--	--	युति	--	--	--	5वां	--
213.47	9.18	0.00	3.56	0.36	0.00	0.00	9.18	0.00	0.00	0.00	3.56	0.00
शुक्र	--	युति	युति	--	पंचा	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--
70.13	0.00	0.66	3.27	0.00	0.96	0.00	0.00	0.66	3.27	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	--	3रा	--	--	--	--	--	--	10वा	--
38.93	5.57	0.00	0.00	5.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.07	0.00
राहु	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
291.19	0.00	1.10	0.38	9.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.49	0.00	1.10
केतु	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--
111.19	0.00	0.00	0.00	9.49	0.00	1.10	0.00	1.10	0.00	9.49	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त
166.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.38	0.00	0.00	0.19	0.00	0.00	5.38
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	अष्ट	पंचा	--	--
217.13	7.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.03	0.00	0.96	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	अष्टां	सप्त	--
153.79	0.00	0.00	0.00	0.00	3.24	0.00	1.35	0.00	0.00	0.51	3.24	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	29.57	57.02	82.00	108.13	138.36	173.44	209.57	237.02	262.00	288.13	318.36	353.44
सूर्य	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--
83.51	0.00	0.00	9.87	0.00	0.67	3.00	0.00	0.00	9.87	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	पंचा
281.84	0.00	0.00	0.00	7.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.91	0.00	0.81
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
298.48	9.94	2.78	0.00	4.68	4.89	0.00	0.00	0.00	0.00	4.68	0.00	0.74
बुध	--	--	--	--	--	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--
102.69	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.50	0.00	8.42	0.00	0.00
गुरु	सप्त	--	9वां	9वां	--	--	युति	--	--	--	--	--
213.47	9.18	0.00	3.61	0.36	0.00	0.00	9.18	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	युति	युति	--	--	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--
70.13	0.00	1.97	3.22	0.00	0.00	0.00	0.00	1.97	3.22	0.00	0.00	0.00
शनि	युति	--	--	3रा	--	अष्टां	--	--	--	--	10वा	--
38.93	5.57	0.00	0.00	5.71	0.00	0.71	0.00	0.00	0.00	0.00	5.51	0.00
राहु	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
291.19	0.00	0.14	0.30	9.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.49	0.00	2.50
केतु	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--
111.19	0.00	0.00	0.00	9.49	0.00	2.50	0.00	0.14	0.00	9.49	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त
166.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.25	0.00	0.00	0.15	0.00	0.00	7.25
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	अष्ट	पंचा	--	--
217.13	7.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.03	0.00	0.98	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	तृती	--	--	अष्टां	--	--
153.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.35	0.00	0.00	0.51	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

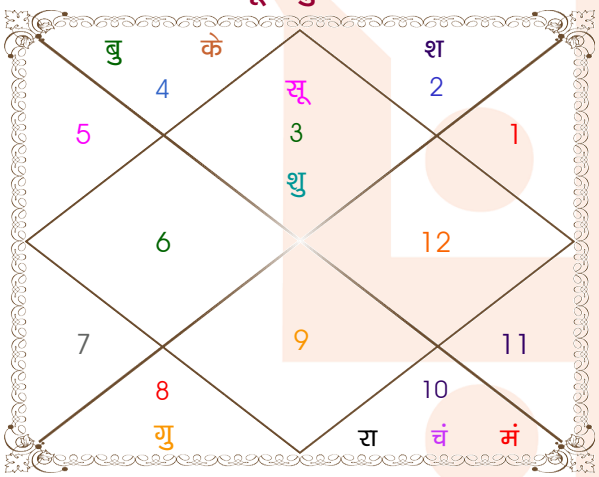

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

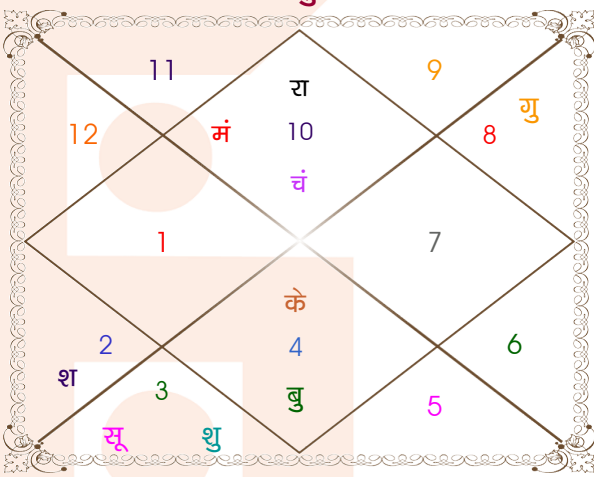

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

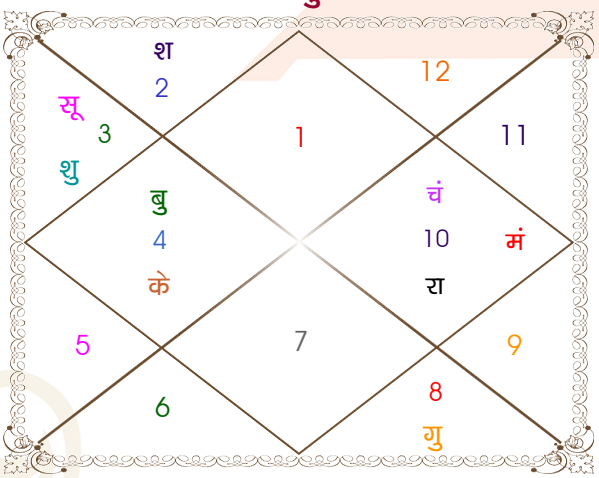

देह विचारः

होरा कुंडली

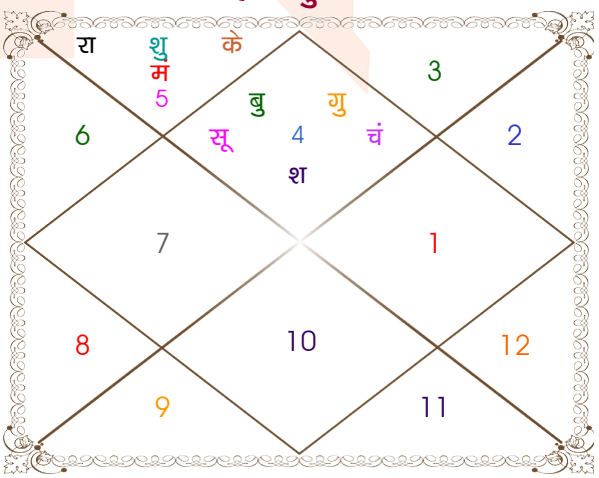

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

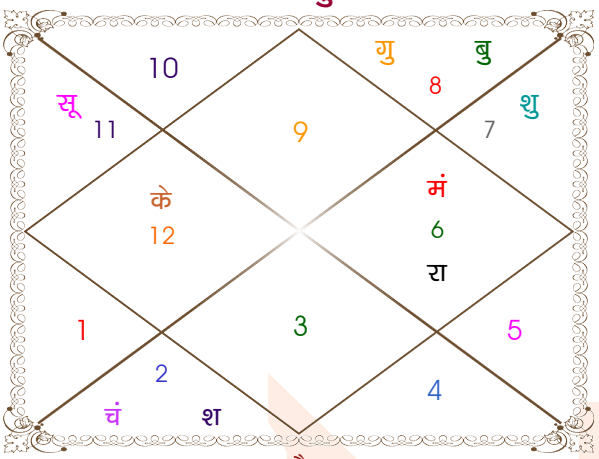

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

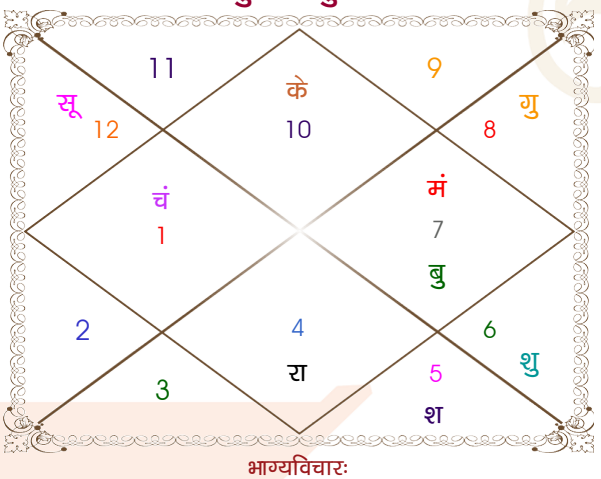

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

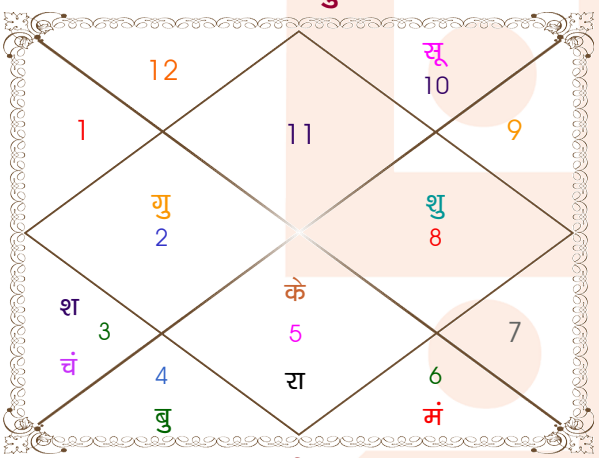

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

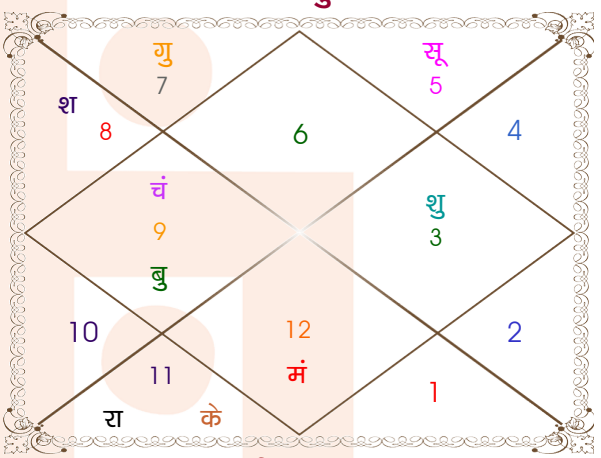

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

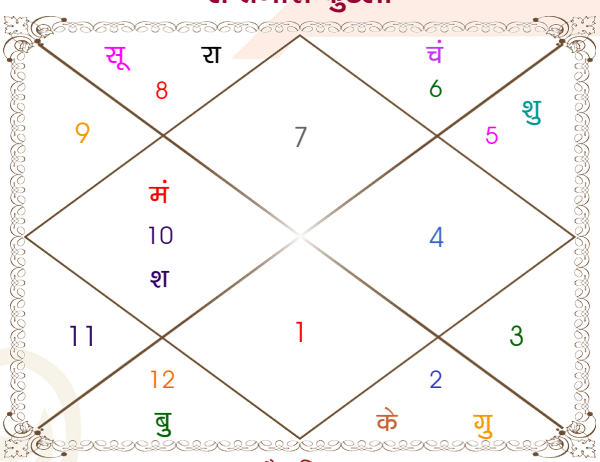

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

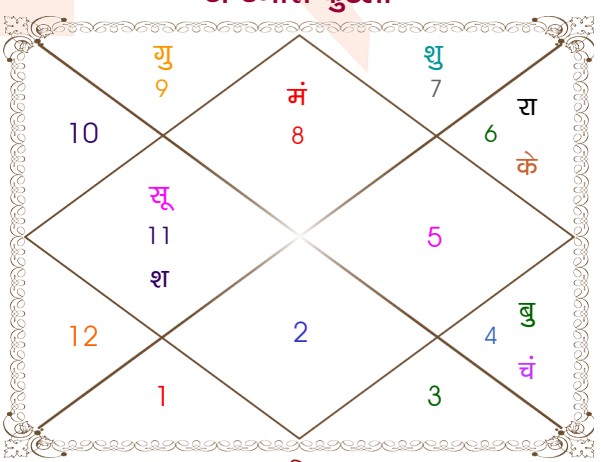

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

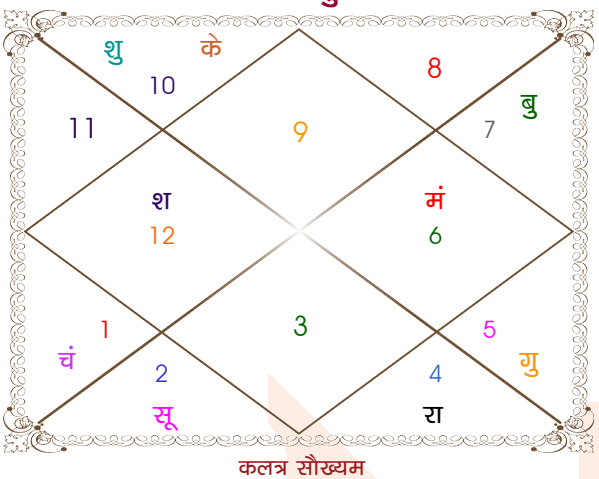

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

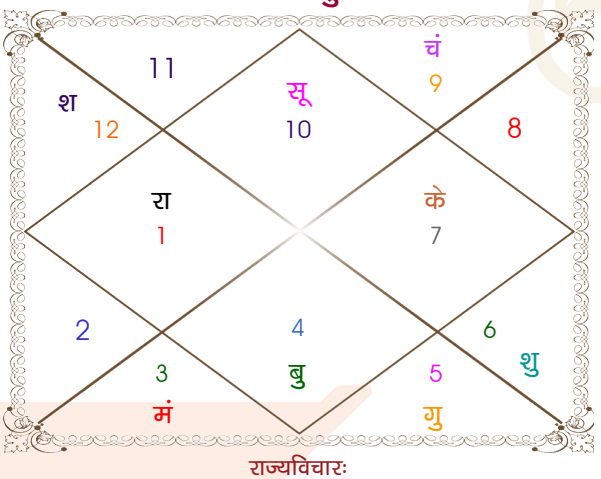

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

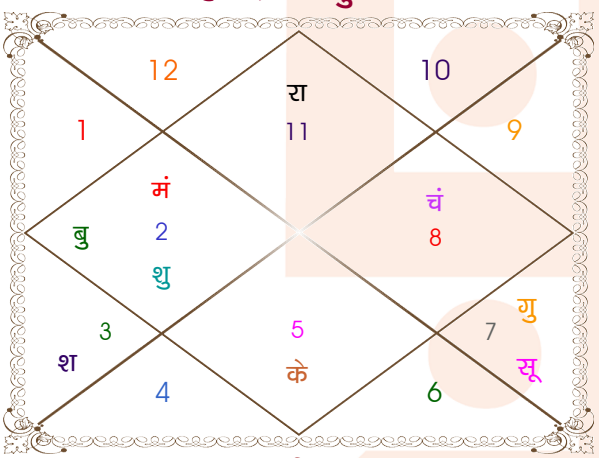

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

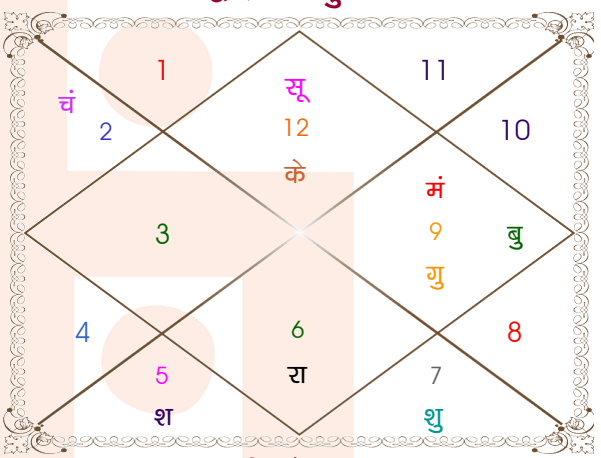

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

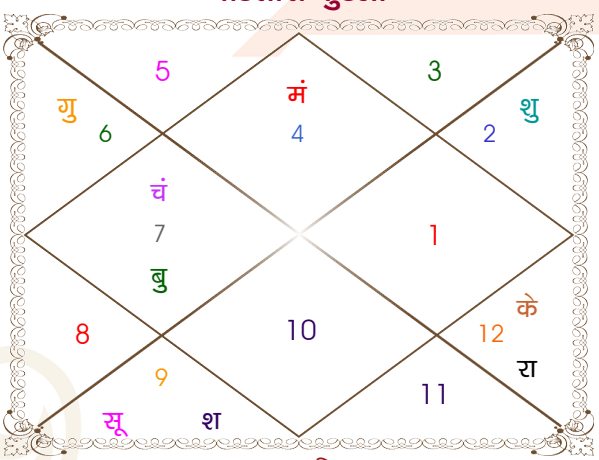

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

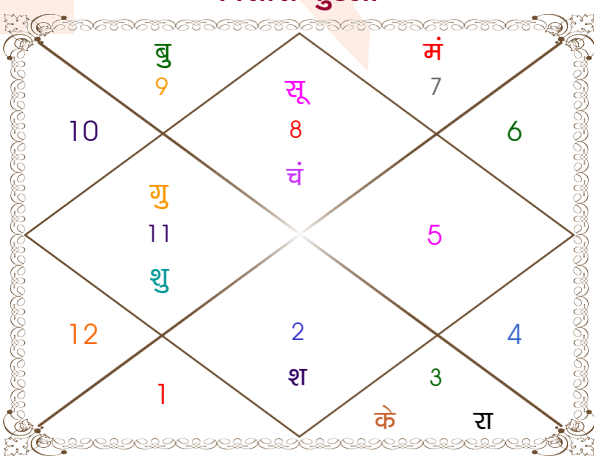

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

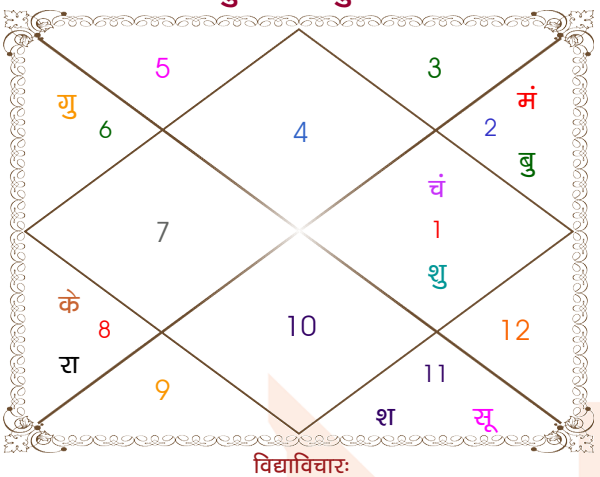

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

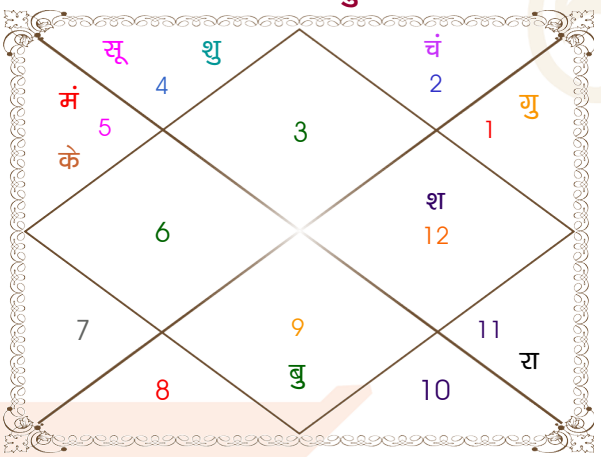

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

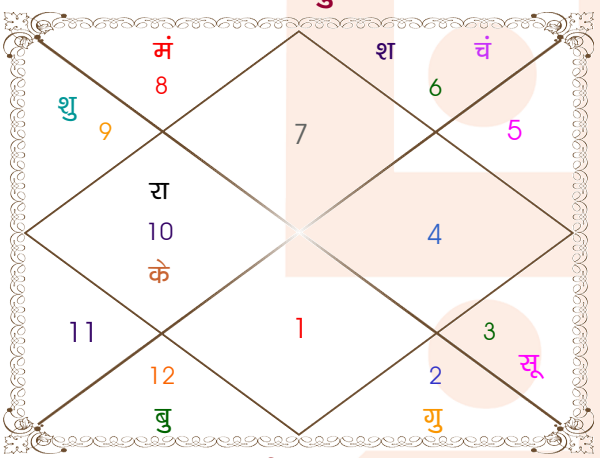

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

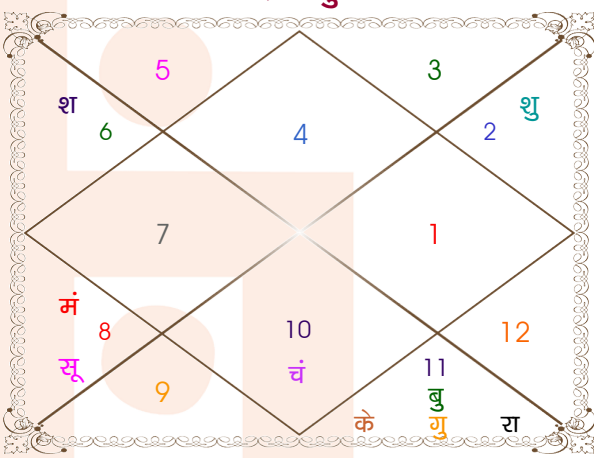

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

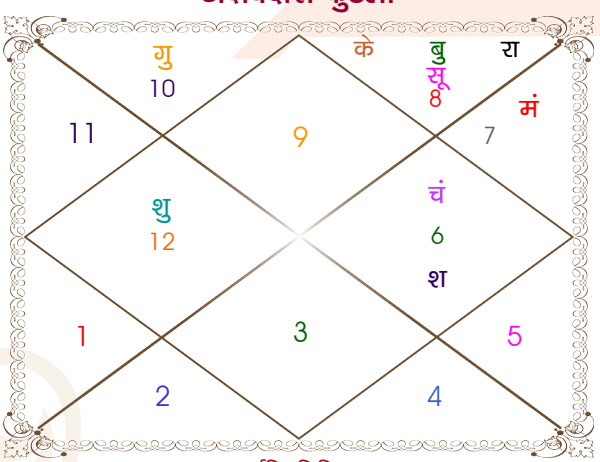

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

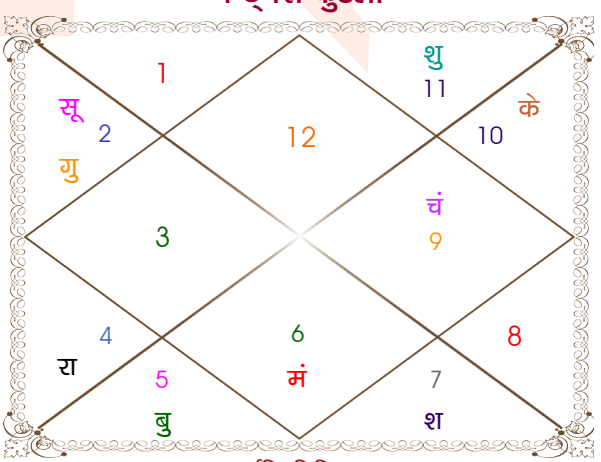

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मेष	मिथु	मक	मक	कर्क	वृश्चि	मिथु	वृष	मक	कर्क
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	धनु	कुंभ	वृष	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	तुला	वृष	कन्या	मीन
चतुर्थांश	मक	मीन	मेष	तुला	तुला	वृश्चि	कन्या	सिंह	कर्क	मक
सप्तमांश	तुला	वृश्चि	कन्या	मक	मीन	वृष	सिंह	मक	वृश्चि	वृष
नवमांश	धनु	वृष	मेष	कन्या	तुला	सिंह	मक	मीन	कर्क	मक
दशमांश	मक	मक	धनु	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	मीन	मेष	तुला
द्वादशांश	मीन	मीन	वृष	धनु	धनु	धनु	तुला	सिंह	कन्या	मीन
षोडशांश	कर्क	धनु	तुला	कर्क	तुला	कन्या	वृष	धनु	मीन	मीन
विंशांश	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि	तुला	धनु	कुंभ	कुंभ	वृष	मिथु	मिथु
चतुर्विंशांश	कर्क	कुंभ	मेष	वृष	वृष	कन्या	मेष	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
सप्तविंशांश	मिथु	कर्क	वृष	सिंह	धनु	मेष	कर्क	मीन	कुंभ	सिंह
त्रिंशांश	तुला	मिथु	कन्या	वृश्चि	मीन	वृष	धनु	कन्या	मक	मक
खवेदांश	कर्क	वृश्चि	मक	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	वृष	कन्या	कुंभ	कुंभ
अक्षवेदांश	धनु	वृश्चि	कन्या	तुला	वृश्चि	मक	मीन	कन्या	वृश्चि	वृश्चि
षष्ट्यंश	मीन	वृष	धनु	कन्या	सिंह	वृष	कुंभ	तुला	कर्क	मक

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
चन्द्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
मंगल	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
शनि	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.50	8.45	8.15	8.95	15.55	16.75	13.15	7.35	7.60
सप्तवर्ग	10.38	8.83	8.30	8.78	14.13	15.03	13.68	7.00	9.00
दशवर्ग	9.50	11.03	8.30	10.80	10.78	15.68	14.10	7.18	9.78
षोडशवर्ग	9.38	9.75	7.93	12.20	10.63	16.00	13.75	7.58	8.93

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगल	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	सम	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	35	23	60	39	21	36	6
सप्तवर्गज बल	62	60	71	41	109	113	111
ओजयुग्मक बल	15	15	0	15	15	15	0
केन्द्र बल	15	60	60	60	30	15	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	15	15	0	0
कुल स्थान बल	127	158	191	170	189	178	147
कुल दिग्बल	8	2	57	36	1	47	3
नतोन्नत बल	9	51	51	60	9	9	51
पक्ष बल	6	108	6	54	54	54	6
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	117	54	12	54	5	60	3
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	207	214	69	168	127	227	91
कुल चेष्टाबल	0	0	52	20	45	8	16
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	12	12	16	6	-9	6	9
कुल षट्बल	414	437	402	425	389	509	274
रूप षट्बल	6.9	7.3	6.7	7.1	6.5	8.5	4.6
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.2	1.3	1.0	1.0	1.5	0.9
संबंधित पद	2	4	3	5	6	1	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	43.92	35.17	55.68	27.67	30.54	16.40	9.92
कष्ट फल	11.77	15.05	1.15	29.00	23.94	35.75	48.84

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	402	509	425	437	414	425	509	402	389	274	274	389
भावदिग्बल	30	20	40	60	10	10	0	50	50	0	40	20
भावदृष्टि बल	53	41	38	41	2	17	21	10	17	79	62	63
कुल भाव बल	485	571	503	538	426	453	530	462	456	353	376	472
रूप भाव बल	8.1	9.5	8.4	9.0	7.1	7.5	8.8	7.7	7.6	5.9	6.3	7.9
संबंधित पद	5	1	4	2	10	9	3	7	8	12	11	6

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

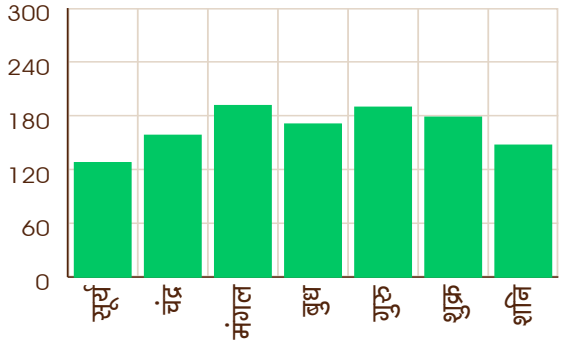

दिग्बल

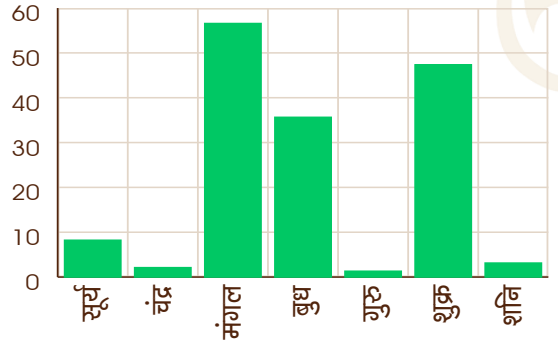

कालबल

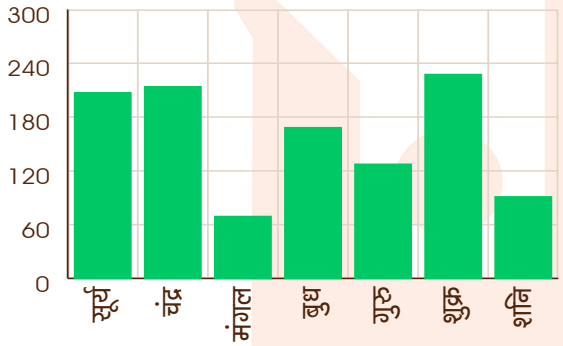

चेष्टाबल

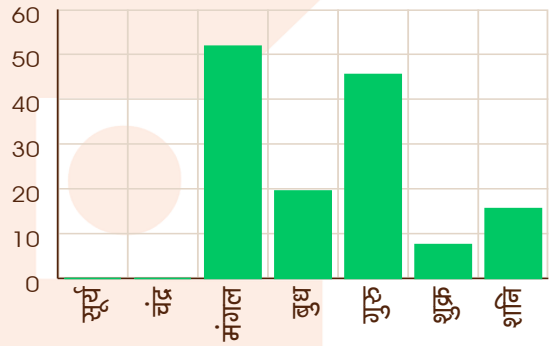

नैसर्गिक बल

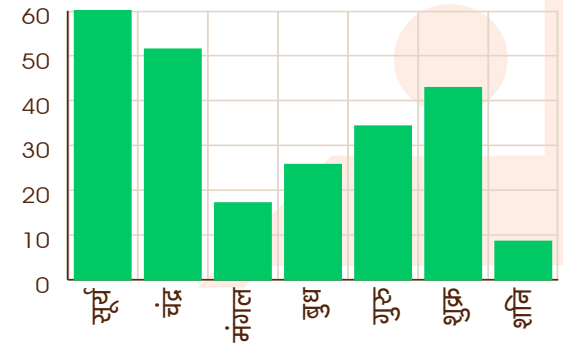

दृग्बल

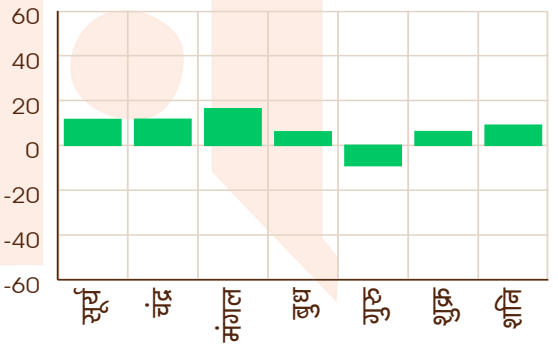

रूप षट्बल

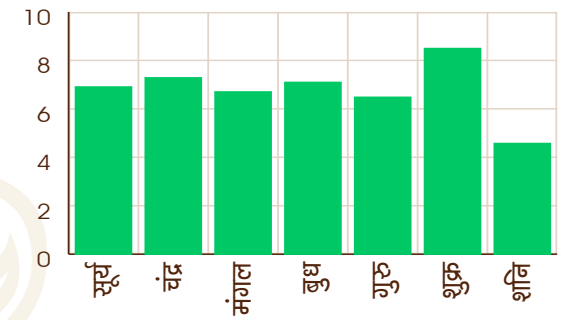

न्यूनतम षट्बल

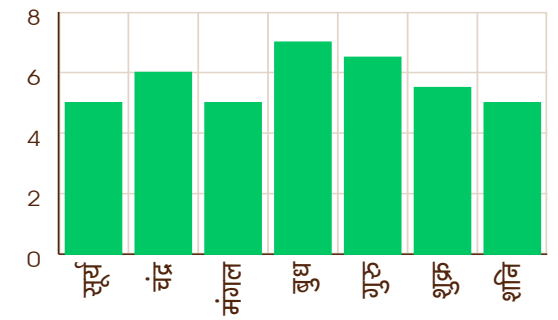

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

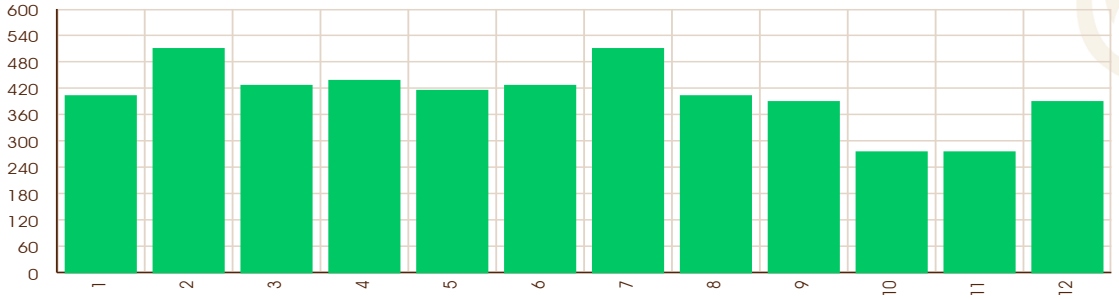

भावदिग्बल

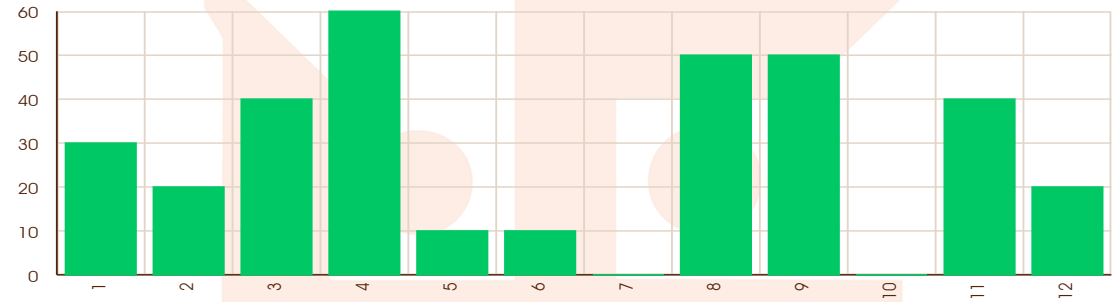

भावदृष्टि बल

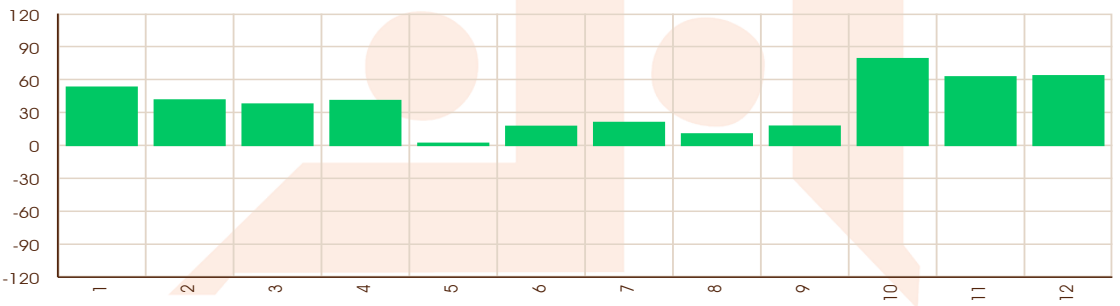

भाव बल

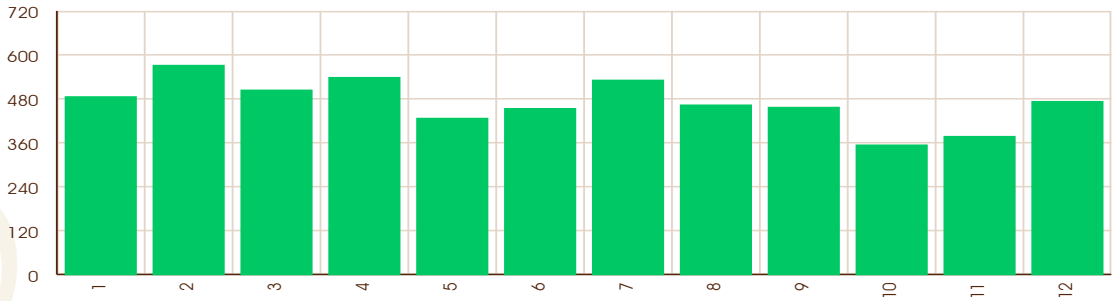

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

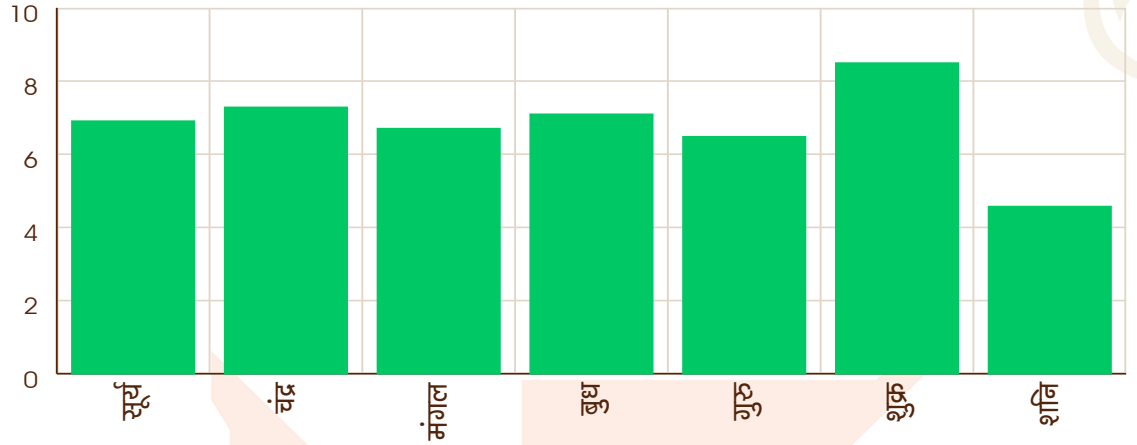

इष्ट - कष्ट फल

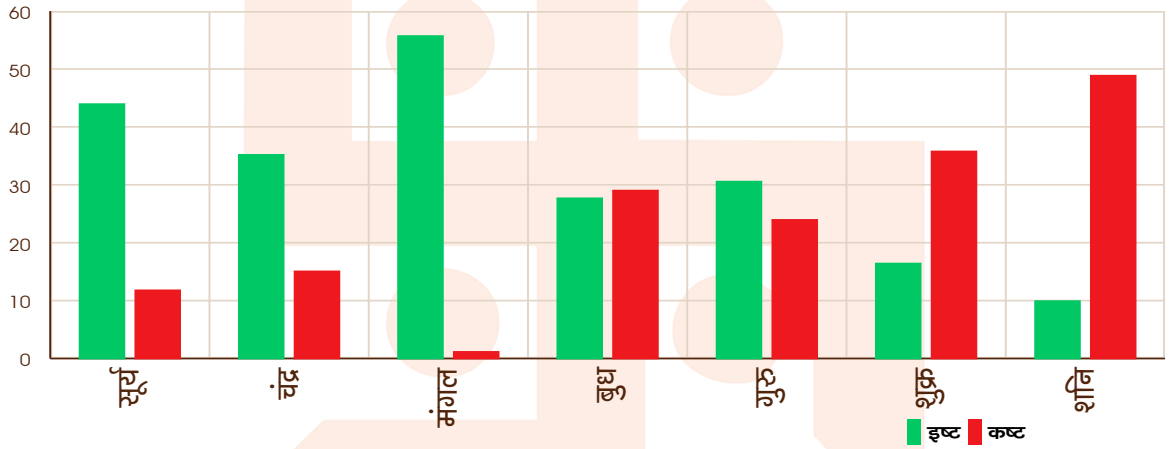

रूप भाव बल

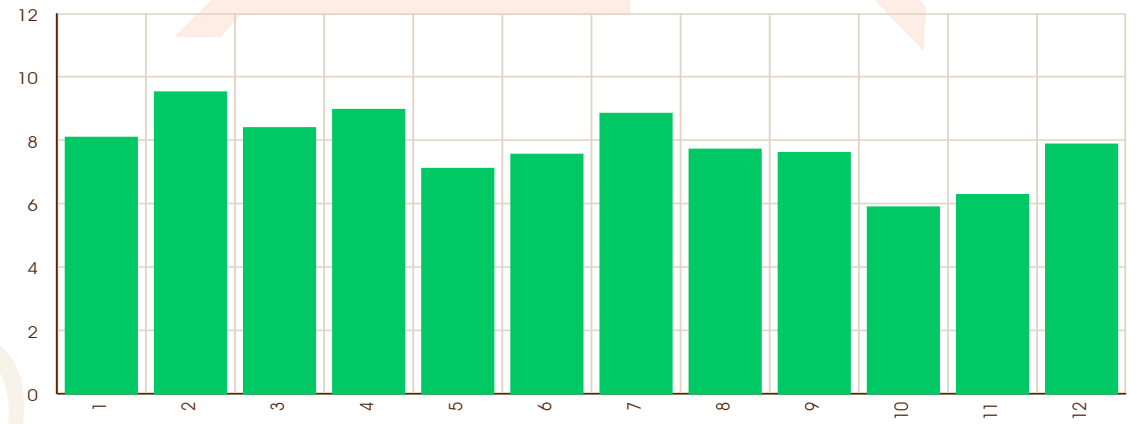

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मेष	29:34:15	--	--	कृतिका	1	3
गुलिक	गु	मेष	00:52:47	--	--	अश्विनी	1	1
काल	का	मेष	24:39:58	--	--	भरणी	4	2
मृत्यु	मृ	मिथु	05:20:41	--	--	मृगशिरा	4	5
यमघंटक	यम	कुंभ	09:42:57	--	--	शतभिषा	1	24
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मक	16:10:25	--	--	श्रवण	2	22
धूम	धू	वृश्चि	06:50:32	--	--	अनुराधा	2	17
व्यतिपात	व्य	सिंह	23:09:28	--	--	पू०फाल्गुनी	3	11
परिवेश	परि	कुंभ	23:09:28	--	--	पू०भाद्रपद	1	25
इन्द्रचाप	इ	वृष	06:50:32	--	--	कृतिका	4	3
उपकेतु	उप	वृष	23:30:32	--	--	मृगशिरा	1	5

प्राणपद	:	कन्या	27:47:04	कारकाँश लग्न	:	कन्या	16:20:00
भाव लग्न	:	मेष	28:13:21	होरा लग्न	:	मीन	02:56:11
घटी लग्न	:	कन्या	17:04:40	वर्णद लग्न	:	मेष	02:30:25

उपग्रह कुंडली

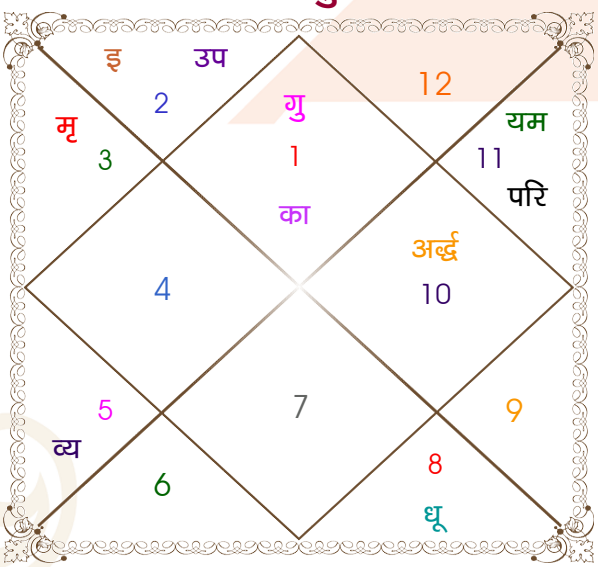

आरूढ़ कुंडली

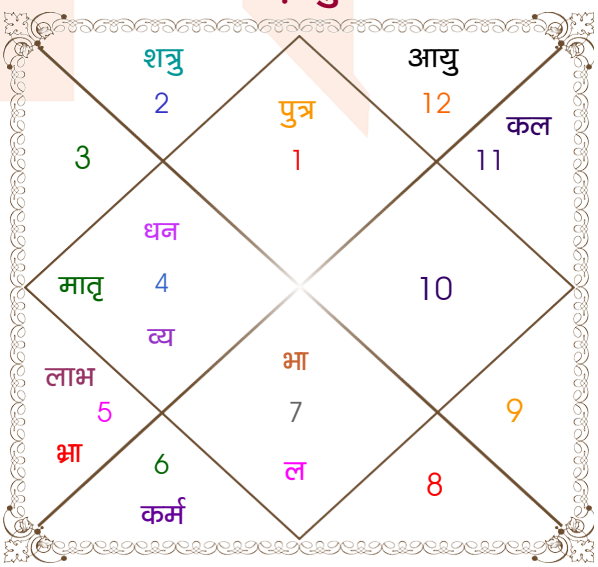

षन्नाडी चक्र

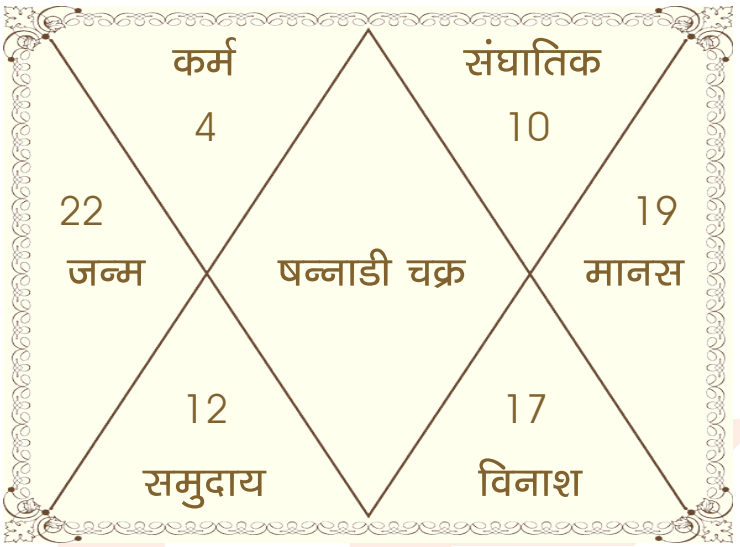

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
कुल	5	4	2	5	2	5	4	4	4	6	4	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	6
शुक्र	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
कुल	4	5	5	3	3	4	3	3	6	5	5	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	कुल
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	4	3	3	5	3	2	1	4	3	3	6	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
कुल	4	4	5	5	6	2	4	6	2	7	4	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	9
शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
बुध	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
कुल	5	4	4	6	3	6	4	2	7	5	5	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
कुल	4	4	5	6	1	4	5	4	4	6	5	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
कुल	3	5	3	0	4	3	3	3	2	2	6	5	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
शुक्र	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	4	4	5	4	5	4	3	3	5	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	3	5	3	0	4	3	3	3	2	2	6	39
गुरु	6	4	2	7	5	5	5	5	4	4	6	3	56
मंगल	5	3	2	1	4	3	3	6	2	4	3	3	39
सूर्य	4	3	5	4	2	5	2	5	4	4	4	6	48
शुक्र	5	4	4	4	5	6	1	4	5	4	4	6	52
बुध	7	4	5	4	4	5	5	6	2	4	6	2	54
चंद्र	3	3	4	3	3	6	5	5	3	4	5	5	49
बिन्दु	35	24	27	26	23	34	24	34	23	26	30	31	337
रेखा	21	32	29	30	33	22	32	22	33	30	26	25	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	1	3	0	0	2	1	0	3	0	0	3	18
गुरु	2	0	0	4	1	1	3	2	0	0	4	0	17
मंगल	3	0	0	0	2	0	1	5	0	1	1	2	15
सूर्य	2	0	3	0	0	2	0	1	2	1	2	2	15
शुक्र	0	0	3	0	0	2	0	0	0	0	3	2	10
बुध	5	0	0	2	2	1	0	4	0	0	1	0	15
चंद्र	0	0	0	0	0	3	1	2	0	1	1	2	10
रेखा	17	1	9	6	5	11	6	14	5	3	12	11	100

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	1	3	0	0	0	0	0	0	0	0	0	9
गुरु	0	0	0	4	1	1	3	2	0	0	4	0	15
मंगल	0	0	0	0	2	0	1	5	0	1	0	2	11
सूर्य	1	0	3	0	0	0	0	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	3	0	0	0	0	0	0	0	3	2	8
बुध	1	0	0	2	2	1	0	4	0	0	1	0	11
चंद्र	0	0	0	0	0	3	1	2	0	1	0	2	9
रेखा	7	1	9	6	5	5	5	14	0	3	9	6	70

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	55	67	96	83	112	81	69
ग्रह पिंड	59	33	63	50	40	36	41
शोध्य पिंड	114	100	159	133	152	117	110

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

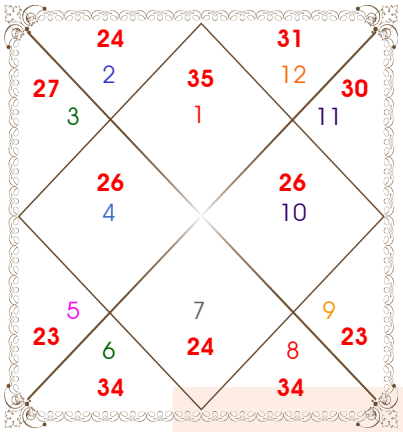

सूर्य का अष्टकवर्ग

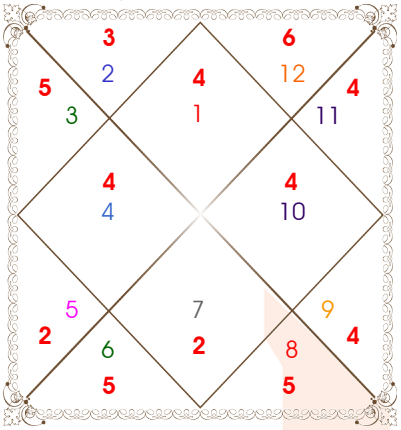

चंद्र का अष्टकवर्ग

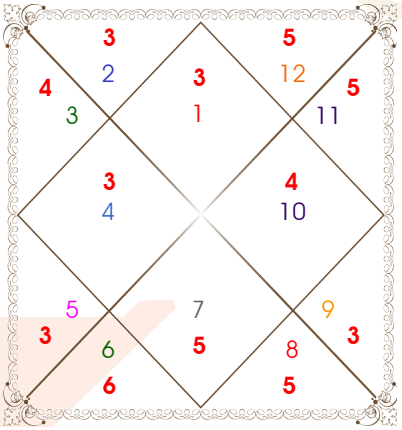

मंगल का अष्टकवर्ग

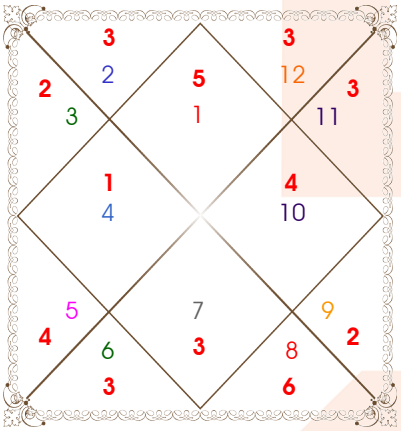

बुध का अष्टकवर्ग

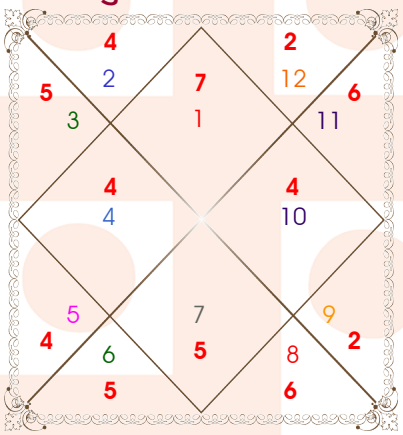

गुरू का अष्टकवर्ग

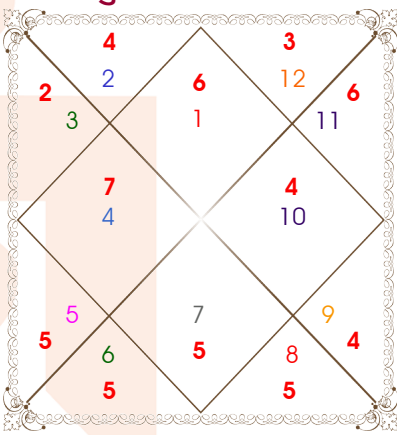

शुक्र का अष्टकवर्ग

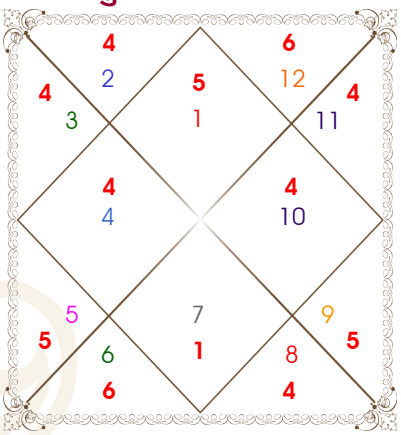

शनि का अष्टकवर्ग

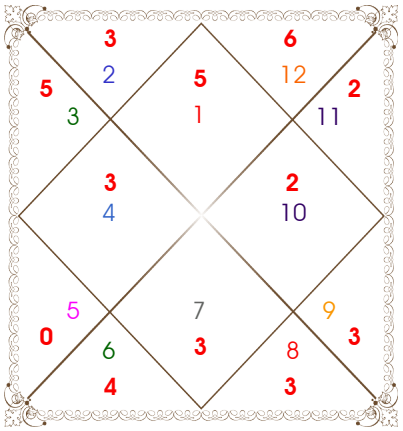

लग्न का अष्टकवर्ग

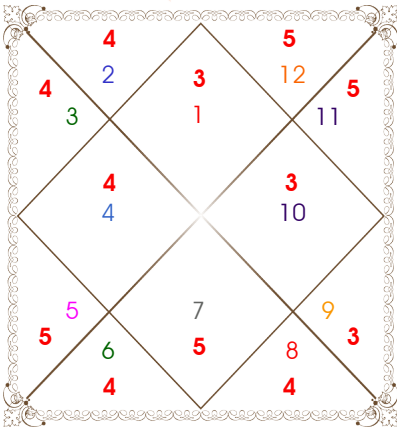

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

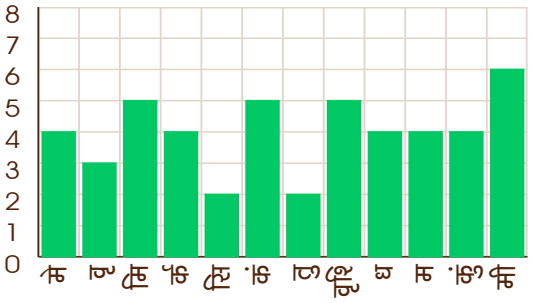

चन्द्र

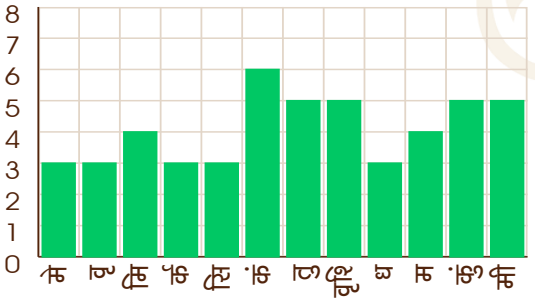

मंगल

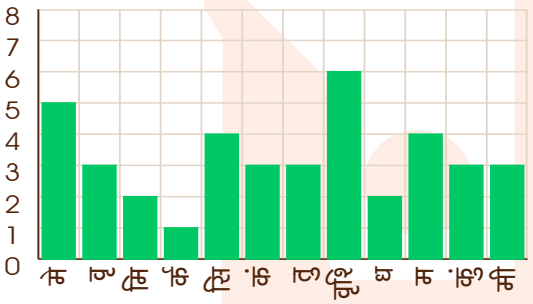

बुध

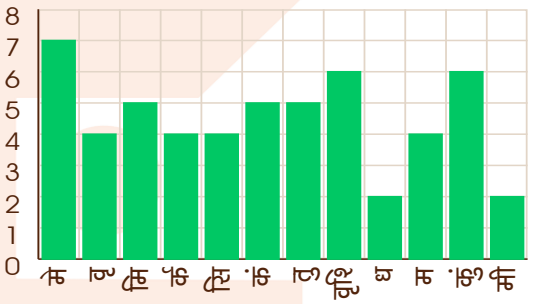

गुरु

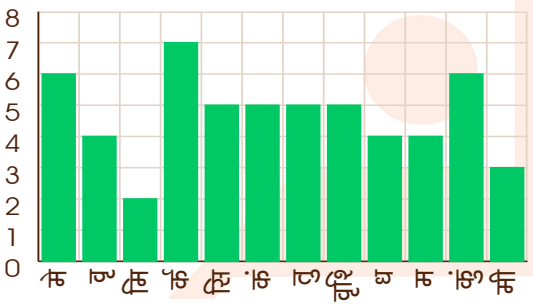

शुक्र

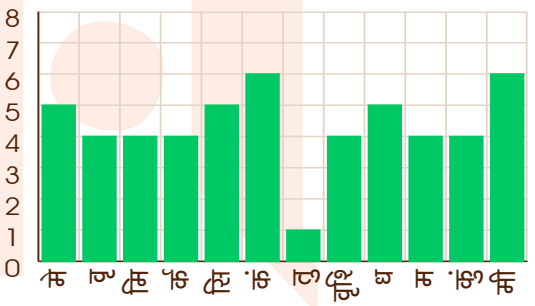

शनि

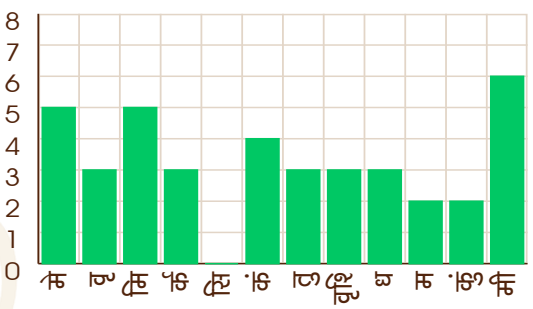

लग्न

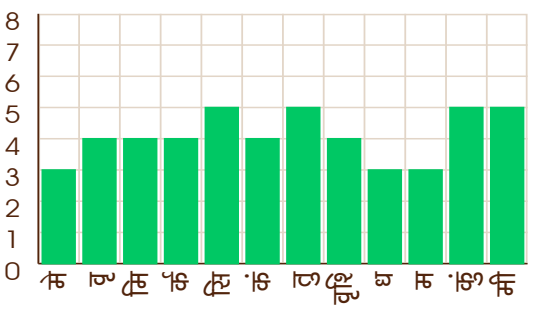

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

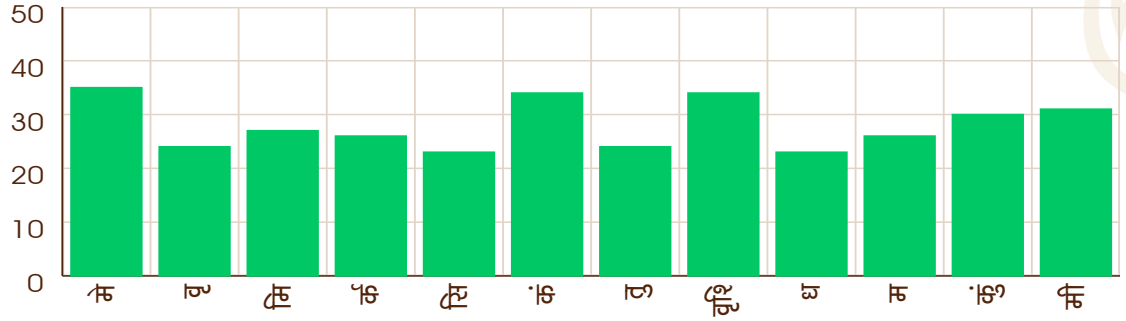

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

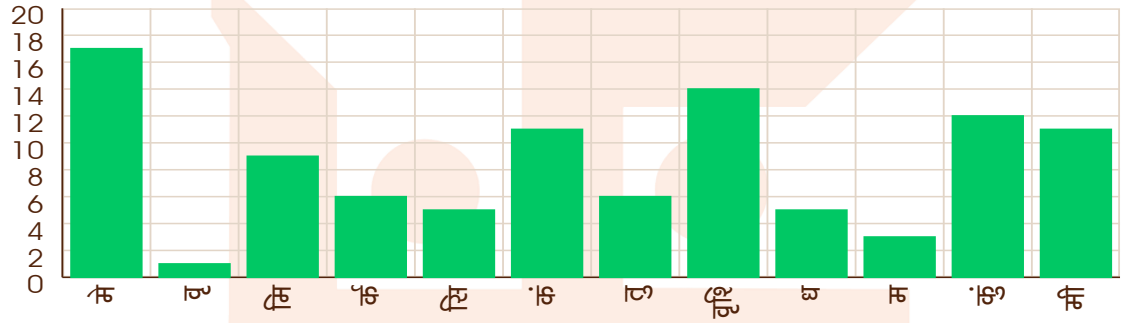

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

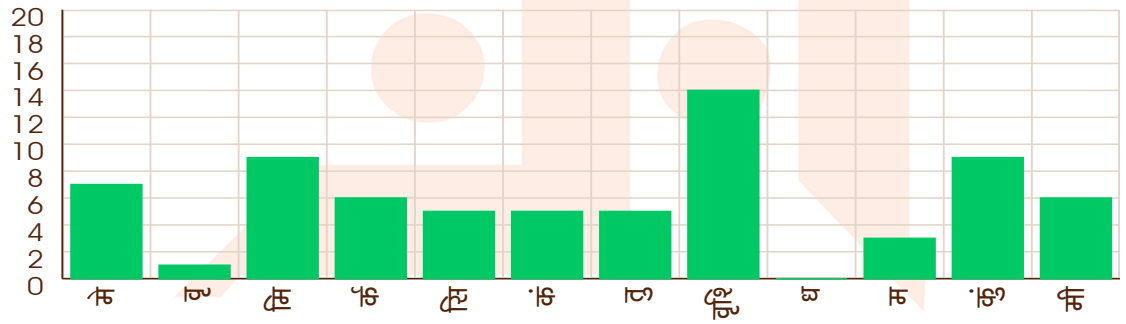

शोध्य पिंड

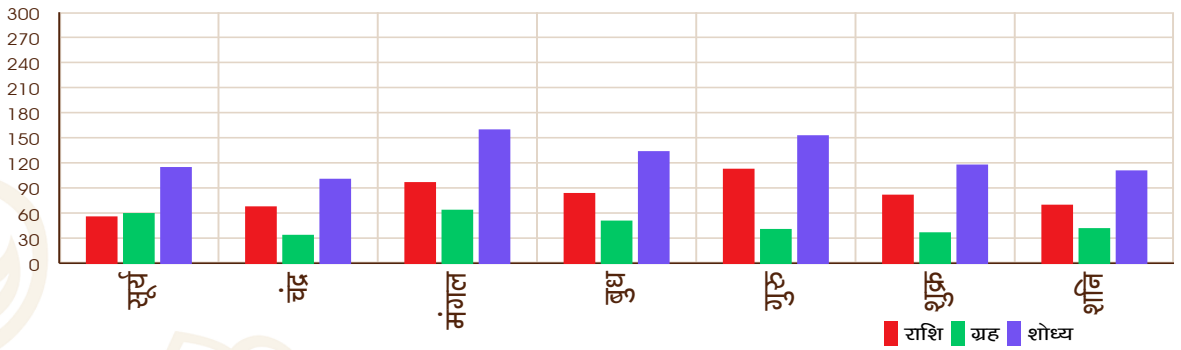

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 8 वर्ष 7 मास 13 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
10/07/1971		21/02/1980		21/02/1987		20/02/2005		20/02/2021	
21/02/1980		21/02/1987		20/02/2005		20/02/2021		21/02/2040	
	10/07/1971	मंगल	19/07/1980	राहु	03/11/1989	गुरु	11/04/2007	शनि	24/02/2024
मंगल	23/07/1971	राहु	07/08/1981	गुरु	29/03/1992	शनि	22/10/2009	बुध	03/11/2026
राहु	21/01/1973	गुरु	14/07/1982	शनि	03/02/1995	बुध	28/01/2012	केतु	13/12/2027
गुरु	23/05/1974	शनि	23/08/1983	बुध	22/08/1997	केतु	03/01/2013	शुक्र	12/02/2031
शनि	22/12/1975	बुध	19/08/1984	केतु	10/09/1998	शुक्र	04/09/2015	सूर्य	25/01/2032
बुध	23/05/1977	केतु	15/01/1985	शुक्र	09/09/2001	सूर्य	22/06/2016	चंद्र	25/08/2033
केतु	22/12/1977	शुक्र	17/03/1986	सूर्य	04/08/2002	चंद्र	22/10/2017	मंगल	04/10/2034
शुक्र	23/08/1979	सूर्य	23/07/1986	चंद्र	03/02/2004	मंगल	28/09/2018	राहु	10/08/2037
सूर्य	21/02/1980	चंद्र	21/02/1987	मंगल	20/02/2005	राहु	20/02/2021	गुरु	21/02/2040

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
21/02/2040		20/02/2057		21/02/2064		21/02/2084		21/02/2090	
20/02/2057		21/02/2064		21/02/2084		21/02/2090		00/00/0000	
बुध	20/07/2042	केतु	20/07/2057	शुक्र	23/06/2067	सूर्य	10/06/2084	चंद्र	22/12/2090
केतु	17/07/2043	शुक्र	19/09/2058	सूर्य	22/06/2068	चंद्र	09/12/2084	मंगल	10/07/2091
शुक्र	17/05/2046	सूर्य	24/01/2059	चंद्र	21/02/2070	मंगल	16/04/2085		00/00/0000
सूर्य	23/03/2047	चंद्र	26/08/2059	मंगल	23/04/2071	राहु	11/03/2086		00/00/0000
चंद्र	22/08/2048	मंगल	22/01/2060	राहु	23/04/2074	गुरु	28/12/2086		00/00/0000
मंगल	19/08/2049	राहु	08/02/2061	गुरु	22/12/2076	शनि	10/12/2087		00/00/0000
राहु	07/03/2052	गुरु	15/01/2062	शनि	21/02/2080	बुध	16/10/2088		00/00/0000
गुरु	13/06/2054	शनि	24/02/2063	बुध	22/12/2082	केतु	20/02/2089		00/00/0000
शनि	20/02/2057	बुध	21/02/2064	केतु	21/02/2084	शुक्र	21/02/2090		00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 8 वर्ष 7 मा 11 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
10/07/1971		23/07/1971		21/01/1973		23/05/1974		22/12/1975	
23/07/1971		21/01/1973		23/05/1974		22/12/1975		23/05/1977	
00/00/0000		राहु	13/10/1971	गुरु	27/03/1973	शनि	23/08/1974	बुध	05/03/1976
00/00/0000		गुरु	25/12/1971	शनि	12/06/1973	बुध	12/11/1974	केतु	04/04/1976
00/00/0000		शनि	21/03/1972	बुध	20/08/1973	केतु	16/12/1974	शुक्र	29/06/1976
00/00/0000		बुध	07/06/1972	केतु	17/09/1973	शुक्र	23/03/1975	सूर्य	25/07/1976
00/00/0000		केतु	09/07/1972	शुक्र	08/12/1973	सूर्य	20/04/1975	चंद्र	06/09/1976
00/00/0000		शुक्र	08/10/1972	सूर्य	01/01/1974	चंद्र	08/06/1975	मंगल	06/10/1976
00/00/0000		सूर्य	04/11/1972	चंद्र	10/02/1974	मंगल	11/07/1975	राहु	23/12/1976
10/07/1971		चंद्र	20/12/1972	मंगल	11/03/1974	राहु	06/10/1975	गुरु	02/03/1977
चंद्र	23/07/1971	मंगल	21/01/1973	राहु	23/05/1974	गुरु	22/12/1975	शनि	23/05/1977

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
23/05/1977		22/12/1977		23/08/1979		21/02/1980		19/07/1980	
22/12/1977		23/08/1979		21/02/1980		19/07/1980		07/08/1981	
केतु	04/06/1977	शुक्र	02/04/1978	सूर्य	01/09/1979	मंगल	01/03/1980	राहु	15/09/1980
शुक्र	10/07/1977	सूर्य	03/05/1978	चंद्र	16/09/1979	राहु	23/03/1980	गुरु	05/11/1980
सूर्य	20/07/1977	चंद्र	22/06/1978	मंगल	27/09/1979	गुरु	12/04/1980	शनि	05/01/1981
चंद्र	07/08/1977	मंगल	28/07/1978	राहु	24/10/1979	शनि	06/05/1980	बुध	28/02/1981
मंगल	19/08/1977	राहु	27/10/1978	गुरु	17/11/1979	बुध	27/05/1980	केतु	22/03/1981
राहु	20/09/1977	गुरु	16/01/1979	शनि	16/12/1979	केतु	05/06/1980	शुक्र	25/05/1981
गुरु	19/10/1977	शनि	23/04/1979	बुध	11/01/1980	शुक्र	29/06/1980	सूर्य	13/06/1981
शनि	22/11/1977	बुध	18/07/1979	केतु	22/01/1980	सूर्य	07/07/1980	चंद्र	15/07/1981
बुध	22/12/1977	केतु	23/08/1979	शुक्र	21/02/1980	चंद्र	19/07/1980	मंगल	07/08/1981

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
07/08/1981		14/07/1982		23/08/1983		19/08/1984		15/01/1985	
14/07/1982		23/08/1983		19/08/1984		15/01/1985		17/03/1986	
गुरु	21/09/1981	शनि	16/09/1982	बुध	13/10/1983	केतु	27/08/1984	शुक्र	27/03/1985
शनि	14/11/1981	बुध	12/11/1982	केतु	03/11/1983	शुक्र	21/09/1984	सूर्य	17/04/1985
बुध	02/01/1982	केतु	06/12/1982	शुक्र	02/01/1984	सूर्य	29/09/1984	चंद्र	23/05/1985
केतु	21/01/1982	शुक्र	11/02/1983	सूर्य	20/01/1984	चंद्र	11/10/1984	मंगल	17/06/1985
शुक्र	19/03/1982	सूर्य	03/03/1983	चंद्र	20/02/1984	मंगल	20/10/1984	राहु	19/08/1985
सूर्य	05/04/1982	चंद्र	06/04/1983	मंगल	12/03/1984	राहु	11/11/1984	गुरु	15/10/1985
चंद्र	04/05/1982	मंगल	30/04/1983	राहु	05/05/1984	गुरु	01/12/1984	शनि	22/12/1985
मंगल	24/05/1982	राहु	30/06/1983	गुरु	22/06/1984	शनि	25/12/1984	बुध	20/02/1986
राहु	14/07/1982	गुरु	23/08/1983	शनि	19/08/1984	बुध	15/01/1985	केतु	17/03/1986

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
17/03/1986		23/07/1986		21/02/1987		03/11/1989		29/03/1992	
23/07/1986		21/02/1987		03/11/1989		29/03/1992		03/02/1995	
सूर्य	23/03/1986	चंद्र	10/08/1986	राहु	19/07/1987	गुरु	28/02/1990	शनि	09/09/1992
चंद्र	03/04/1986	मंगल	22/08/1986	गुरु	27/11/1987	शनि	17/07/1990	बुध	04/02/1993
मंगल	10/04/1986	राहु	23/09/1986	शनि	01/05/1988	बुध	18/11/1990	केतु	06/04/1993
राहु	30/04/1986	गुरु	21/10/1986	बुध	18/09/1988	केतु	08/01/1991	शुक्र	26/09/1993
गुरु	17/05/1986	शनि	24/11/1986	केतु	15/11/1988	शुक्र	03/06/1991	सूर्य	17/11/1993
शनि	06/06/1986	बुध	24/12/1986	शुक्र	28/04/1989	सूर्य	17/07/1991	चंद्र	12/02/1994
बुध	24/06/1986	केतु	06/01/1987	सूर्य	16/06/1989	चंद्र	28/09/1991	मंगल	14/04/1994
केतु	02/07/1986	शुक्र	10/02/1987	चंद्र	07/09/1989	मंगल	18/11/1991	राहु	17/09/1994
शुक्र	23/07/1986	सूर्य	21/02/1987	मंगल	03/11/1989	राहु	29/03/1992	गुरु	03/02/1995

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
03/02/1995		22/08/1997		10/09/1998		09/09/2001		04/08/2002	
22/08/1997		10/09/1998		09/09/2001		04/08/2002		03/02/2004	
बुध	15/06/1995	केतु	13/09/1997	शुक्र	11/03/1999	सूर्य	26/09/2001	चंद्र	19/09/2002
केतु	08/08/1995	शुक्र	16/11/1997	सूर्य	05/05/1999	चंद्र	23/10/2001	मंगल	21/10/2002
शुक्र	10/01/1996	सूर्य	05/12/1997	चंद्र	04/08/1999	मंगल	11/11/2001	राहु	11/01/2003
सूर्य	26/02/1996	चंद्र	06/01/1998	मंगल	07/10/1999	राहु	31/12/2001	गुरु	25/03/2003
चंद्र	13/05/1996	मंगल	29/01/1998	राहु	20/03/2000	गुरु	12/02/2002	शनि	20/06/2003
मंगल	07/07/1996	राहु	27/03/1998	गुरु	13/08/2000	शनि	05/04/2002	बुध	05/09/2003
राहु	23/11/1996	गुरु	17/05/1998	शनि	02/02/2001	बुध	22/05/2002	केतु	07/10/2003
गुरु	28/03/1997	शनि	17/07/1998	बुध	07/07/2001	केतु	10/06/2002	शुक्र	06/01/2004
शनि	22/08/1997	बुध	10/09/1998	केतु	09/09/2001	शुक्र	04/08/2002	सूर्य	03/02/2004

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
03/02/2004		20/02/2005		11/04/2007		22/10/2009		28/01/2012	
20/02/2005		11/04/2007		22/10/2009		28/01/2012		03/01/2013	
मंगल	25/02/2004	गुरु	04/06/2005	शनि	04/09/2007	बुध	16/02/2010	केतु	17/02/2012
राहु	23/04/2004	शनि	06/10/2005	बुध	13/01/2008	केतु	05/04/2010	शुक्र	13/04/2012
गुरु	13/06/2004	बुध	24/01/2006	केतु	07/03/2008	शुक्र	21/08/2010	सूर्य	01/05/2012
शनि	13/08/2004	केतु	10/03/2006	शुक्र	08/08/2008	सूर्य	02/10/2010	चंद्र	29/05/2012
बुध	06/10/2004	शुक्र	18/07/2006	सूर्य	24/09/2008	चंद्र	10/12/2010	मंगल	18/06/2012
केतु	28/10/2004	सूर्य	26/08/2006	चंद्र	10/12/2008	मंगल	27/01/2011	राहु	08/08/2012
शुक्र	31/12/2004	चंद्र	30/10/2006	मंगल	02/02/2009	राहु	31/05/2011	गुरु	22/09/2012
सूर्य	19/01/2005	मंगल	15/12/2006	राहु	21/06/2009	गुरु	19/09/2011	शनि	15/11/2012
चंद्र	20/02/2005	राहु	11/04/2007	गुरु	22/10/2009	शनि	28/01/2012	बुध	03/01/2013

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
03/01/2013		04/09/2015		22/06/2016		22/10/2017		28/09/2018	
04/09/2015		22/06/2016		22/10/2017		28/09/2018		20/02/2021	
शुक्र	14/06/2013	सूर्य	18/09/2015	चंद्र	01/08/2016	मंगल	11/11/2017	राहु	06/02/2019
सूर्य	02/08/2013	चंद्र	13/10/2015	मंगल	30/08/2016	राहु	01/01/2018	गुरु	03/06/2019
चंद्र	22/10/2013	मंगल	30/10/2015	राहु	11/11/2016	गुरु	15/02/2018	शनि	20/10/2019
मंगल	18/12/2013	राहु	13/12/2015	गुरु	15/01/2017	शनि	10/04/2018	बुध	21/02/2020
राहु	13/05/2014	गुरु	20/01/2016	शनि	02/04/2017	बुध	29/05/2018	केतु	12/04/2020
गुरु	20/09/2014	शनि	07/03/2016	बुध	10/06/2017	केतु	18/06/2018	शुक्र	05/09/2020
शनि	21/02/2015	बुध	17/04/2016	केतु	08/07/2017	शुक्र	13/08/2018	सूर्य	19/10/2020
बुध	09/07/2015	केतु	04/05/2016	शुक्र	28/09/2017	सूर्य	30/08/2018	चंद्र	31/12/2020
केतु	04/09/2015	शुक्र	22/06/2016	सूर्य	22/10/2017	चंद्र	28/09/2018	मंगल	20/02/2021

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
20/02/2021		24/02/2024		03/11/2026		13/12/2027		12/02/2031	
24/02/2024		03/11/2026		13/12/2027		12/02/2031		25/01/2032	
शनि	13/08/2021	बुध	12/07/2024	केतु	27/11/2026	शुक्र	23/06/2028	सूर्य	01/03/2031
बुध	16/01/2022	केतु	08/09/2024	शुक्र	02/02/2027	सूर्य	20/08/2028	चंद्र	30/03/2031
केतु	21/03/2022	शुक्र	19/02/2025	सूर्य	23/02/2027	चंद्र	24/11/2028	मंगल	19/04/2031
शुक्र	20/09/2022	सूर्य	09/04/2025	चंद्र	28/03/2027	मंगल	31/01/2029	राहु	10/06/2031
सूर्य	14/11/2022	चंद्र	30/06/2025	मंगल	21/04/2027	राहु	23/07/2029	गुरु	27/07/2031
चंद्र	14/02/2023	मंगल	26/08/2025	राहु	21/06/2027	गुरु	24/12/2029	शनि	20/09/2031
मंगल	19/04/2023	राहु	21/01/2026	गुरु	14/08/2027	शनि	25/06/2030	बुध	08/11/2031
राहु	01/10/2023	गुरु	01/06/2026	शनि	17/10/2027	बुध	06/12/2030	केतु	28/11/2031
गुरु	24/02/2024	शनि	03/11/2026	बुध	13/12/2027	केतु	12/02/2031	शुक्र	25/01/2032

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
25/01/2032		25/08/2033		04/10/2034		10/08/2037		21/02/2040	
25/08/2033		04/10/2034		10/08/2037		21/02/2040		20/07/2042	
चंद्र	13/03/2032	मंगल	18/09/2033	राहु	09/03/2035	गुरु	11/12/2037	बुध	25/06/2040
मंगल	16/04/2032	राहु	17/11/2033	गुरु	26/07/2035	शनि	07/05/2038	केतु	15/08/2040
राहु	11/07/2032	गुरु	10/01/2034	शनि	07/01/2036	बुध	15/09/2038	शुक्र	09/01/2041
गुरु	27/09/2032	शनि	15/03/2034	बुध	02/06/2036	केतु	08/11/2038	सूर्य	22/02/2041
शनि	27/12/2032	बुध	12/05/2034	केतु	02/08/2036	शुक्र	11/04/2039	चंद्र	06/05/2041
बुध	19/03/2033	केतु	04/06/2034	शुक्र	22/01/2037	सूर्य	27/05/2039	मंगल	26/06/2041
केतु	22/04/2033	शुक्र	11/08/2034	सूर्य	15/03/2037	चंद्र	12/08/2039	राहु	05/11/2041
शुक्र	27/07/2033	सूर्य	31/08/2034	चंद्र	10/06/2037	मंगल	05/10/2039	गुरु	02/03/2042
सूर्य	25/08/2033	चंद्र	04/10/2034	मंगल	10/08/2037	राहु	21/02/2040	शनि	20/07/2042

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
20/07/2042		17/07/2043		17/05/2046		23/03/2047		22/08/2048	
17/07/2043		17/05/2046		23/03/2047		22/08/2048		19/08/2049	
केतु	10/08/2042	शुक्र	05/01/2044	सूर्य	01/06/2046	चंद्र	05/05/2047	मंगल	12/09/2048
शुक्र	09/10/2042	सूर्य	26/02/2044	चंद्र	27/06/2046	मंगल	05/06/2047	राहु	05/11/2048
सूर्य	27/10/2042	चंद्र	22/05/2044	मंगल	15/07/2046	राहु	21/08/2047	गुरु	24/12/2048
चंद्र	27/11/2042	मंगल	22/07/2044	राहु	31/08/2046	गुरु	29/10/2047	शनि	19/02/2049
मंगल	18/12/2042	राहु	24/12/2044	गुरु	11/10/2046	शनि	19/01/2048	बुध	11/04/2049
राहु	10/02/2043	गुरु	11/05/2045	शनि	29/11/2046	बुध	01/04/2048	केतु	02/05/2049
गुरु	30/03/2043	शनि	22/10/2045	बुध	12/01/2047	केतु	02/05/2048	शुक्र	02/07/2049
शनि	27/05/2043	बुध	17/03/2046	केतु	31/01/2047	शुक्र	27/07/2048	सूर्य	20/07/2049
बुध	17/07/2043	केतु	17/05/2046	शुक्र	23/03/2047	सूर्य	22/08/2048	चंद्र	19/08/2049

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
19/08/2049		07/03/2052		13/06/2054		20/02/2057		20/07/2057	
07/03/2052		13/06/2054		20/02/2057		20/07/2057		19/09/2058	
राहु	06/01/2050	गुरु	26/06/2052	शनि	16/11/2054	केतु	01/03/2057	शुक्र	29/09/2057
गुरु	10/05/2050	शनि	04/11/2052	बुध	04/04/2055	शुक्र	26/03/2057	सूर्य	20/10/2057
शनि	04/10/2050	बुध	01/03/2053	केतु	01/06/2055	सूर्य	02/04/2057	चंद्र	24/11/2057
बुध	13/02/2051	केतु	18/04/2053	शुक्र	11/11/2055	चंद्र	15/04/2057	मंगल	19/12/2057
केतु	09/04/2051	शुक्र	03/09/2053	सूर्य	31/12/2055	मंगल	24/04/2057	राहु	21/02/2058
शुक्र	11/09/2051	सूर्य	15/10/2053	चंद्र	21/03/2056	राहु	16/05/2057	गुरु	19/04/2058
सूर्य	27/10/2051	चंद्र	23/12/2053	मंगल	18/05/2056	गुरु	05/06/2057	शनि	25/06/2058
चंद्र	13/01/2052	मंगल	09/02/2054	राहु	12/10/2056	शनि	28/06/2057	बुध	25/08/2058
मंगल	07/03/2052	राहु	13/06/2054	गुरु	20/02/2057	बुध	20/07/2057	केतु	19/09/2058

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
19/09/2058		24/01/2059		26/08/2059		22/01/2060		08/02/2061	
24/01/2059		26/08/2059		22/01/2060		08/02/2061		15/01/2062	
सूर्य	25/09/2058	चंद्र	11/02/2059	मंगल	03/09/2059	राहु	19/03/2060	गुरु	26/03/2061
चंद्र	06/10/2058	मंगल	24/02/2059	राहु	26/09/2059	गुरु	09/05/2060	शनि	19/05/2061
मंगल	13/10/2058	राहु	28/03/2059	गुरु	16/10/2059	शनि	09/07/2060	बुध	06/07/2061
राहु	01/11/2058	गुरु	25/04/2059	शनि	08/11/2059	बुध	01/09/2060	केतु	26/07/2061
गुरु	18/11/2058	शनि	29/05/2059	बुध	29/11/2059	केतु	24/09/2060	शुक्र	21/09/2061
शनि	09/12/2058	बुध	28/06/2059	केतु	08/12/2059	शुक्र	27/11/2060	सूर्य	08/10/2061
बुध	27/12/2058	केतु	10/07/2059	शुक्र	02/01/2060	सूर्य	16/12/2060	चंद्र	05/11/2061
केतु	03/01/2059	शुक्र	15/08/2059	सूर्य	09/01/2060	चंद्र	17/01/2061	मंगल	25/11/2061
शुक्र	24/01/2059	सूर्य	26/08/2059	चंद्र	22/01/2060	मंगल	08/02/2061	राहु	15/01/2062

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
15/01/2062		24/02/2063		21/02/2064		23/06/2067		22/06/2068	
24/02/2063		21/02/2064		23/06/2067		22/06/2068		21/02/2070	
शनि	20/03/2062	बुध	16/04/2063	शुक्र	11/09/2064	सूर्य	11/07/2067	चंद्र	12/08/2068
बुध	17/05/2062	केतु	07/05/2063	सूर्य	11/11/2064	चंद्र	10/08/2067	मंगल	16/09/2068
केतु	09/06/2062	शुक्र	07/07/2063	चंद्र	20/02/2065	मंगल	01/09/2067	राहु	16/12/2068
शुक्र	16/08/2062	सूर्य	25/07/2063	मंगल	02/05/2065	राहु	25/10/2067	गुरु	08/03/2069
सूर्य	05/09/2062	चंद्र	24/08/2063	राहु	01/11/2065	गुरु	13/12/2067	शनि	12/06/2069
चंद्र	09/10/2062	मंगल	14/09/2063	गुरु	12/04/2066	शनि	09/02/2068	बुध	06/09/2069
मंगल	01/11/2062	राहु	07/11/2063	शनि	22/10/2066	बुध	01/04/2068	केतु	12/10/2069
राहु	01/01/2063	गुरु	26/12/2063	बुध	13/04/2067	केतु	22/04/2068	शुक्र	21/01/2070
गुरु	24/02/2063	शनि	21/02/2064	केतु	23/06/2067	शुक्र	22/06/2068	सूर्य	21/02/2070

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
21/02/2070		23/04/2071		23/04/2074		22/12/2076		21/02/2080	
23/04/2071		23/04/2074		22/12/2076		21/02/2080		22/12/2082	
मंगल	17/03/2070	राहु	04/10/2071	गुरु	30/08/2074	शनि	23/06/2077	बुध	17/07/2080
राहु	20/05/2070	गुरु	27/02/2072	शनि	01/02/2075	बुध	03/12/2077	केतु	15/09/2080
गुरु	16/07/2070	शनि	19/08/2072	बुध	19/06/2075	केतु	09/02/2078	शुक्र	07/03/2081
शनि	22/09/2070	बुध	21/01/2073	केतु	14/08/2075	शुक्र	21/08/2078	सूर्य	27/04/2081
बुध	21/11/2070	केतु	26/03/2073	शुक्र	24/01/2076	सूर्य	18/10/2078	चंद्र	23/07/2081
केतु	16/12/2070	शुक्र	24/09/2073	सूर्य	12/03/2076	चंद्र	22/01/2079	मंगल	21/09/2081
शुक्र	25/02/2071	सूर्य	18/11/2073	चंद्र	02/06/2076	मंगल	30/03/2079	राहु	23/02/2082
सूर्य	18/03/2071	चंद्र	18/02/2074	मंगल	28/07/2076	राहु	20/09/2079	गुरु	11/07/2082
चंद्र	23/04/2071	मंगल	23/04/2074	राहु	22/12/2076	गुरु	21/02/2080	शनि	22/12/2082

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
22/12/2082		21/02/2084		10/06/2084		09/12/2084		16/04/2085	
21/02/2084		10/06/2084		09/12/2084		16/04/2085		11/03/2086	
केतु	16/01/2083	सूर्य	27/02/2084	चंद्र	25/06/2084	मंगल	17/12/2084	राहु	04/06/2085
शुक्र	28/03/2083	चंद्र	07/03/2084	मंगल	06/07/2084	राहु	05/01/2085	गुरु	18/07/2085
सूर्य	18/04/2083	मंगल	13/03/2084	राहु	02/08/2084	गुरु	22/01/2085	शनि	08/09/2085
चंद्र	24/05/2083	राहु	30/03/2084	गुरु	26/08/2084	शनि	11/02/2085	बुध	25/10/2085
मंगल	18/06/2083	गुरु	13/04/2084	शनि	24/09/2084	बुध	01/03/2085	केतु	13/11/2085
राहु	20/08/2083	शनि	01/05/2084	बुध	20/10/2084	केतु	09/03/2085	शुक्र	07/01/2086
गुरु	16/10/2083	बुध	16/05/2084	केतु	31/10/2084	शुक्र	30/03/2085	सूर्य	23/01/2086
शनि	23/12/2083	केतु	22/05/2084	शुक्र	30/11/2084	सूर्य	06/04/2085	चंद्र	20/02/2086
बुध	21/02/2084	शुक्र	10/06/2084	सूर्य	09/12/2084	चंद्र	16/04/2085	मंगल	11/03/2086

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - बुध - राहु	
26/08/2025 14:03	
21/01/2026 01:19	
राहु	17/09/2025 16:56
गुरु	07/10/2025 08:50
शनि	30/10/2025 17:13
बुध	20/11/2025 14:37
केतु	29/11/2025 05:05
शुक्र	23/12/2025 18:57
सूर्य	31/12/2025 03:55
चंद्र	12/01/2026 10:52
मंगल	21/01/2026 01:19

शनि - बुध - गुरु	
21/01/2026 01:19	
01/06/2026 03:20	
गुरु	07/02/2026 12:47
शनि	28/02/2026 06:54
बुध	18/03/2026 20:36
केतु	26/03/2026 12:07
शुक्र	17/04/2026 08:27
सूर्य	23/04/2026 21:45
चंद्र	04/05/2026 19:55
मंगल	12/05/2026 11:26
राहु	01/06/2026 03:20

शनि - बुध - शनि	
01/06/2026 03:20	
03/11/2026 19:14	
शनि	25/06/2026 18:51
बुध	17/07/2026 20:06
केतु	26/07/2026 22:02
शुक्र	21/08/2026 20:41
सूर्य	29/08/2026 15:29
चंद्र	11/09/2026 14:48
मंगल	20/09/2026 16:44
राहु	14/10/2026 01:07
गुरु	03/11/2026 19:14

शनि - केतु - केतु	
03/11/2026 19:14	
27/11/2026 09:59	
केतु	05/11/2026 04:18
शुक्र	09/11/2026 02:45
सूर्य	10/11/2026 07:05
चंद्र	12/11/2026 06:19
मंगल	13/11/2026 15:23
राहु	17/11/2026 04:24
गुरु	20/11/2026 07:57
शनि	24/11/2026 01:42
बुध	27/11/2026 09:59

शनि - केतु - शुक्र	
27/11/2026 09:59	
02/02/2027 21:15	
शुक्र	08/12/2026 15:52
सूर्य	12/12/2026 00:49
चंद्र	17/12/2026 15:46
मंगल	21/12/2026 14:13
राहु	31/12/2026 17:07
गुरु	09/01/2027 17:01
शनि	20/01/2027 09:24
बुध	29/01/2027 22:48
केतु	02/02/2027 21:15

शनि - केतु - सूर्य	
02/02/2027 21:15	
23/02/2027 03:02	
सूर्य	03/02/2027 21:33
चंद्र	05/02/2027 14:02
मंगल	06/02/2027 18:22
राहु	09/02/2027 19:14
गुरु	12/02/2027 12:00
शनि	15/02/2027 16:55
बुध	18/02/2027 13:44
केतु	19/02/2027 18:05
शुक्र	23/02/2027 03:02

शनि - केतु - चंद्र	
23/02/2027 03:02	
28/03/2027 20:41	
चंद्र	25/02/2027 22:31
मंगल	27/02/2027 21:44
राहु	04/03/2027 23:11
गुरु	09/03/2027 11:08
शनि	14/03/2027 19:20
बुध	19/03/2027 14:02
केतु	21/03/2027 13:15
शुक्र	27/03/2027 04:12
सूर्य	28/03/2027 20:41

शनि - केतु - मंगल	
28/03/2027 20:41	
21/04/2027 11:25	
मंगल	30/03/2027 05:44
राहु	02/04/2027 18:45
गुरु	05/04/2027 22:19
शनि	09/04/2027 16:03
बुध	13/04/2027 00:20
केतु	14/04/2027 09:24
शुक्र	18/04/2027 07:51
सूर्य	19/04/2027 12:12
चंद्र	21/04/2027 11:25

शनि - केतु - राहु	
21/04/2027 11:25	
21/06/2027 04:46	
राहु	30/04/2027 14:02
गुरु	08/05/2027 16:20
शनि	18/05/2027 07:05
बुध	26/05/2027 21:33
केतु	30/05/2027 10:33
शुक्र	09/06/2027 13:27
सूर्य	12/06/2027 14:19
चंद्र	17/06/2027 15:46
मंगल	21/06/2027 04:46

शनि - केतु - गुरु	
21/06/2027 04:46	
14/08/2027 04:11	
गुरु	28/06/2027 09:30
शनि	06/07/2027 22:36
बुध	14/07/2027 14:07
केतु	17/07/2027 17:41
शुक्र	26/07/2027 17:35
सूर्य	29/07/2027 10:22
चंद्र	02/08/2027 22:19
मंगल	06/08/2027 01:53
राहु	14/08/2027 04:11

शनि - केतु - शनि	
14/08/2027 04:11	
17/10/2027 06:30	
शनि	24/08/2027 07:45
बुध	02/09/2027 09:41
केतु	06/09/2027 03:25
शुक्र	16/09/2027 19:48
सूर्य	20/09/2027 00:43
चंद्र	25/09/2027 08:55
मंगल	29/09/2027 02:39
राहु	08/10/2027 17:24
गुरु	17/10/2027 06:30

शनि - केतु - बुध	
17/10/2027 06:30	
13/12/2027 14:53	
बुध	25/10/2027 09:29
केतु	28/10/2027 17:47
शुक्र	07/11/2027 07:11
सूर्य	10/11/2027 04:00
चंद्र	14/11/2027 22:42
मंगल	18/11/2027 06:59
राहु	26/11/2027 21:26
गुरु	04/12/2027 12:57
शनि	13/12/2027 14:53

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - शुक्र	
13/12/2027 14:53	
23/06/2028 09:23	
शुक्र	14/01/2028 17:58
सूर्य	24/01/2028 09:18
चंद्र	09/02/2028 10:50
मंगल	20/02/2028 16:43
राहु	20/03/2028 14:41
गुरु	15/04/2028 07:33
शनि	15/05/2028 20:05
बुध	12/06/2028 03:30
केतु	23/06/2028 09:23

शनि - शुक्र - सूर्य	
23/06/2028 09:23	
20/08/2028 05:20	
सूर्य	26/06/2028 06:47
चंद्र	01/07/2028 02:27
मंगल	04/07/2028 11:25
राहु	13/07/2028 03:36
गुरु	20/07/2028 20:40
शनि	30/07/2028 00:25
बुध	07/08/2028 05:03
केतु	10/08/2028 14:01
शुक्र	20/08/2028 05:20

शनि - शुक्र - चंद्र	
20/08/2028 05:20	
24/11/2028 14:35	
चंद्र	28/08/2028 06:06
मंगल	02/09/2028 21:03
राहु	17/09/2028 08:02
गुरु	30/09/2028 04:28
शनि	15/10/2028 10:44
बुध	29/10/2028 02:27
केतु	03/11/2028 17:23
शुक्र	19/11/2028 18:55
सूर्य	24/11/2028 14:35

शनि - शुक्र - मंगल	
24/11/2028 14:35	
31/01/2029 01:52	
मंगल	28/11/2028 13:03
राहु	08/12/2028 15:56
गुरु	17/12/2028 15:50
शनि	28/12/2028 08:13
बुध	06/01/2029 21:37
केतु	10/01/2029 20:05
शुक्र	22/01/2029 01:57
सूर्य	25/01/2029 10:55
चंद्र	31/01/2029 01:52

शनि - शुक्र - राहु	
31/01/2029 01:52	
23/07/2029 13:43	
राहु	26/02/2029 02:26
गुरु	21/03/2029 05:37
शनि	17/04/2029 16:54
बुध	12/05/2029 06:46
केतु	22/05/2029 09:40
शुक्र	20/06/2029 07:38
सूर्य	28/06/2029 23:50
चंद्र	13/07/2029 10:49
मंगल	23/07/2029 13:43

शनि - शुक्र - गुरु	
23/07/2029 13:43	
24/12/2029 18:55	
गुरु	13/08/2029 03:12
शनि	06/09/2029 13:14
बुध	28/09/2029 09:34
केतु	07/10/2029 09:28
शुक्र	02/11/2029 02:20
सूर्य	09/11/2029 19:24
चंद्र	22/11/2029 15:50
मंगल	01/12/2029 15:44
राहु	24/12/2029 18:55

शनि - शुक्र - शनि	
24/12/2029 18:55	
25/06/2030 22:05	
शनि	22/01/2030 18:49
बुध	17/02/2030 17:28
केतु	28/02/2030 09:51
शुक्र	30/03/2030 22:23
सूर्य	09/04/2030 02:08
चंद्र	24/04/2030 08:24
मंगल	05/05/2030 00:47
राहु	01/06/2030 12:04
गुरु	25/06/2030 22:05

शनि - शुक्र - बुध	
25/06/2030 22:05	
06/12/2030 18:37	
बुध	19/07/2030 03:12
केतु	28/07/2030 16:35
शुक्र	25/08/2030 00:01
सूर्य	02/09/2030 04:38
चंद्र	15/09/2030 20:21
मंगल	25/09/2030 09:45
राहु	19/10/2030 23:37
गुरु	10/11/2030 19:58
शनि	06/12/2030 18:37

शनि - शुक्र - केतु	
06/12/2030 18:37	
12/02/2031 05:53	
केतु	10/12/2030 17:04
शुक्र	21/12/2030 22:57
सूर्य	25/12/2030 07:55
चंद्र	30/12/2030 22:51
मंगल	03/01/2031 21:19
राहु	14/01/2031 00:12
गुरु	23/01/2031 00:06
शनि	02/02/2031 16:29
बुध	12/02/2031 05:53

शनि - सूर्य - सूर्य	
12/02/2031 05:53	
01/03/2031 14:16	
सूर्य	13/02/2031 02:42
चंद्र	14/02/2031 13:24
मंगल	15/02/2031 13:42
राहु	18/02/2031 04:09
गुरु	20/02/2031 11:40
शनि	23/02/2031 05:36
बुध	25/02/2031 16:35
केतु	26/02/2031 16:52
शुक्र	01/03/2031 14:16

शनि - सूर्य - चंद्र	
01/03/2031 14:16	
30/03/2031 12:15	
चंद्र	04/03/2031 00:06
मंगल	05/03/2031 16:35
राहु	10/03/2031 00:41
गुरु	13/03/2031 21:13
शनि	18/03/2031 11:05
बुध	22/03/2031 13:24
केतु	24/03/2031 05:53
शुक्र	29/03/2031 01:33
सूर्य	30/03/2031 12:15

शनि - सूर्य - मंगल	
30/03/2031 12:15	
19/04/2031 18:02	
मंगल	31/03/2031 16:35
राहु	03/04/2031 17:27
गुरु	06/04/2031 10:13
शनि	09/04/2031 15:08
बुध	12/04/2031 11:57
केतु	13/04/2031 16:18
शुक्र	17/04/2031 01:15
सूर्य	18/04/2031 01:33
चंद्र	19/04/2031 18:02

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - सूर्य - राहु	
19/04/2031 18:02	
10/06/2031 19:11	
राहु	27/04/2031 13:24
गुरु	04/05/2031 11:57
शनि	12/05/2031 17:44
बुध	20/05/2031 02:42
केतु	23/05/2031 03:34
शुक्र	31/05/2031 19:46
सूर्य	03/06/2031 10:13
चंद्र	07/06/2031 18:19
मंगल	10/06/2031 19:11

शनि - सूर्य - गुरु	
10/06/2031 19:11	
27/07/2031 01:33	
गुरु	16/06/2031 23:14
शनि	24/06/2031 07:02
बुध	30/06/2031 20:20
केतु	03/07/2031 13:07
शुक्र	11/07/2031 06:10
सूर्य	13/07/2031 13:41
चंद्र	17/07/2031 10:13
मंगल	20/07/2031 02:59
राहु	27/07/2031 01:33

शनि - सूर्य - शनि	
27/07/2031 01:33	
20/09/2031 00:06	
शनि	04/08/2031 18:19
बुध	12/08/2031 13:07
केतु	15/08/2031 18:01
शुक्र	24/08/2031 21:47
सूर्य	27/08/2031 15:43
चंद्र	01/09/2031 05:35
मंगल	04/09/2031 10:30
राहु	12/09/2031 16:17
गुरु	20/09/2031 00:06

शनि - सूर्य - बुध	
20/09/2031 00:06	
08/11/2031 03:51	
बुध	26/09/2031 23:14
केतु	29/09/2031 20:03
शुक्र	08/10/2031 00:40
सूर्य	10/10/2031 11:40
चंद्र	14/10/2031 13:58
मंगल	17/10/2031 10:48
राहु	24/10/2031 19:45
गुरु	31/10/2031 09:03
शनि	08/11/2031 03:51

शनि - सूर्य - केतु	
08/11/2031 03:51	
28/11/2031 09:38	
केतु	09/11/2031 08:11
शुक्र	12/11/2031 17:09
सूर्य	13/11/2031 17:27
चंद्र	15/11/2031 09:56
मंगल	16/11/2031 14:16
राहु	19/11/2031 15:08
गुरु	22/11/2031 07:54
शनि	25/11/2031 12:49
बुध	28/11/2031 09:38

शनि - सूर्य - शुक्र	
28/11/2031 09:38	
25/01/2032 05:35	
शुक्र	08/12/2031 00:58
सूर्य	10/12/2031 22:21
चंद्र	15/12/2031 18:01
मंगल	19/12/2031 02:59
राहु	27/12/2031 19:11
गुरु	04/01/2032 12:14
शनि	13/01/2032 16:00
बुध	21/01/2032 20:37
केतु	25/01/2032 05:35

शनि - चंद्र - चंद्र	
25/01/2032 05:35	
13/03/2032 10:13	
चंद्र	29/01/2032 05:58
मंगल	01/02/2032 01:26
राहु	08/02/2032 06:56
गुरु	14/02/2032 17:09
शनि	22/02/2032 08:17
बुध	29/02/2032 04:08
केतु	02/03/2032 23:37
शुक्र	11/03/2032 00:23
सूर्य	13/03/2032 10:13

शनि - चंद्र - मंगल	
13/03/2032 10:13	
16/04/2032 03:51	
मंगल	15/03/2032 09:26
राहु	20/03/2032 10:53
गुरु	24/03/2032 22:50
शनि	30/03/2032 07:02
बुध	04/04/2032 01:44
केतु	06/04/2032 00:57
शुक्र	11/04/2032 15:54
सूर्य	13/04/2032 08:23
चंद्र	16/04/2032 03:51

शनि - चंद्र - राहु	
16/04/2032 03:51	
11/07/2032 21:46	
राहु	29/04/2032 04:08
गुरु	10/05/2032 17:44
शनि	24/05/2032 11:22
बुध	05/06/2032 18:18
केतु	10/06/2032 19:45
शुक्र	25/06/2032 06:44
सूर्य	29/06/2032 14:50
चंद्र	06/07/2032 20:20
मंगल	11/07/2032 21:46

शनि - चंद्र - गुरु	
11/07/2032 21:46	
27/09/2032 00:22	
गुरु	22/07/2032 04:31
शनि	03/08/2032 09:32
बुध	14/08/2032 07:42
केतु	18/08/2032 19:39
शुक्र	31/08/2032 16:05
सूर्य	04/09/2032 12:37
चंद्र	10/09/2032 22:50
मंगल	15/09/2032 10:47
राहु	27/09/2032 00:22

शनि - चंद्र - शनि	
27/09/2032 00:22	
27/12/2032 13:58	
शनि	11/10/2032 12:19
बुध	24/10/2032 11:39
केतु	29/10/2032 19:51
शुक्र	14/11/2032 02:06
सूर्य	18/11/2032 15:59
चंद्र	26/11/2032 07:07
मंगल	01/12/2032 15:19
राहु	15/12/2032 08:57
गुरु	27/12/2032 13:58

शनि - चंद्र - बुध	
27/12/2032 13:58	
19/03/2033 12:13	
बुध	08/01/2033 04:31
केतु	12/01/2033 23:13
शुक्र	26/01/2033 14:55
सूर्य	30/01/2033 17:14
चंद्र	06/02/2033 13:06
मंगल	11/02/2033 07:47
राहु	23/02/2033 14:44
गुरु	06/03/2033 12:54
शनि	19/03/2033 12:13

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - चंद्र - केतु		शनि - चंद्र - शुक्र		शनि - चंद्र - सूर्य		शनि - मंगल - मंगल	
19/03/2033 12:13		22/04/2033 05:52		27/07/2033 15:07		25/08/2033 13:05	
22/04/2033 05:52		27/07/2033 15:07		25/08/2033 13:05		18/09/2033 03:50	
केतु	21/03/2033 11:27	शुक्र	08/05/2033 07:24	सूर्य	29/07/2033 01:49	मंगल	26/08/2033 22:09
शुक्र	27/03/2033 02:23	सूर्य	13/05/2033 03:04	चंद्र	31/07/2033 11:38	राहु	30/08/2033 11:09
सूर्य	28/03/2033 18:52	चंद्र	21/05/2033 03:50	मंगल	02/08/2033 04:07	गुरु	02/09/2033 14:43
चंद्र	31/03/2033 14:21	मंगल	26/05/2033 18:47	राहु	06/08/2033 12:13	शनि	06/09/2033 08:28
मंगल	02/04/2033 13:34	राहु	10/06/2033 05:46	गुरु	10/08/2033 08:45	बुध	09/09/2033 16:45
राहु	07/04/2033 15:01	गुरु	23/06/2033 02:12	शनि	14/08/2033 22:38	केतु	11/09/2033 01:48
गुरु	12/04/2033 02:58	शनि	08/07/2033 08:28	बुध	19/08/2033 00:56	शुक्र	15/09/2033 00:16
शनि	17/04/2033 11:10	बुध	22/07/2033 00:10	केतु	20/08/2033 17:25	सूर्य	16/09/2033 04:36
बुध	22/04/2033 05:52	केतु	27/07/2033 15:07	शुक्र	25/08/2033 13:05	चंद्र	18/09/2033 03:50

शनि - मंगल - राहु		शनि - मंगल - गुरु		शनि - मंगल - शनि		शनि - मंगल - बुध	
18/09/2033 03:50		17/11/2033 21:11		10/01/2034 20:36		15/03/2034 22:55	
17/11/2033 21:11		10/01/2034 20:36		15/03/2034 22:55		12/05/2034 07:18	
राहु	27/09/2033 06:26	गुरु	25/11/2033 01:54	शनि	21/01/2034 00:10	बुध	24/03/2034 01:54
गुरु	05/10/2033 08:45	शनि	03/12/2033 15:01	बुध	30/01/2034 02:06	केतु	27/03/2034 10:11
शनि	14/10/2033 23:30	बुध	11/12/2033 06:32	केतु	02/02/2034 19:50	शुक्र	05/04/2034 23:35
बुध	23/10/2033 13:57	केतु	14/12/2033 10:06	शुक्र	13/02/2034 12:13	सूर्य	08/04/2034 20:24
केतु	27/10/2033 02:58	शुक्र	23/12/2033 10:00	सूर्य	16/02/2034 17:08	चंद्र	13/04/2034 15:06
शुक्र	06/11/2033 05:51	सूर्य	26/12/2033 02:46	चंद्र	22/02/2034 01:19	मंगल	16/04/2034 23:23
सूर्य	09/11/2033 06:43	चंद्र	30/12/2033 14:43	मंगल	25/02/2034 19:03	राहु	25/04/2034 13:51
चंद्र	14/11/2033 08:10	मंगल	02/01/2034 18:17	राहु	07/03/2034 09:48	गुरु	03/05/2034 05:22
मंगल	17/11/2033 21:11	राहु	10/01/2034 20:36	गुरु	15/03/2034 22:55	शनि	12/05/2034 07:18

शनि - मंगल - केतु		शनि - मंगल - शुक्र		शनि - मंगल - सूर्य		शनि - मंगल - चंद्र	
12/05/2034 07:18		04/06/2034 22:02		11/08/2034 09:19		31/08/2034 15:06	
04/06/2034 22:02		11/08/2034 09:19		31/08/2034 15:06		04/10/2034 08:44	
केतु	13/05/2034 16:21	शुक्र	16/06/2034 03:55	सूर्य	12/08/2034 09:36	चंद्र	03/09/2034 10:34
शुक्र	17/05/2034 14:49	सूर्य	19/06/2034 12:53	चंद्र	14/08/2034 02:05	मंगल	05/09/2034 09:48
सूर्य	18/05/2034 19:09	चंद्र	25/06/2034 03:49	मंगल	15/08/2034 06:25	राहु	10/09/2034 11:15
चंद्र	20/05/2034 18:23	मंगल	29/06/2034 02:17	राहु	18/08/2034 07:17	गुरु	14/09/2034 23:12
मंगल	22/05/2034 03:26	राहु	09/07/2034 05:10	गुरु	21/08/2034 00:04	शनि	20/09/2034 07:23
राहु	25/05/2034 16:27	गुरु	18/07/2034 05:05	शनि	24/08/2034 04:59	बुध	25/09/2034 02:05
गुरु	28/05/2034 20:01	शनि	28/07/2034 21:28	बुध	27/08/2034 01:48	केतु	27/09/2034 01:19
शनि	01/06/2034 13:45	बुध	07/08/2034 10:51	केतु	28/08/2034 06:08	शुक्र	02/10/2034 16:15
बुध	04/06/2034 22:02	केतु	11/08/2034 09:19	शुक्र	31/08/2034 15:06	सूर्य	04/10/2034 08:44

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - बुध - राहु - शुक्र	
29/11/2025 05:05	
23/12/2025 18:57	
शुक्र	03/12/2025 07:23
सूर्य	04/12/2025 12:53
चंद्र	06/12/2025 14:02
मंगल	08/12/2025 00:27
राहु	11/12/2025 16:56
गुरु	14/12/2025 23:35
शनि	18/12/2025 20:59
बुध	22/12/2025 08:33
केतु	23/12/2025 18:57

शनि - बुध - राहु - सूर्य	
23/12/2025 18:57	
31/12/2025 03:55	
सूर्य	24/12/2025 03:48
चंद्र	24/12/2025 18:33
मंगल	25/12/2025 04:52
राहु	26/12/2025 07:25
गुरु	27/12/2025 07:01
शनि	28/12/2025 11:02
बुध	29/12/2025 12:06
केतु	29/12/2025 22:26
शुक्र	31/12/2025 03:55

शनि - बुध - राहु - चंद्र	
31/12/2025 03:55	
12/01/2026 10:52	
चंद्र	01/01/2026 04:30
मंगल	01/01/2026 21:42
राहु	03/01/2026 17:57
गुरु	05/01/2026 09:16
शनि	07/01/2026 07:58
बुध	09/01/2026 01:45
केतु	09/01/2026 18:57
शुक्र	11/01/2026 20:07
सूर्य	12/01/2026 10:52

शनि - बुध - राहु - मंगल	
12/01/2026 10:52	
21/01/2026 01:19	
मंगल	12/01/2026 22:54
राहु	14/01/2026 05:52
गुरु	15/01/2026 09:24
शनि	16/01/2026 18:05
बुध	17/01/2026 23:20
केतु	18/01/2026 11:23
शुक्र	19/01/2026 21:47
सूर्य	20/01/2026 08:07
चंद्र	21/01/2026 01:19

शनि - बुध - गुरु - गुरु	
21/01/2026 01:19	
07/02/2026 12:47	
गुरु	23/01/2026 09:15
शनि	26/01/2026 03:40
बुध	28/01/2026 15:05
केतु	29/01/2026 15:33
शुक्र	01/02/2026 13:28
सूर्य	02/02/2026 10:26
चंद्र	03/02/2026 21:24
मंगल	04/02/2026 21:52
राहु	07/02/2026 12:47

शनि - बुध - गुरु - शनि	
07/02/2026 12:47	
28/02/2026 06:54	
शनि	10/02/2026 19:39
बुध	13/02/2026 18:13
केतु	14/02/2026 23:17
शुक्र	18/02/2026 10:18
सूर्य	19/02/2026 11:12
चंद्र	21/02/2026 04:43
मंगल	22/02/2026 09:46
राहु	25/02/2026 12:29
गुरु	28/02/2026 06:54

शनि - बुध - गुरु - बुध	
28/02/2026 06:54	
18/03/2026 20:36	
बुध	02/03/2026 22:03
केतु	04/03/2026 00:03
शुक्र	07/03/2026 02:19
सूर्य	08/03/2026 00:37
चंद्र	09/03/2026 13:45
मंगल	10/03/2026 15:45
राहु	13/03/2026 10:36
गुरु	15/03/2026 22:02
शनि	18/03/2026 20:36

शनि - बुध - गुरु - केतु	
18/03/2026 20:36	
26/03/2026 12:07	
केतु	19/03/2026 07:18
शुक्र	20/03/2026 13:53
सूर्य	20/03/2026 23:04
चंद्र	21/03/2026 14:21
मंगल	22/03/2026 01:03
राहु	23/03/2026 04:35
गुरु	24/03/2026 05:03
शनि	25/03/2026 10:07
बुध	26/03/2026 12:07

शनि - बुध - गुरु - शुक्र	
26/03/2026 12:07	
17/04/2026 08:27	
शुक्र	30/03/2026 03:30
सूर्य	31/03/2026 05:43
चंद्र	02/04/2026 01:25
मंगल	03/04/2026 08:00
राहु	06/04/2026 14:39
गुरु	09/04/2026 12:34
शनि	12/04/2026 23:35
बुध	16/04/2026 01:52
केतु	17/04/2026 08:27

शनि - बुध - गुरु - सूर्य	
17/04/2026 08:27	
23/04/2026 21:45	
सूर्य	17/04/2026 16:19
चंद्र	18/04/2026 05:25
मंगल	18/04/2026 14:36
राहु	19/04/2026 14:11
गुरु	20/04/2026 11:10
शनि	21/04/2026 12:04
बुध	22/04/2026 10:21
केतु	22/04/2026 19:32
शुक्र	23/04/2026 21:45

शनि - बुध - गुरु - चंद्र	
23/04/2026 21:45	
04/05/2026 19:55	
चंद्र	24/04/2026 19:36
मंगल	25/04/2026 10:53
राहु	27/04/2026 02:13
गुरु	28/04/2026 13:10
शनि	30/04/2026 06:41
बुध	01/05/2026 19:49
केतु	02/05/2026 11:07
शुक्र	04/05/2026 06:48
सूर्य	04/05/2026 19:55

शनि - बुध - गुरु - मंगल	
04/05/2026 19:55	
12/05/2026 11:26	
मंगल	05/05/2026 06:37
राहु	06/05/2026 10:09
गुरु	07/05/2026 10:37
शनि	08/05/2026 15:40
बुध	09/05/2026 17:40
केतु	10/05/2026 04:23
शुक्र	11/05/2026 10:58
सूर्य	11/05/2026 20:08
चंद्र	12/05/2026 11:26

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - बुध - गुरु - राहु	
12/05/2026 11:26	
01/06/2026 03:20	
राहु	15/05/2026 10:13
गुरु	18/05/2026 01:08
शनि	21/05/2026 03:51
बुध	23/05/2026 22:43
केतु	25/05/2026 02:14
शुक्र	28/05/2026 08:53
सूर्य	29/05/2026 08:29
चंद्र	30/05/2026 23:49
मंगल	01/06/2026 03:20

शनि - बुध - शनि - शनि	
01/06/2026 03:20	
25/06/2026 18:51	
शनि	05/06/2026 01:00
बुध	08/06/2026 12:48
केतु	09/06/2026 23:18
शुक्र	14/06/2026 01:53
सूर्य	15/06/2026 07:28
चंद्र	17/06/2026 08:45
मंगल	18/06/2026 19:15
राहु	22/06/2026 11:59
गुरु	25/06/2026 18:51

शनि - बुध - शनि - बुध	
25/06/2026 18:51	
17/07/2026 20:06	
बुध	28/06/2026 21:50
केतु	30/06/2026 04:42
शुक्र	03/07/2026 20:55
सूर्य	04/07/2026 23:23
चंद्र	06/07/2026 19:29
मंगल	08/07/2026 02:21
राहु	11/07/2026 09:44
गुरु	14/07/2026 08:18
शनि	17/07/2026 20:06

शनि - बुध - शनि - केतु	
17/07/2026 20:06	
26/07/2026 22:02	
केतु	18/07/2026 08:49
शुक्र	19/07/2026 21:08
सूर्य	20/07/2026 08:02
चंद्र	21/07/2026 02:12
मंगल	21/07/2026 14:55
राहु	22/07/2026 23:36
गुरु	24/07/2026 04:39
शनि	25/07/2026 15:10
बुध	26/07/2026 22:02

शनि - बुध - शनि - शुक्र	
26/07/2026 22:02	
21/08/2026 20:41	
शुक्र	31/07/2026 05:49
सूर्य	01/08/2026 12:56
चंद्र	03/08/2026 16:50
मंगल	05/08/2026 05:09
राहु	09/08/2026 02:33
गुरु	12/08/2026 13:34
शनि	16/08/2026 16:09
बुध	20/08/2026 08:22
केतु	21/08/2026 20:41

शनि - बुध - शनि - सूर्य	
21/08/2026 20:41	
29/08/2026 15:29	
सूर्य	22/08/2026 06:01
चंद्र	22/08/2026 21:35
मंगल	23/08/2026 08:29
राहु	24/08/2026 12:30
गुरु	25/08/2026 13:25
शनि	26/08/2026 18:59
बुध	27/08/2026 21:27
केतु	28/08/2026 08:21
शुक्र	29/08/2026 15:29

शनि - बुध - शनि - चंद्र	
29/08/2026 15:29	
11/09/2026 14:48	
चंद्र	30/08/2026 17:25
मंगल	31/08/2026 11:35
राहु	02/09/2026 10:17
गुरु	04/09/2026 03:47
शनि	06/09/2026 05:05
बुध	08/09/2026 01:11
केतु	08/09/2026 19:21
शुक्र	10/09/2026 23:14
सूर्य	11/09/2026 14:48

शनि - बुध - शनि - मंगल	
11/09/2026 14:48	
20/09/2026 16:44	
मंगल	12/09/2026 03:31
राहु	13/09/2026 12:12
गुरु	14/09/2026 17:16
शनि	16/09/2026 03:46
बुध	17/09/2026 10:38
केतु	17/09/2026 23:21
शुक्र	19/09/2026 11:40
सूर्य	19/09/2026 22:34
चंद्र	20/09/2026 16:44

शनि - बुध - शनि - राहु	
20/09/2026 16:44	
14/10/2026 01:07	
राहु	24/09/2026 04:47
गुरु	27/09/2026 07:30
शनि	01/10/2026 00:14
बुध	04/10/2026 07:37
केतु	05/10/2026 16:19
शुक्र	09/10/2026 13:43
सूर्य	10/10/2026 17:44
चंद्र	12/10/2026 16:26
मंगल	14/10/2026 01:07

शनि - बुध - शनि - गुरु	
14/10/2026 01:07	
03/11/2026 19:14	
गुरु	16/10/2026 19:32
शनि	20/10/2026 02:24
बुध	23/10/2026 00:58
केतु	24/10/2026 06:01
शुक्र	27/10/2026 17:03
सूर्य	28/10/2026 17:57
चंद्र	30/10/2026 11:28
मंगल	31/10/2026 16:31
राहु	03/11/2026 19:14

शनि - केतु - केतु - केतु	
03/11/2026 19:14	
05/11/2026 04:18	
केतु	03/11/2026 21:10
शुक्र	04/11/2026 02:40
सूर्य	04/11/2026 04:20
चंद्र	04/11/2026 07:05
मंगल	04/11/2026 09:01
राहु	04/11/2026 13:58
गुरु	04/11/2026 18:23
शनि	04/11/2026 23:37
बुध	05/11/2026 04:18

शनि - केतु - केतु - शुक्र	
05/11/2026 04:18	
09/11/2026 02:45	
शुक्र	05/11/2026 20:02
सूर्य	06/11/2026 00:46
चंद्र	06/11/2026 08:38
मंगल	06/11/2026 14:09
राहु	07/11/2026 04:19
गुरु	07/11/2026 16:54
शनि	08/11/2026 07:52
बुध	08/11/2026 21:15
केतु	09/11/2026 02:45

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 14 वर्ष 7 मास 25 दिन

बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
10/07/1971		05/03/1986		05/03/2004		05/03/2015		05/03/2027	
05/03/1986		05/03/2004		05/03/2015		05/03/2027		05/03/2040	
बुध	01/09/1971	शुक्र	19/12/1988	सूर्य	21/03/2005	मंगल	01/06/2016	गुरु	18/08/2028
शुक्र	21/04/1974	सूर्य	04/09/1990	मंगल	10/05/2006	गुरु	05/10/2017	शनि	15/03/2030
सूर्य	01/12/1975	मंगल	15/07/1992	गुरु	03/08/2007	शनि	18/03/2019	केतु	19/11/2031
मंगल	03/09/1977	गुरु	22/07/1994	शनि	30/11/2008	केतु	05/10/2020	चंद्र	03/09/2033
गुरु	31/07/1979	शनि	22/09/1996	केतु	04/05/2010	चंद्र	01/06/2022	बुध	31/07/2035
शनि	19/08/1981	केतु	20/01/1999	चंद्र	09/11/2011	बुध	05/03/2024	शुक्र	06/08/2037
केतु	31/10/1983	चंद्र	15/07/2001	बुध	20/06/2013	शुक्र	14/01/2026	सूर्य	30/10/2038
चंद्र	05/03/1986	बुध	05/03/2004	शुक्र	05/03/2015	सूर्य	05/03/2027	मंगल	05/03/2040

शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
05/03/2040		05/03/2054		05/03/2069		05/03/2085	
05/03/2054		05/03/2069		05/03/2085		00/00/0000	
शनि	12/11/2041	केतु	12/02/2056	चंद्र	20/05/2071	बुध	10/07/2087
केतु	04/09/2043	चंद्र	08/03/2058	बुध	22/09/2073		00/00/0000
चंद्र	09/08/2045	बुध	19/05/2060	शुक्र	17/03/2076		00/00/0000
बुध	29/08/2047	शुक्र	16/09/2062	सूर्य	22/09/2077		00/00/0000
शुक्र	30/10/2049	सूर्य	18/02/2064	मंगल	20/05/2079		00/00/0000
सूर्य	27/02/2051	मंगल	07/09/2065	गुरु	05/03/2081		00/00/0000
मंगल	09/08/2052	गुरु	14/05/2067	शनि	08/02/2083		00/00/0000
गुरु	05/03/2054	शनि	05/03/2069	केतु	05/03/2085		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु	
10/07/1971		01/09/1971		21/04/1974		01/12/1975		03/09/1977	
01/09/1971		21/04/1974		01/12/1975		03/09/1977		31/07/1979	
	00/00/0000	शुक्र	28/01/1972	सूर्य	16/06/1974	मंगल	06/02/1976	गुरु	20/11/1977
	00/00/0000	सूर्य	29/04/1972	मंगल	16/08/1974	गुरु	18/04/1976	शनि	12/02/1978
	00/00/0000	मंगल	06/08/1972	गुरु	21/10/1974	शनि	04/07/1976	केतु	13/05/1978
	00/00/0000	गुरु	22/11/1972	शनि	31/12/1974	केतु	25/09/1976	चंद्र	17/08/1978
	00/00/0000	शनि	19/03/1973	केतु	17/03/1975	चंद्र	23/12/1976	बुध	27/11/1978
	00/00/0000	केतु	21/07/1973	चंद्र	06/06/1975	बुध	27/03/1977	शुक्र	15/03/1979
	10/07/1971	चंद्र	01/12/1973	बुध	01/09/1975	शुक्र	05/07/1977	सूर्य	20/05/1979
चंद्र	01/09/1971	बुध	21/04/1974	शुक्र	01/12/1975	सूर्य	03/09/1977	मंगल	31/07/1979

बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
31/07/1979		19/08/1981		31/10/1983		05/03/1986		19/12/1988	
19/08/1981		31/10/1983		05/03/1986		19/12/1988		04/09/1990	
शनि	30/10/1979	केतु	01/12/1981	चंद्र	26/02/1984	शुक्र	10/08/1986	सूर्य	16/02/1989
केतु	04/02/1980	चंद्र	21/03/1982	बुध	30/06/1984	सूर्य	15/11/1986	मंगल	22/04/1989
चंद्र	17/05/1980	बुध	17/07/1982	शुक्र	10/11/1984	मंगल	01/03/1987	गुरु	01/07/1989
बुध	04/09/1980	शुक्र	19/11/1982	सूर्य	30/01/1985	गुरु	23/06/1987	शनि	14/09/1989
शुक्र	29/12/1980	सूर्य	03/02/1983	मंगल	29/04/1985	शनि	24/10/1987	केतु	04/12/1989
सूर्य	10/03/1981	मंगल	27/04/1983	गुरु	03/08/1985	केतु	04/03/1988	चंद्र	28/02/1990
मंगल	27/05/1981	गुरु	26/07/1983	शनि	14/11/1985	चंद्र	23/07/1988	बुध	30/05/1990
गुरु	19/08/1981	शनि	31/10/1983	केतु	05/03/1986	बुध	19/12/1988	शुक्र	04/09/1990

शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र	
04/09/1990		15/07/1992		22/07/1994		22/09/1996		20/01/1999	
15/07/1992		22/07/1994		22/09/1996		20/01/1999		15/07/2001	
मंगल	13/11/1990	गुरु	05/10/1992	शनि	25/10/1994	केतु	10/01/1997	चंद्र	25/05/1999
गुरु	28/01/1991	शनि	02/01/1993	केतु	05/02/1995	चंद्र	07/05/1997	बुध	05/10/1999
शनि	20/04/1991	केतु	08/04/1993	चंद्र	25/05/1995	बुध	09/09/1997	शुक्र	23/02/2000
केतु	17/07/1991	चंद्र	18/07/1993	बुध	19/09/1995	शुक्र	19/01/1998	सूर्य	19/05/2000
चंद्र	19/10/1991	बुध	03/11/1993	शुक्र	20/01/1996	सूर्य	09/04/1998	मंगल	21/08/2000
बुध	27/01/1992	शुक्र	26/02/1994	सूर्य	04/04/1996	मंगल	06/07/1998	गुरु	30/11/2000
शुक्र	11/05/1992	सूर्य	06/05/1994	मंगल	25/06/1996	गुरु	10/10/1998	शनि	20/03/2001
सूर्य	15/07/1992	मंगल	22/07/1994	गुरु	22/09/1996	शनि	20/01/1999	केतु	15/07/2001

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
15/07/2001		05/03/2004		21/03/2005		10/05/2006		03/08/2007	
05/03/2004		21/03/2005		10/05/2006		03/08/2007		30/11/2008	
बुध	03/12/2001	सूर्य	10/04/2004	मंगल	03/05/2005	गुरु	30/06/2006	शनि	01/10/2007
शुक्र	02/05/2002	मंगल	19/05/2004	गुरु	18/06/2005	शनि	23/08/2006	केतु	03/12/2007
सूर्य	01/08/2002	गुरु	01/07/2004	शनि	07/08/2005	केतु	20/10/2006	चंद्र	08/02/2008
मंगल	09/11/2002	शनि	16/08/2004	केतु	30/09/2005	चंद्र	21/12/2006	बुध	19/04/2008
गुरु	25/02/2003	केतु	04/10/2004	चंद्र	26/11/2005	बुध	25/02/2007	शुक्र	03/07/2008
शनि	21/06/2003	चंद्र	26/11/2004	बुध	26/01/2006	शुक्र	06/05/2007	सूर्य	18/08/2008
केतु	24/10/2003	बुध	20/01/2005	शुक्र	01/04/2006	सूर्य	18/06/2007	मंगल	07/10/2008
चंद्र	05/03/2004	शुक्र	21/03/2005	सूर्य	10/05/2006	मंगल	03/08/2007	गुरु	30/11/2008

सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल	
30/11/2008		04/05/2010		09/11/2011		20/06/2013		05/03/2015	
04/05/2010		09/11/2011		20/06/2013		05/03/2015		01/06/2016	
केतु	06/02/2009	चंद्र	19/07/2010	बुध	03/02/2012	शुक्र	25/09/2013	मंगल	21/04/2015
चंद्र	18/04/2009	बुध	09/10/2010	शुक्र	05/05/2012	सूर्य	23/11/2013	गुरु	11/06/2015
बुध	03/07/2009	शुक्र	03/01/2011	सूर्य	30/06/2012	मंगल	26/01/2014	शनि	05/08/2015
शुक्र	22/09/2009	सूर्य	24/02/2011	मंगल	30/08/2012	गुरु	06/04/2014	केतु	02/10/2015
सूर्य	10/11/2009	मंगल	22/04/2011	गुरु	03/11/2012	शनि	20/06/2014	चंद्र	04/12/2015
मंगल	03/01/2010	गुरु	24/06/2011	शनि	14/01/2013	केतु	09/09/2014	बुध	08/02/2016
गुरु	02/03/2010	शनि	29/08/2011	केतु	31/03/2013	चंद्र	04/12/2014	शुक्र	19/04/2016
शनि	04/05/2010	केतु	09/11/2011	चंद्र	20/06/2013	बुध	05/03/2015	सूर्य	01/06/2016

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध	
01/06/2016		05/10/2017		18/03/2019		05/10/2020		01/06/2022	
05/10/2017		18/03/2019		05/10/2020		01/06/2022		05/03/2024	
गुरु	26/07/2016	शनि	08/12/2017	केतु	30/05/2019	चंद्र	27/12/2020	बुध	03/09/2022
शनि	23/09/2016	केतु	14/02/2018	चंद्र	16/08/2019	बुध	26/03/2021	शुक्र	12/12/2022
केतु	26/11/2016	चंद्र	28/04/2018	बुध	07/11/2019	शुक्र	28/06/2021	सूर्य	11/02/2023
चंद्र	01/02/2017	बुध	15/07/2018	शुक्र	03/02/2020	सूर्य	24/08/2021	मंगल	18/04/2023
बुध	14/04/2017	शुक्र	05/10/2018	सूर्य	28/03/2020	मंगल	25/10/2021	गुरु	29/06/2023
शुक्र	30/06/2017	सूर्य	24/11/2018	मंगल	26/05/2020	गुरु	01/01/2022	शनि	15/09/2023
सूर्य	15/08/2017	मंगल	18/01/2019	गुरु	28/07/2020	शनि	15/03/2022	केतु	07/12/2023
मंगल	05/10/2017	गुरु	18/03/2019	शनि	05/10/2020	केतु	01/06/2022	चंद्र	05/03/2024

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु	
05/03/2024		14/01/2026		05/03/2027		18/08/2028		15/03/2030	
14/01/2026		05/03/2027		18/08/2028		15/03/2030		19/11/2031	
शुक्र	18/06/2024	सूर्य	22/02/2026	गुरु	04/05/2027	शनि	27/10/2028	केतु	02/06/2030
सूर्य	22/08/2024	मंगल	06/04/2026	शनि	07/07/2027	केतु	09/01/2029	चंद्र	26/08/2030
मंगल	31/10/2024	गुरु	23/05/2026	केतु	14/09/2027	चंद्र	29/03/2029	बुध	24/11/2030
गुरु	15/01/2025	शनि	12/07/2026	चंद्र	26/11/2027	बुध	21/06/2029	शुक्र	27/02/2031
शनि	07/04/2025	केतु	04/09/2026	बुध	12/02/2028	शुक्र	18/09/2029	सूर्य	26/04/2031
केतु	04/07/2025	चंद्र	31/10/2026	शुक्र	05/05/2028	सूर्य	11/11/2029	मंगल	29/06/2031
चंद्र	06/10/2025	बुध	31/12/2026	सूर्य	24/06/2028	मंगल	09/01/2030	गुरु	05/09/2031
बुध	14/01/2026	शुक्र	05/03/2027	मंगल	18/08/2028	गुरु	15/03/2030	शनि	19/11/2031

गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल	
19/11/2031		03/09/2033		31/07/2035		06/08/2037		30/10/2038	
03/09/2033		31/07/2035		06/08/2037		30/10/2038		05/03/2040	
चंद्र	17/02/2032	बुध	14/12/2033	शुक्र	23/11/2035	सूर्य	18/09/2037	मंगल	20/12/2038
बुध	23/05/2032	शुक्र	01/04/2034	सूर्य	01/02/2036	मंगल	03/11/2037	गुरु	13/02/2039
शुक्र	01/09/2032	सूर्य	06/06/2034	मंगल	17/04/2036	गुरु	24/12/2037	शनि	14/04/2039
सूर्य	03/11/2032	मंगल	17/08/2034	गुरु	08/07/2036	शनि	16/02/2038	केतु	16/06/2039
मंगल	09/01/2033	गुरु	03/11/2034	शनि	05/10/2036	केतु	15/04/2038	चंद्र	23/08/2039
गुरु	24/03/2033	शनि	26/01/2035	केतु	09/01/2037	चंद्र	17/06/2038	बुध	03/11/2039
शनि	11/06/2033	केतु	26/04/2035	चंद्र	20/04/2037	बुध	22/08/2038	शुक्र	18/01/2040
केतु	03/09/2033	चंद्र	31/07/2035	बुध	06/08/2037	शुक्र	30/10/2038	सूर्य	05/03/2040

शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र	
05/03/2040		12/11/2041		04/09/2043		09/08/2045		29/08/2047	
12/11/2041		04/09/2043		09/08/2045		29/08/2047		30/10/2049	
शनि	18/05/2040	केतु	05/02/2042	चंद्र	10/12/2043	बुध	27/11/2045	शुक्र	30/12/2047
केतु	06/08/2040	चंद्र	07/05/2042	बुध	23/03/2044	शुक्र	23/03/2046	सूर्य	14/03/2048
चंद्र	30/10/2040	बुध	12/08/2042	शुक्र	10/07/2044	सूर्य	02/06/2046	मंगल	04/06/2048
बुध	28/01/2041	शुक्र	23/11/2042	सूर्य	15/09/2044	मंगल	19/08/2046	गुरु	01/09/2048
शुक्र	04/05/2041	सूर्य	25/01/2043	मंगल	27/11/2044	गुरु	11/11/2046	शनि	06/12/2048
सूर्य	02/07/2041	मंगल	03/04/2043	गुरु	14/02/2045	शनि	09/02/2047	केतु	18/03/2049
मंगल	04/09/2041	गुरु	16/06/2043	शनि	10/05/2045	केतु	17/05/2047	चंद्र	06/07/2049
गुरु	12/11/2041	शनि	04/09/2043	केतु	09/08/2045	चंद्र	29/08/2047	बुध	30/10/2049

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र	
30/10/2049		27/02/2051		09/08/2052		05/03/2054		12/02/2056	
27/02/2051		09/08/2052		05/03/2054		12/02/2056		08/03/2058	
सूर्य	15/12/2049	मंगल	23/04/2051	गुरु	12/10/2052	केतु	05/06/2054	चंद्र	26/05/2056
मंगल	03/02/2050	गुरु	21/06/2051	शनि	20/12/2052	चंद्र	10/09/2054	बुध	14/09/2056
गुरु	30/03/2050	शनि	24/08/2051	केतु	05/03/2053	बुध	23/12/2054	शुक्र	09/01/2057
शनि	27/05/2050	केतु	31/10/2051	चंद्र	23/05/2053	शुक्र	12/04/2055	सूर्य	21/03/2057
केतु	29/07/2050	चंद्र	12/01/2052	बुध	15/08/2053	सूर्य	18/06/2055	मंगल	08/06/2057
चंद्र	04/10/2050	बुध	30/03/2052	शुक्र	11/11/2053	मंगल	31/08/2055	गुरु	31/08/2057
बुध	14/12/2050	शुक्र	20/06/2052	सूर्य	05/01/2054	गुरु	18/11/2055	शनि	01/12/2057
शुक्र	27/02/2051	सूर्य	09/08/2052	मंगल	05/03/2054	शनि	12/02/2056	केतु	08/03/2058

केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु	
08/03/2058		19/05/2060		16/09/2062		18/02/2064		07/09/2065	
19/05/2060		16/09/2062		18/02/2064		07/09/2065		14/05/2067	
बुध	04/07/2058	शुक्र	28/09/2060	सूर्य	05/11/2062	मंगल	16/04/2064	गुरु	14/11/2065
शुक्र	06/11/2058	सूर्य	18/12/2060	मंगल	28/12/2062	गुरु	19/06/2064	शनि	28/01/2066
सूर्य	21/01/2059	मंगल	16/03/2061	गुरु	25/02/2063	शनि	26/08/2064	केतु	17/04/2066
मंगल	14/04/2059	गुरु	19/06/2061	शनि	28/04/2063	केतु	08/11/2064	चंद्र	11/07/2066
गुरु	13/07/2059	शनि	30/09/2061	केतु	04/07/2063	चंद्र	25/01/2065	बुध	09/10/2066
शनि	18/10/2059	केतु	17/01/2062	चंद्र	14/09/2063	बुध	18/04/2065	शुक्र	12/01/2067
केतु	29/01/2060	चंद्र	15/05/2062	बुध	29/11/2063	शुक्र	15/07/2065	सूर्य	11/03/2067
चंद्र	19/05/2060	बुध	16/09/2062	शुक्र	18/02/2064	सूर्य	07/09/2065	मंगल	14/05/2067

केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
14/05/2067		05/03/2069		20/05/2071		22/09/2073		17/03/2076	
05/03/2069		20/05/2071		22/09/2073		17/03/2076		22/09/2077	
शनि	01/08/2067	चंद्र	24/06/2069	बुध	22/09/2071	शुक्र	10/02/2074	सूर्य	09/05/2076
केतु	26/10/2067	बुध	20/10/2069	शुक्र	02/02/2072	सूर्य	07/05/2074	मंगल	05/07/2076
चंद्र	25/01/2068	शुक्र	22/02/2070	सूर्य	24/04/2072	मंगल	09/08/2074	गुरु	05/09/2076
बुध	01/05/2068	सूर्य	10/05/2070	मंगल	21/07/2072	गुरु	19/11/2074	शनि	11/11/2076
शुक्र	12/08/2068	मंगल	01/08/2070	गुरु	25/10/2072	शनि	08/03/2075	केतु	22/01/2077
सूर्य	13/10/2068	गुरु	30/10/2070	शनि	05/02/2073	केतु	03/07/2075	चंद्र	08/04/2077
मंगल	21/12/2068	शनि	05/02/2071	केतु	27/05/2073	चंद्र	05/11/2075	बुध	28/06/2077
गुरु	05/03/2069	केतु	20/05/2071	चंद्र	22/09/2073	बुध	17/03/2076	शुक्र	22/09/2077

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 8 मास 29 दिन

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
10/07/1971		08/04/1977		07/12/1981		07/12/1993		07/08/2004	
08/04/1977		07/12/1981		07/12/1993		07/08/2004		08/04/2017	
	10/07/1971	मंगल	16/07/1977	राहु	26/09/1983	गुरु	11/05/1995	शनि	10/08/2006
मंगल	19/07/1971	राहु	29/03/1978	गुरु	02/05/1985	शनि	16/01/1997	बुध	26/05/2008
राहु	18/07/1972	गुरु	11/11/1978	शनि	27/03/1987	बुध	22/07/1998	केतु	20/02/2009
गुरु	07/06/1973	शनि	08/08/1979	बुध	07/12/1988	केतु	07/03/1999	शुक्र	02/04/2011
शनि	28/06/1974	बुध	05/04/1980	केतु	20/08/1989	शुक्र	15/12/2000	सूर्य	19/11/2011
बुध	08/06/1975	केतु	14/07/1980	शुक्र	20/08/1991	सूर्य	28/06/2001	चंद्र	09/12/2012
केतु	28/10/1975	शुक्र	24/04/1981	सूर्य	26/03/1992	चंद्र	18/05/2002	मंगल	05/09/2013
शुक्र	07/12/1976	सूर्य	18/07/1981	चंद्र	26/03/1993	मंगल	01/01/2003	राहु	31/07/2015
सूर्य	08/04/1977	चंद्र	07/12/1981	मंगल	07/12/1993	राहु	07/08/2004	गुरु	08/04/2017

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
08/04/2017		07/08/2028		08/04/2033		08/08/2046		08/08/2050	
07/08/2028		08/04/2033		08/08/2046		08/08/2050		00/00/0000	
बुध	15/11/2018	केतु	15/11/2028	शुक्र	28/06/2035	सूर्य	20/10/2046	चंद्र	27/02/2051
केतु	15/07/2019	शुक्र	26/08/2029	सूर्य	27/02/2036	चंद्र	18/02/2047	मंगल	10/07/2051
शुक्र	03/06/2021	सूर्य	19/11/2029	चंद्र	08/04/2037	मंगल	15/05/2047		00/00/0000
सूर्य	27/12/2021	चंद्र	10/04/2030	मंगल	17/01/2038	राहु	20/12/2047		00/00/0000
चंद्र	07/12/2022	मंगल	18/07/2030	राहु	17/01/2040	गुरु	02/07/2048		00/00/0000
मंगल	06/08/2023	राहु	31/03/2031	गुरु	28/10/2041	शनि	18/02/2049		00/00/0000
राहु	18/04/2025	गुरु	13/11/2031	शनि	08/12/2043	बुध	13/09/2049		00/00/0000
गुरु	22/10/2026	शनि	09/08/2032	बुध	28/10/2045	केतु	07/12/2049		00/00/0000
शनि	07/08/2028	बुध	08/04/2033	केतु	08/08/2046	शुक्र	08/08/2050		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
10/07/1971		19/07/1971		18/07/1972		07/06/1973		28/06/1974	
19/07/1971		18/07/1972		07/06/1973		28/06/1974		08/06/1975	
	00/00/0000	राहु	11/09/1971	गुरु	30/08/1972	शनि	08/08/1973	बुध	16/08/1974
	00/00/0000	गुरु	30/10/1971	शनि	21/10/1972	बुध	01/10/1973	केतु	05/09/1974
	00/00/0000	शनि	27/12/1971	बुध	06/12/1972	केतु	24/10/1973	शुक्र	02/11/1974
	00/00/0000	बुध	17/02/1972	केतु	24/12/1972	शुक्र	27/12/1973	सूर्य	19/11/1974
	00/00/0000	केतु	09/03/1972	शुक्र	17/02/1973	सूर्य	15/01/1974	चंद्र	18/12/1974
	00/00/0000	शुक्र	09/05/1972	सूर्य	05/03/1973	चंद्र	16/02/1974	मंगल	07/01/1975
	00/00/0000	सूर्य	27/05/1972	चंद्र	01/04/1973	मंगल	11/03/1974	राहु	27/02/1975
	10/07/1971	चंद्र	27/06/1972	मंगल	20/04/1973	राहु	08/05/1974	गुरु	14/04/1975
चंद्र	19/07/1971	मंगल	18/07/1972	राहु	07/06/1973	गुरु	28/06/1974	शनि	08/06/1975

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
08/06/1975		28/10/1975		07/12/1976		08/04/1977		16/07/1977	
28/10/1975		07/12/1976		08/04/1977		16/07/1977		29/03/1978	
केतु	16/06/1975	शुक्र	04/01/1976	सूर्य	13/12/1976	मंगल	13/04/1977	राहु	23/08/1977
शुक्र	10/07/1975	सूर्य	24/01/1976	चंद्र	23/12/1976	राहु	28/04/1977	गुरु	26/09/1977
सूर्य	17/07/1975	चंद्र	27/02/1976	मंगल	30/12/1976	गुरु	12/05/1977	शनि	06/11/1977
चंद्र	29/07/1975	मंगल	21/03/1976	राहु	17/01/1977	शनि	27/05/1977	बुध	12/12/1977
मंगल	06/08/1975	राहु	21/05/1976	गुरु	03/02/1977	बुध	10/06/1977	केतु	27/12/1977
राहु	27/08/1975	गुरु	14/07/1976	शनि	22/02/1977	केतु	16/06/1977	शुक्र	08/02/1978
गुरु	15/09/1975	शनि	17/09/1976	बुध	11/03/1977	शुक्र	03/07/1977	सूर्य	20/02/1978
शनि	08/10/1975	बुध	13/11/1976	केतु	18/03/1977	सूर्य	08/07/1977	चंद्र	14/03/1978
बुध	28/10/1975	केतु	07/12/1976	शुक्र	08/04/1977	चंद्र	16/07/1977	मंगल	29/03/1978

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
29/03/1978		11/11/1978		08/08/1979		05/04/1980		14/07/1980	
11/11/1978		08/08/1979		05/04/1980		14/07/1980		24/04/1981	
गुरु	28/04/1978	शनि	24/12/1978	बुध	11/09/1979	केतु	11/04/1980	शुक्र	30/08/1980
शनि	03/06/1978	बुध	31/01/1979	केतु	25/09/1979	शुक्र	28/04/1980	सूर्य	13/09/1980
बुध	05/07/1978	केतु	16/02/1979	शुक्र	04/11/1979	सूर्य	03/05/1980	चंद्र	07/10/1980
केतु	18/07/1978	शुक्र	02/04/1979	सूर्य	16/11/1979	चंद्र	11/05/1980	मंगल	24/10/1980
शुक्र	25/08/1978	सूर्य	15/04/1979	चंद्र	07/12/1979	मंगल	17/05/1980	राहु	05/12/1980
सूर्य	06/09/1978	चंद्र	08/05/1979	मंगल	21/12/1979	राहु	01/06/1980	गुरु	12/01/1981
चंद्र	25/09/1978	मंगल	23/05/1979	राहु	26/01/1980	गुरु	14/06/1980	शनि	26/02/1981
मंगल	08/10/1978	राहु	03/07/1979	गुरु	27/02/1980	शनि	30/06/1980	बुध	07/04/1981
राहु	11/11/1978	गुरु	08/08/1979	शनि	05/04/1980	बुध	14/07/1980	केतु	24/04/1981

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
24/04/1981		18/07/1981		07/12/1981		26/09/1983		02/05/1985	
18/07/1981		07/12/1981		26/09/1983		02/05/1985		27/03/1987	
सूर्य	28/04/1981	चंद्र	30/07/1981	राहु	16/03/1982	गुरु	12/12/1983	शनि	20/08/1985
चंद्र	05/05/1981	मंगल	07/08/1981	गुरु	11/06/1982	शनि	14/03/1984	बुध	26/11/1985
मंगल	10/05/1981	राहु	28/08/1981	शनि	23/09/1982	बुध	05/06/1984	केतु	06/01/1986
राहु	23/05/1981	गुरु	16/09/1981	बुध	26/12/1982	केतु	09/07/1984	शुक्र	01/05/1986
गुरु	03/06/1981	शनि	09/10/1981	केतु	02/02/1983	शुक्र	14/10/1984	सूर्य	05/06/1986
शनि	17/06/1981	बुध	29/10/1981	शुक्र	23/05/1983	सूर्य	13/11/1984	चंद्र	02/08/1986
बुध	29/06/1981	केतु	06/11/1981	सूर्य	24/06/1983	चंद्र	31/12/1984	मंगल	11/09/1986
केतु	04/07/1981	शुक्र	30/11/1981	चंद्र	18/08/1983	मंगल	03/02/1985	राहु	24/12/1986
शुक्र	18/07/1981	सूर्य	07/12/1981	मंगल	26/09/1983	राहु	02/05/1985	गुरु	27/03/1987

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
27/03/1987		07/12/1988		20/08/1989		20/08/1991		26/03/1992	
07/12/1988		20/08/1989		20/08/1991		26/03/1992		26/03/1993	
बुध	23/06/1987	केतु	22/12/1988	शुक्र	19/12/1989	सूर्य	31/08/1991	चंद्र	26/04/1992
केतु	29/07/1987	शुक्र	02/02/1989	सूर्य	25/01/1990	चंद्र	18/09/1991	मंगल	17/05/1992
शुक्र	10/11/1987	सूर्य	15/02/1989	चंद्र	27/03/1990	मंगल	01/10/1991	राहु	11/07/1992
सूर्य	11/12/1987	चंद्र	08/03/1989	मंगल	08/05/1990	राहु	03/11/1991	गुरु	28/08/1992
चंद्र	31/01/1988	मंगल	23/03/1989	राहु	26/08/1990	गुरु	02/12/1991	शनि	25/10/1992
मंगल	08/03/1988	राहु	01/05/1989	गुरु	01/12/1990	शनि	06/01/1992	बुध	16/12/1992
राहु	09/06/1988	गुरु	04/06/1989	शनि	27/03/1991	बुध	06/02/1992	केतु	06/01/1993
गुरु	31/08/1988	शनि	14/07/1989	बुध	08/07/1991	केतु	19/02/1992	शुक्र	08/03/1993
शनि	07/12/1988	बुध	20/08/1989	केतु	20/08/1991	शुक्र	26/03/1992	सूर्य	26/03/1993

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
26/03/1993		07/12/1993		11/05/1995		16/01/1997		22/07/1998	
07/12/1993		11/05/1995		16/01/1997		22/07/1998		07/03/1999	
मंगल	10/04/1993	गुरु	14/02/1994	शनि	16/08/1995	बुध	05/04/1997	केतु	05/08/1998
राहु	19/05/1993	शनि	08/05/1994	बुध	12/11/1995	केतु	07/05/1997	शुक्र	12/09/1998
गुरु	22/06/1993	बुध	20/07/1994	केतु	18/12/1995	शुक्र	07/08/1997	सूर्य	23/09/1998
शनि	01/08/1993	केतु	20/08/1994	शुक्र	29/03/1996	सूर्य	03/09/1997	चंद्र	12/10/1998
बुध	06/09/1993	शुक्र	14/11/1994	सूर्य	29/04/1996	चंद्र	19/10/1997	मंगल	25/10/1998
केतु	21/09/1993	सूर्य	10/12/1994	चंद्र	20/06/1996	मंगल	21/11/1997	राहु	28/11/1998
शुक्र	03/11/1993	चंद्र	22/01/1995	मंगल	26/07/1996	राहु	11/02/1998	गुरु	28/12/1998
सूर्य	16/11/1993	मंगल	22/02/1995	राहु	26/10/1996	गुरु	26/04/1998	शनि	02/02/1999
चंद्र	07/12/1993	राहु	11/05/1995	गुरु	16/01/1997	शनि	22/07/1998	बुध	07/03/1999

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
07/03/1999		15/12/2000		28/06/2001		18/05/2002		01/01/2003	
15/12/2000		28/06/2001		18/05/2002		01/01/2003		07/08/2004	
शुक्र	23/06/1999	सूर्य	25/12/2000	चंद्र	25/07/2001	मंगल	01/06/2002	राहु	29/03/2003
सूर्य	25/07/1999	चंद्र	10/01/2001	मंगल	13/08/2001	राहु	05/07/2002	गुरु	15/06/2003
चंद्र	17/09/1999	मंगल	21/01/2001	राहु	30/09/2001	गुरु	04/08/2002	शनि	16/09/2003
मंगल	25/10/1999	राहु	20/02/2001	गुरु	13/11/2001	शनि	09/09/2002	बुध	08/12/2003
राहु	31/01/2000	गुरु	18/03/2001	शनि	03/01/2002	बुध	11/10/2002	केतु	11/01/2004
गुरु	26/04/2000	शनि	17/04/2001	बुध	18/02/2002	केतु	25/10/2002	शुक्र	17/04/2004
शनि	07/08/2000	बुध	15/05/2001	केतु	09/03/2002	शुक्र	01/12/2002	सूर्य	16/05/2004
बुध	07/11/2000	केतु	26/05/2001	शुक्र	02/05/2002	सूर्य	13/12/2002	चंद्र	04/07/2004
केतु	15/12/2000	शुक्र	28/06/2001	सूर्य	18/05/2002	चंद्र	01/01/2003	मंगल	07/08/2004

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
07/08/2004		10/08/2006		26/05/2008		20/02/2009		02/04/2011	
10/08/2006		26/05/2008		20/02/2009		02/04/2011		19/11/2011	
शनि	01/12/2004	बुध	10/11/2006	केतु	11/06/2008	शुक्र	28/06/2009	सूर्य	14/04/2011
बुध	15/03/2005	केतु	19/12/2006	शुक्र	26/07/2008	सूर्य	06/08/2009	चंद्र	03/05/2011
केतु	27/04/2005	शुक्र	07/04/2007	सूर्य	08/08/2008	चंद्र	09/10/2009	मंगल	16/05/2011
शुक्र	27/08/2005	सूर्य	10/05/2007	चंद्र	31/08/2008	मंगल	23/11/2009	राहु	20/06/2011
सूर्य	02/10/2005	चंद्र	03/07/2007	मंगल	16/09/2008	राहु	19/03/2010	गुरु	21/07/2011
चंद्र	02/12/2005	मंगल	11/08/2007	राहु	26/10/2008	गुरु	30/06/2010	शनि	27/08/2011
मंगल	14/01/2006	राहु	17/11/2007	गुरु	01/12/2008	शनि	30/10/2010	बुध	28/09/2011
राहु	04/05/2006	गुरु	12/02/2008	शनि	13/01/2009	बुध	16/02/2011	केतु	12/10/2011
गुरु	10/08/2006	शनि	26/05/2008	बुध	20/02/2009	केतु	02/04/2011	शुक्र	19/11/2011

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
19/11/2011		09/12/2012		05/09/2013		31/07/2015		08/04/2017	
09/12/2012		05/09/2013		31/07/2015		08/04/2017		15/11/2018	
चंद्र	21/12/2011	मंगल	25/12/2012	राहु	18/12/2013	गुरु	21/10/2015	बुध	30/06/2017
मंगल	13/01/2012	राहु	03/02/2013	गुरु	20/03/2014	शनि	27/01/2016	केतु	03/08/2017
राहु	11/03/2012	गुरु	11/03/2013	शनि	08/07/2014	बुध	23/04/2016	शुक्र	09/11/2017
गुरु	01/05/2012	शनि	23/04/2013	बुध	15/10/2014	केतु	29/05/2016	सूर्य	08/12/2017
शनि	01/07/2012	बुध	31/05/2013	केतु	24/11/2014	शुक्र	09/09/2016	चंद्र	26/01/2018
बुध	25/08/2012	केतु	16/06/2013	शुक्र	20/03/2015	सूर्य	10/10/2016	मंगल	01/03/2018
केतु	16/09/2012	शुक्र	31/07/2013	सूर्य	23/04/2015	चंद्र	30/11/2016	राहु	28/05/2018
शुक्र	20/11/2012	सूर्य	13/08/2013	चंद्र	20/06/2015	मंगल	05/01/2017	गुरु	14/08/2018
सूर्य	09/12/2012	चंद्र	05/09/2013	मंगल	31/07/2015	राहु	08/04/2017	शनि	15/11/2018

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
15/11/2018		15/07/2019		03/06/2021		27/12/2021		07/12/2022	
15/07/2019		03/06/2021		27/12/2021		07/12/2022		06/08/2023	
केतु	29/11/2018	शुक्र	06/11/2019	सूर्य	14/06/2021	चंद्र	25/01/2022	मंगल	21/12/2022
शुक्र	08/01/2019	सूर्य	11/12/2019	चंद्र	01/07/2021	मंगल	14/02/2022	राहु	27/01/2023
सूर्य	20/01/2019	चंद्र	06/02/2020	मंगल	13/07/2021	राहु	07/04/2022	गुरु	28/02/2023
चंद्र	10/02/2019	मंगल	18/03/2020	राहु	13/08/2021	गुरु	23/05/2022	शनि	07/04/2023
मंगल	24/02/2019	राहु	29/06/2020	गुरु	10/09/2021	शनि	17/07/2022	बुध	11/05/2023
राहु	01/04/2019	गुरु	29/09/2020	शनि	13/10/2021	बुध	03/09/2022	केतु	25/05/2023
गुरु	03/05/2019	शनि	16/01/2021	बुध	11/11/2021	केतु	24/09/2022	शुक्र	05/07/2023
शनि	10/06/2019	बुध	24/04/2021	केतु	23/11/2021	शुक्र	20/11/2022	सूर्य	17/07/2023
बुध	15/07/2019	केतु	03/06/2021	शुक्र	27/12/2021	सूर्य	07/12/2022	चंद्र	06/08/2023

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
06/08/2023		18/04/2025		22/10/2026		07/08/2028		15/11/2028	
18/04/2025		22/10/2026		07/08/2028		15/11/2028		26/08/2029	
राहु	07/11/2023	गुरु	30/06/2025	शनि	02/02/2027	केतु	13/08/2028	शुक्र	01/01/2029
गुरु	29/01/2024	शनि	26/09/2025	बुध	06/05/2027	शुक्र	29/08/2028	सूर्य	15/01/2029
शनि	06/05/2024	बुध	13/12/2025	केतु	14/06/2027	सूर्य	03/09/2028	चंद्र	08/02/2029
बुध	02/08/2024	केतु	14/01/2026	शुक्र	01/10/2027	चंद्र	12/09/2028	मंगल	24/02/2029
केतु	07/09/2024	शुक्र	16/04/2026	सूर्य	03/11/2027	मंगल	18/09/2028	राहु	08/04/2029
शुक्र	20/12/2024	सूर्य	14/05/2026	चंद्र	27/12/2027	राहु	02/10/2028	गुरु	16/05/2029
सूर्य	20/01/2025	चंद्र	29/06/2026	मंगल	03/02/2028	गुरु	16/10/2028	शनि	30/06/2029
चंद्र	13/03/2025	मंगल	31/07/2026	राहु	12/05/2028	शनि	31/10/2028	बुध	09/08/2029
मंगल	18/04/2025	राहु	22/10/2026	गुरु	07/08/2028	बुध	15/11/2028	केतु	26/08/2029

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
26/08/2029		19/11/2029		10/04/2030		18/07/2030		31/03/2031	
19/11/2029		10/04/2030		18/07/2030		31/03/2031		13/11/2031	
सूर्य	30/08/2029	चंद्र	01/12/2029	मंगल	16/04/2030	राहु	26/08/2030	गुरु	30/04/2031
चंद्र	06/09/2029	मंगल	09/12/2029	राहु	01/05/2030	गुरु	29/09/2030	शनि	05/06/2031
मंगल	11/09/2029	राहु	30/12/2029	गुरु	14/05/2030	शनि	08/11/2030	बुध	07/07/2031
राहु	24/09/2029	गुरु	18/01/2030	शनि	30/05/2030	बुध	14/12/2030	केतु	21/07/2031
गुरु	05/10/2029	शनि	10/02/2030	बुध	13/06/2030	केतु	29/12/2030	शुक्र	28/08/2031
शनि	19/10/2029	बुध	02/03/2030	केतु	18/06/2030	शुक्र	10/02/2031	सूर्य	08/09/2031
बुध	31/10/2029	केतु	10/03/2030	शुक्र	05/07/2030	सूर्य	23/02/2031	चंद्र	27/09/2031
केतु	05/11/2029	शुक्र	03/04/2030	सूर्य	10/07/2030	चंद्र	16/03/2031	मंगल	10/10/2031
शुक्र	19/11/2029	सूर्य	10/04/2030	चंद्र	18/07/2030	मंगल	31/03/2031	राहु	13/11/2031

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
13/11/2031		09/08/2032		08/04/2033		28/06/2035		27/02/2036	
09/08/2032		08/04/2033		28/06/2035		27/02/2036		08/04/2037	
शनि	26/12/2031	बुध	12/09/2032	शुक्र	21/08/2033	सूर्य	10/07/2035	चंद्र	01/04/2036
बुध	02/02/2032	केतु	26/09/2032	सूर्य	30/09/2033	चंद्र	31/07/2035	मंगल	24/04/2036
केतु	18/02/2032	शुक्र	06/11/2032	चंद्र	07/12/2033	मंगल	14/08/2035	राहु	24/06/2036
शुक्र	03/04/2032	सूर्य	18/11/2032	मंगल	23/01/2034	राहु	19/09/2035	गुरु	17/08/2036
सूर्य	16/04/2032	चंद्र	08/12/2032	राहु	25/05/2034	गुरु	22/10/2035	शनि	21/10/2036
चंद्र	09/05/2032	मंगल	22/12/2032	गुरु	10/09/2034	शनि	29/11/2035	बुध	17/12/2036
मंगल	25/05/2032	राहु	27/01/2033	शनि	17/01/2035	बुध	03/01/2036	केतु	10/01/2037
राहु	04/07/2032	गुरु	28/02/2033	बुध	12/05/2035	केतु	17/01/2036	शुक्र	18/03/2037
गुरु	09/08/2032	शनि	08/04/2033	केतु	28/06/2035	शुक्र	27/02/2036	सूर्य	08/04/2037

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
08/04/2037		17/01/2038		17/01/2040		28/10/2041		08/12/2043	
17/01/2038		17/01/2040		28/10/2041		08/12/2043		28/10/2045	
मंगल	24/04/2037	राहु	06/05/2038	गुरु	13/04/2040	शनि	27/02/2042	बुध	14/03/2044
राहु	06/06/2037	गुरु	12/08/2038	शनि	25/07/2040	बुध	16/06/2042	केतु	24/04/2044
गुरु	14/07/2037	शनि	05/12/2038	बुध	25/10/2040	केतु	31/07/2042	शुक्र	17/08/2044
शनि	28/08/2037	बुध	19/03/2039	केतु	01/12/2040	शुक्र	06/12/2042	सूर्य	20/09/2044
बुध	07/10/2037	केतु	30/04/2039	शुक्र	20/03/2041	सूर्य	14/01/2043	चंद्र	17/11/2044
केतु	23/10/2037	शुक्र	30/08/2039	सूर्य	21/04/2041	चंद्र	19/03/2043	मंगल	27/12/2044
शुक्र	10/12/2037	सूर्य	06/10/2039	चंद्र	14/06/2041	मंगल	03/05/2043	राहु	09/04/2045
सूर्य	24/12/2037	चंद्र	06/12/2039	मंगल	22/07/2041	राहु	27/08/2043	गुरु	10/07/2045
चंद्र	17/01/2038	मंगल	17/01/2040	राहु	28/10/2041	गुरु	08/12/2043	शनि	28/10/2045

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
28/10/2045		08/08/2046		20/10/2046		18/02/2047		15/05/2047	
08/08/2046		20/10/2046		18/02/2047		15/05/2047		20/12/2047	
केतु	13/11/2045	सूर्य	11/08/2046	चंद्र	30/10/2046	मंगल	23/02/2047	राहु	17/06/2047
शुक्र	30/12/2045	चंद्र	17/08/2046	मंगल	06/11/2046	राहु	08/03/2047	गुरु	16/07/2047
सूर्य	14/01/2046	मंगल	22/08/2046	राहु	24/11/2046	गुरु	20/03/2047	शनि	19/08/2047
चंद्र	06/02/2046	राहु	02/09/2046	गुरु	10/12/2046	शनि	02/04/2047	बुध	19/09/2047
मंगल	23/02/2046	गुरु	11/09/2046	शनि	30/12/2046	बुध	14/04/2047	केतु	02/10/2047
राहु	07/04/2046	शनि	23/09/2046	बुध	16/01/2047	केतु	19/04/2047	शुक्र	08/11/2047
गुरु	14/05/2046	बुध	03/10/2046	केतु	23/01/2047	शुक्र	03/05/2047	सूर्य	19/11/2047
शनि	28/06/2046	केतु	07/10/2046	शुक्र	12/02/2047	सूर्य	08/05/2047	चंद्र	07/12/2047
बुध	08/08/2046	शुक्र	20/10/2046	सूर्य	18/02/2047	चंद्र	15/05/2047	मंगल	20/12/2047

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 5 वर्ष 5 मास 15 दिन

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
10/07/1971		24/12/1976		24/12/1988		24/12/2009		24/12/2015	
24/12/1976		24/12/1988		24/12/2009		24/12/2015		24/12/2030	
	00/00/0000	राहु	25/04/1978	शुक्र	23/01/1993	सूर्य	25/04/2010	चंद्र	23/01/2018
	00/00/0000	शुक्र	24/08/1980	सूर्य	25/03/1994	चंद्र	23/02/2011	मंगल	05/03/2019
	00/00/0000	सूर्य	24/04/1981	चंद्र	23/02/1997	मंगल	04/08/2011	बुध	15/07/2021
	00/00/0000	चंद्र	24/12/1982	मंगल	14/09/1998	बुध	14/07/2012	शनि	04/12/2022
	10/07/1971	मंगल	14/11/1983	बुध	03/01/2002	शनि	02/02/2013	गुरु	25/07/2025
मंगल	25/03/1972	बुध	04/10/1985	शनि	14/12/2003	गुरु	23/02/2014	राहु	25/03/2027
बुध	22/03/1975	शनि	14/11/1986	गुरु	25/08/2007	राहु	24/10/2014	शुक्र	23/02/2030
शनि	24/12/1976	गुरु	24/12/1988	राहु	24/12/2009	शुक्र	24/12/2015	सूर्य	24/12/2030

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
24/12/2030		24/12/2038		24/12/2055		24/12/2065	
24/12/2038		24/12/2055		24/12/2065		00/00/0000	
मंगल	29/07/2031	बुध	28/08/2041	शनि	27/11/2056	गुरु	28/04/2069
बुध	31/10/2032	शनि	25/03/2043	गुरु	31/08/2058	राहु	08/06/2071
शनि	28/07/2033	गुरु	22/03/2046	राहु	11/10/2059	शुक्र	16/02/2075
गुरु	24/12/2034	राहु	10/02/2048	शुक्र	20/09/2061	सूर्य	08/03/2076
राहु	14/11/2035	शुक्र	01/06/2051	सूर्य	11/04/2062	चंद्र	28/10/2078
शुक्र	04/06/2037	सूर्य	11/05/2052	चंद्र	31/08/2063	मंगल	10/07/2079
सूर्य	13/11/2037	चंद्र	20/09/2054	मंगल	28/05/2064		00/00/0000
चंद्र	24/12/2038	मंगल	24/12/2055	बुध	24/12/2065		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
10/07/1971		25/03/1972		22/03/1975		24/12/1976		25/04/1978	
25/03/1972		22/03/1975		24/12/1976		25/04/1978		24/08/1980	
	00/00/0000	बुध	13/09/1972	शनि	21/05/1975	राहु	16/02/1977	शुक्र	07/10/1978
	00/00/0000	शनि	23/12/1972	गुरु	11/09/1975	शुक्र	21/05/1977	सूर्य	24/11/1978
	10/07/1971	गुरु	03/07/1973	राहु	21/11/1975	सूर्य	18/06/1977	चंद्र	22/03/1979
गुरु	12/07/1971	राहु	01/11/1973	शुक्र	25/03/1976	चंद्र	24/08/1977	मंगल	24/05/1979
राहु	07/09/1971	शुक्र	02/06/1974	सूर्य	30/04/1976	मंगल	29/09/1977	बुध	05/10/1979
शुक्र	16/12/1971	सूर्य	01/08/1974	चंद्र	28/07/1976	बुध	15/12/1977	शनि	23/12/1979
सूर्य	13/01/1972	चंद्र	31/12/1974	मंगल	14/09/1976	शनि	29/01/1978	गुरु	21/05/1980
चंद्र	25/03/1972	मंगल	22/03/1975	बुध	24/12/1976	गुरु	25/04/1978	राहु	24/08/1980

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
24/08/1980		24/04/1981		24/12/1982		14/11/1983		04/10/1985	
24/04/1981		24/12/1982		14/11/1983		04/10/1985		14/11/1986	
सूर्य	06/09/1980	चंद्र	18/07/1981	मंगल	17/01/1983	बुध	01/03/1984	शनि	10/11/1985
चंद्र	10/10/1980	मंगल	01/09/1981	बुध	09/03/1983	शनि	04/05/1984	गुरु	21/01/1986
मंगल	28/10/1980	बुध	06/12/1981	शनि	08/04/1983	गुरु	03/09/1984	राहु	07/03/1986
बुध	06/12/1980	शनि	31/01/1982	गुरु	04/06/1983	राहु	18/11/1984	शुक्र	25/05/1986
शनि	28/12/1980	गुरु	18/05/1982	राहु	11/07/1983	शुक्र	01/04/1985	सूर्य	16/06/1986
गुरु	09/02/1981	राहु	25/07/1982	शुक्र	12/09/1983	सूर्य	10/05/1985	चंद्र	12/08/1986
राहु	08/03/1981	शुक्र	20/11/1982	सूर्य	30/09/1983	चंद्र	14/08/1985	मंगल	11/09/1986
शुक्र	24/04/1981	सूर्य	24/12/1982	चंद्र	14/11/1983	मंगल	04/10/1985	बुध	14/11/1986

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
14/11/1986		24/12/1988		23/01/1993		25/03/1994		23/02/1997	
24/12/1988		23/01/1993		25/03/1994		23/02/1997		14/09/1998	
गुरु	29/03/1987	शुक्र	10/10/1989	सूर्य	16/02/1993	चंद्र	20/08/1994	मंगल	06/04/1997
राहु	23/06/1987	सूर्य	01/01/1990	चंद्र	16/04/1993	मंगल	07/11/1994	बुध	04/07/1997
शुक्र	20/11/1987	चंद्र	27/07/1990	मंगल	18/05/1993	बुध	24/04/1995	शनि	26/08/1997
सूर्य	02/01/1988	मंगल	14/11/1990	बुध	24/07/1993	शनि	31/07/1995	गुरु	04/12/1997
चंद्र	18/04/1988	बुध	07/07/1991	शनि	01/09/1993	गुरु	04/02/1996	राहु	05/02/1998
मंगल	14/06/1988	शनि	22/11/1991	गुरु	15/11/1993	राहु	01/06/1996	शुक्र	26/05/1998
बुध	13/10/1988	गुरु	10/08/1992	राहु	01/01/1994	शुक्र	25/12/1996	सूर्य	27/06/1998
शनि	24/12/1988	राहु	23/01/1993	शुक्र	25/03/1994	सूर्य	23/02/1997	चंद्र	14/09/1998

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
14/09/1998		03/01/2002		14/12/2003		25/08/2007		24/12/2009	
03/01/2002		14/12/2003		25/08/2007		24/12/2009		25/04/2010	
बुध	23/03/1999	शनि	10/03/2002	गुरु	08/08/2004	राहु	27/11/2007	सूर्य	31/12/2009
शनि	13/07/1999	गुरु	13/07/2002	राहु	05/01/2005	शुक्र	11/05/2008	चंद्र	17/01/2010
गुरु	10/02/2000	राहु	30/09/2002	शुक्र	24/09/2005	सूर्य	27/06/2008	मंगल	26/01/2010
राहु	23/06/2000	शुक्र	15/02/2003	सूर्य	08/12/2005	चंद्र	24/10/2008	बुध	14/02/2010
शुक्र	13/02/2001	सूर्य	26/03/2003	चंद्र	13/06/2006	मंगल	26/12/2008	शनि	25/02/2010
सूर्य	21/04/2001	चंद्र	03/07/2003	मंगल	21/09/2006	बुध	09/05/2009	गुरु	18/03/2010
चंद्र	06/10/2001	मंगल	24/08/2003	बुध	22/04/2007	शनि	27/07/2009	राहु	01/04/2010
मंगल	03/01/2002	बुध	14/12/2003	शनि	25/08/2007	गुरु	24/12/2009	शुक्र	25/04/2010

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु	
25/04/2010		23/02/2011		04/08/2011		14/07/2012		02/02/2013	
23/02/2011		04/08/2011		14/07/2012		02/02/2013		23/02/2014	
चंद्र	06/06/2010	मंगल	07/03/2011	बुध	28/09/2011	शनि	02/08/2012	गुरु	11/04/2013
मंगल	28/06/2010	बुध	02/04/2011	शनि	30/10/2011	गुरु	07/09/2012	राहु	24/05/2013
बुध	15/08/2010	शनि	17/04/2011	गुरु	29/12/2011	राहु	29/09/2012	शुक्र	07/08/2013
शनि	13/09/2010	गुरु	15/05/2011	राहु	06/02/2012	शुक्र	08/11/2012	सूर्य	28/08/2013
गुरु	05/11/2010	राहु	02/06/2011	शुक्र	13/04/2012	सूर्य	19/11/2012	चंद्र	21/10/2013
राहु	09/12/2010	शुक्र	04/07/2011	सूर्य	02/05/2012	चंद्र	17/12/2012	मंगल	18/11/2013
शुक्र	06/02/2011	सूर्य	13/07/2011	चंद्र	19/06/2012	मंगल	01/01/2013	बुध	18/01/2014
सूर्य	23/02/2011	चंद्र	04/08/2011	मंगल	14/07/2012	बुध	02/02/2013	शनि	23/02/2014

सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध	
23/02/2014		24/10/2014		24/12/2015		23/01/2018		05/03/2019	
24/10/2014		24/12/2015		23/01/2018		05/03/2019		15/07/2021	
राहु	22/03/2014	शुक्र	15/01/2015	चंद्र	08/04/2016	मंगल	22/02/2018	बुध	19/07/2019
शुक्र	08/05/2014	सूर्य	08/02/2015	मंगल	03/06/2016	बुध	27/04/2018	शनि	07/10/2019
सूर्य	22/05/2014	चंद्र	08/04/2015	बुध	01/10/2016	शनि	04/06/2018	गुरु	06/03/2020
चंद्र	25/06/2014	मंगल	10/05/2015	शनि	11/12/2016	गुरु	14/08/2018	राहु	10/06/2020
मंगल	13/07/2014	बुध	16/07/2015	गुरु	24/04/2017	राहु	28/09/2018	शुक्र	25/11/2020
बुध	20/08/2014	शनि	24/08/2015	राहु	17/07/2017	शुक्र	16/12/2018	सूर्य	12/01/2021
शनि	11/09/2014	गुरु	07/11/2015	शुक्र	12/12/2017	सूर्य	08/01/2019	चंद्र	12/05/2021
गुरु	24/10/2014	राहु	24/12/2015	सूर्य	23/01/2018	चंद्र	05/03/2019	मंगल	15/07/2021

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
15/07/2021		04/12/2022		25/07/2025		25/03/2027		23/02/2030	
04/12/2022		25/07/2025		25/03/2027		23/02/2030		24/12/2030	
शनि	31/08/2021	गुरु	22/05/2023	राहु	30/09/2025	शुक्र	19/10/2027	सूर्य	12/03/2030
गुरु	28/11/2021	राहु	07/09/2023	शुक्र	27/01/2026	सूर्य	17/12/2027	चंद्र	23/04/2030
राहु	23/01/2022	शुक्र	12/03/2024	सूर्य	02/03/2026	चंद्र	13/05/2028	मंगल	16/05/2030
शुक्र	02/05/2022	सूर्य	04/05/2024	चंद्र	25/05/2026	मंगल	31/07/2028	बुध	02/07/2030
सूर्य	30/05/2022	चंद्र	15/09/2024	मंगल	09/07/2026	बुध	14/01/2029	शनि	31/07/2030
चंद्र	08/08/2022	मंगल	26/11/2024	बुध	13/10/2026	शनि	23/04/2029	गुरु	22/09/2030
मंगल	15/09/2022	बुध	26/04/2025	शनि	08/12/2026	गुरु	27/10/2029	राहु	26/10/2030
बुध	04/12/2022	शनि	25/07/2025	गुरु	25/03/2027	राहु	23/02/2030	शुक्र	24/12/2030

मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु	
24/12/2030		29/07/2031		31/10/2032		28/07/2033		24/12/2034	
29/07/2031		31/10/2032		28/07/2033		24/12/2034		14/11/2035	
मंगल	09/01/2031	बुध	09/10/2031	शनि	25/11/2032	गुरु	27/10/2033	राहु	29/01/2035
बुध	12/02/2031	शनि	21/11/2031	गुरु	11/01/2033	राहु	23/12/2033	शुक्र	02/04/2035
शनि	04/03/2031	गुरु	10/02/2032	राहु	10/02/2033	शुक्र	02/04/2034	सूर्य	20/04/2035
गुरु	11/04/2031	राहु	01/04/2032	शुक्र	04/04/2033	सूर्य	30/04/2034	चंद्र	04/06/2035
राहु	05/05/2031	शुक्र	29/06/2032	सूर्य	19/04/2033	चंद्र	11/07/2034	मंगल	29/06/2035
शुक्र	17/06/2031	सूर्य	25/07/2032	चंद्र	26/05/2033	मंगल	18/08/2034	बुध	19/08/2035
सूर्य	29/06/2031	चंद्र	26/09/2032	मंगल	16/06/2033	बुध	07/11/2034	शनि	18/09/2035
चंद्र	29/07/2031	मंगल	31/10/2032	बुध	28/07/2033	शनि	24/12/2034	गुरु	14/11/2035

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि	
14/11/2035		04/06/2037		13/11/2037		24/12/2038		28/08/2041	
04/06/2037		13/11/2037		24/12/2038		28/08/2041		25/03/2043	
शुक्र	03/03/2036	सूर्य	13/06/2037	चंद्र	09/01/2038	बुध	27/05/2039	शनि	20/10/2041
सूर्य	04/04/2036	चंद्र	06/07/2037	मंगल	08/02/2038	शनि	26/08/2039	गुरु	29/01/2042
चंद्र	22/06/2036	मंगल	18/07/2037	बुध	13/04/2038	गुरु	13/02/2040	राहु	03/04/2042
मंगल	03/08/2036	बुध	12/08/2037	शनि	20/05/2038	राहु	01/06/2040	शुक्र	24/07/2042
बुध	31/10/2036	शनि	27/08/2037	गुरु	31/07/2038	शुक्र	08/12/2040	सूर्य	25/08/2042
शनि	23/12/2036	गुरु	25/09/2037	राहु	14/09/2038	सूर्य	31/01/2041	चंद्र	12/11/2042
गुरु	02/04/2037	राहु	13/10/2037	शुक्र	02/12/2038	चंद्र	16/06/2041	मंगल	25/12/2042
राहु	04/06/2037	शुक्र	13/11/2037	सूर्य	24/12/2038	मंगल	28/08/2041	बुध	25/03/2043

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
25/03/2043		22/03/2046		10/02/2048		01/06/2051		11/05/2052	
22/03/2046		10/02/2048		01/06/2051		11/05/2052		20/09/2054	
गुरु	04/10/2043	राहु	06/06/2046	शुक्र	02/10/2048	सूर्य	20/06/2051	चंद्र	08/09/2052
राहु	02/02/2044	शुक्र	19/10/2046	सूर्य	08/12/2048	चंद्र	07/08/2051	मंगल	11/11/2052
शुक्र	01/09/2044	सूर्य	26/11/2046	चंद्र	24/05/2049	मंगल	02/09/2051	बुध	26/03/2053
सूर्य	01/11/2044	चंद्र	02/03/2047	मंगल	22/08/2049	बुध	26/10/2051	शनि	14/06/2053
चंद्र	02/04/2045	मंगल	22/04/2047	बुध	28/02/2050	शनि	27/11/2051	गुरु	13/11/2053
मंगल	22/06/2045	बुध	09/08/2047	शनि	20/06/2050	गुरु	27/01/2052	राहु	17/02/2054
बुध	11/12/2045	शनि	11/10/2047	गुरु	18/01/2051	राहु	05/03/2052	शुक्र	04/08/2054
शनि	22/03/2046	गुरु	10/02/2048	राहु	01/06/2051	शुक्र	11/05/2052	सूर्य	20/09/2054

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
20/09/2054		24/12/2055		27/11/2056		31/08/2058		11/10/2059	
24/12/2055		27/11/2056		31/08/2058		11/10/2059		20/09/2061	
मंगल	25/10/2054	शनि	25/01/2056	गुरु	20/03/2057	राहु	15/10/2058	शुक्र	26/02/2060
बुध	05/01/2055	गुरु	24/03/2056	राहु	30/05/2057	शुक्र	02/01/2059	सूर्य	06/04/2060
शनि	17/02/2055	राहु	01/05/2056	शुक्र	02/10/2057	सूर्य	25/01/2059	चंद्र	13/07/2060
गुरु	08/05/2055	शुक्र	06/07/2056	सूर्य	07/11/2057	चंद्र	22/03/2059	मंगल	04/09/2060
राहु	29/06/2055	सूर्य	24/07/2056	चंद्र	04/02/2058	मंगल	21/04/2059	बुध	25/12/2060
शुक्र	26/09/2055	चंद्र	09/09/2056	मंगल	24/03/2058	बुध	24/06/2059	शनि	28/02/2061
सूर्य	22/10/2055	मंगल	04/10/2056	बुध	03/07/2058	शनि	01/08/2059	गुरु	03/07/2061
चंद्र	24/12/2055	बुध	27/11/2056	शनि	31/08/2058	गुरु	11/10/2059	राहु	20/09/2061

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु	
20/09/2061		11/04/2062		31/08/2063		28/05/2064		24/12/2065	
11/04/2062		31/08/2063		28/05/2064		24/12/2065		28/04/2069	
सूर्य	01/10/2061	चंद्र	21/06/2062	मंगल	20/09/2063	बुध	26/08/2064	गुरु	27/07/2066
चंद्र	30/10/2061	मंगल	28/07/2062	बुध	02/11/2063	शनि	19/10/2064	राहु	09/12/2066
मंगल	14/11/2061	बुध	16/10/2062	शनि	27/11/2063	गुरु	28/01/2065	शुक्र	04/08/2067
बुध	16/12/2061	शनि	02/12/2062	गुरु	14/01/2064	राहु	02/04/2065	सूर्य	11/10/2067
शनि	03/01/2062	गुरु	01/03/2063	राहु	13/02/2064	शुक्र	23/07/2065	चंद्र	28/03/2068
गुरु	08/02/2062	राहु	27/04/2063	शुक्र	05/04/2064	सूर्य	23/08/2065	मंगल	27/06/2068
राहु	03/03/2062	शुक्र	03/08/2063	सूर्य	20/04/2064	चंद्र	11/11/2065	बुध	05/01/2069
शुक्र	11/04/2062	सूर्य	31/08/2063	चंद्र	28/05/2064	मंगल	24/12/2065	शनि	28/04/2069

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : मंगला 0 वर्ष 10 मास 10 दिन

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
10/07/1971		19/05/1972		20/05/1974		20/05/1977		20/05/1981	
19/05/1972		20/05/1974		20/05/1977		20/05/1981		20/05/1986	
	00/00/0000	पिंग	29/06/1972	धांय	19/08/1974	भ्राम	29/10/1977	भद्रि	28/01/1982
	10/07/1971	धांय	29/08/1972	भ्राम	19/12/1974	भद्रि	20/05/1978	उल्क	29/11/1982
धांय	20/07/1971	भ्राम	18/11/1972	भद्रि	20/05/1975	उल्क	18/01/1979	सिद्ध	19/11/1983
भ्राम	30/08/1971	भद्रि	28/02/1973	उल्क	19/11/1975	सिद्ध	30/10/1979	संक	29/12/1984
भद्रि	19/10/1971	उल्क	29/06/1973	सिद्ध	19/06/1976	संक	18/09/1980	मंग	17/02/1985
उल्क	19/12/1971	सिद्ध	18/11/1973	संक	17/02/1977	मंग	29/10/1980	पिंग	30/05/1985
सिद्ध	28/02/1972	संक	30/04/1974	मंग	20/03/1977	पिंग	18/01/1981	धांय	29/10/1985
संक	19/05/1972	मंग	20/05/1974	पिंग	20/05/1977	धांय	20/05/1981	भ्राम	20/05/1986

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
20/05/1986		19/05/1992		20/05/1999		20/05/2007		19/05/2008	
19/05/1992		20/05/1999		20/05/2007		19/05/2008		20/05/2010	
उल्क	20/05/1987	सिद्ध	29/09/1993	संक	28/02/2001	मंग	30/05/2007	पिंग	29/06/2008
सिद्ध	19/07/1988	संक	20/04/1995	मंग	20/05/2001	पिंग	20/06/2007	धांय	29/08/2008
संक	18/11/1989	मंग	30/06/1995	पिंग	29/10/2001	धांय	20/07/2007	भ्राम	18/11/2008
मंग	18/01/1990	पिंग	19/11/1995	धांय	30/06/2002	भ्राम	30/08/2007	भद्रि	28/02/2009
पिंग	20/05/1990	धांय	19/06/1996	भ्राम	20/05/2003	भद्रि	19/10/2007	उल्क	29/06/2009
धांय	19/11/1990	भ्राम	30/03/1997	भद्रि	29/06/2004	उल्क	19/12/2007	सिद्ध	18/11/2009
भ्राम	20/07/1991	भद्रि	20/03/1998	उल्क	29/10/2005	सिद्ध	28/02/2008	संक	30/04/2010
भद्रि	19/05/1992	उल्क	20/05/1999	सिद्ध	20/05/2007	संक	19/05/2008	मंग	20/05/2010

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
20/05/2010		20/05/2013		20/05/2017		20/05/2022		19/05/2028	
20/05/2013		20/05/2017		20/05/2022		19/05/2028		20/05/2035	
धांय	19/08/2010	भ्राम	29/10/2013	भद्रि	28/01/2018	उल्क	20/05/2023	सिद्ध	29/09/2029
भ्राम	19/12/2010	भद्रि	20/05/2014	उल्क	29/11/2018	सिद्ध	19/07/2024	संक	20/04/2031
भद्रि	20/05/2011	उल्क	18/01/2015	सिद्ध	19/11/2019	संक	18/11/2025	मंग	30/06/2031
उल्क	19/11/2011	सिद्ध	30/10/2015	संक	29/12/2020	मंग	18/01/2026	पिंग	19/11/2031
सिद्ध	19/06/2012	संक	18/09/2016	मंग	17/02/2021	पिंग	20/05/2026	धांय	19/06/2032
संक	17/02/2013	मंग	29/10/2016	पिंग	30/05/2021	धांय	19/11/2026	भ्राम	30/03/2033
मंग	20/03/2013	पिंग	18/01/2017	धांय	29/10/2021	भ्राम	20/07/2027	भद्रि	20/03/2034
पिंग	20/05/2013	धांय	20/05/2017	भ्राम	20/05/2022	भद्रि	19/05/2028	उल्क	20/05/2035

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
20/05/2035		20/05/2043		19/05/2044		20/05/2046		20/05/2049	
20/05/2043		19/05/2044		20/05/2046		20/05/2049		20/05/2053	
संक	28/02/2037	मंग	30/05/2043	पिंग	29/06/2044	धांय	19/08/2046	भ्राम	29/10/2049
मंग	20/05/2037	पिंग	20/06/2043	धांय	29/08/2044	भ्राम	19/12/2046	भद्रि	20/05/2050
पिंग	29/10/2037	धांय	20/07/2043	भ्राम	18/11/2044	भद्रि	20/05/2047	उल्क	18/01/2051
धांय	30/06/2038	भ्राम	30/08/2043	भद्रि	28/02/2045	उल्क	19/11/2047	सिद्ध	30/10/2051
भ्राम	20/05/2039	भद्रि	19/10/2043	उल्क	29/06/2045	सिद्ध	19/06/2048	संक	18/09/2052
भद्रि	29/06/2040	उल्क	19/12/2043	सिद्ध	18/11/2045	संक	17/02/2049	मंग	29/10/2052
उल्क	29/10/2041	सिद्ध	28/02/2044	संक	30/04/2046	मंग	20/03/2049	पिंग	18/01/2053
सिद्ध	20/05/2043	संक	19/05/2044	मंग	20/05/2046	पिंग	20/05/2049	धांय	20/05/2053

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
20/05/2053		20/05/2058		19/05/2064		20/05/2071		20/05/2079	
20/05/2058		19/05/2064		20/05/2071		20/05/2079		00/00/0000	
भद्रि	28/01/2054	उल्क	20/05/2059	सिद्ध	29/09/2065	संक	28/02/2073	मंग	30/05/2079
उल्क	29/11/2054	सिद्ध	19/07/2060	संक	20/04/2067	मंग	20/05/2073	पिंग	20/06/2079
सिद्ध	19/11/2055	संक	18/11/2061	मंग	30/06/2067	पिंग	29/10/2073	धांय	10/07/2079
संक	29/12/2056	मंग	18/01/2062	पिंग	19/11/2067	धांय	30/06/2074		00/00/0000
मंग	17/02/2057	पिंग	20/05/2062	धांय	19/06/2068	भ्राम	20/05/2075		00/00/0000
पिंग	30/05/2057	धांय	19/11/2062	भ्राम	30/03/2069	भद्रि	29/06/2076		00/00/0000
धांय	29/10/2057	भ्राम	20/07/2063	भद्रि	20/03/2070	उल्क	29/10/2077		00/00/0000
भ्राम	20/05/2058	भद्रि	19/05/2064	उल्क	20/05/2071	सिद्ध	20/05/2079		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि	
18/11/2025		18/01/2026		20/05/2026		19/11/2026		20/07/2027	
18/01/2026		20/05/2026		19/11/2026		20/07/2027		19/05/2028	
मंग	20/11/2025	पिंग	25/01/2026	धांय	04/06/2026	भ्राम	16/12/2026	भद्रि	31/08/2027
पिंग	23/11/2025	धांय	04/02/2026	भ्राम	24/06/2026	भद्रि	18/01/2027	उल्क	21/10/2027
धांय	28/11/2025	भ्राम	18/02/2026	भद्रि	20/07/2026	उल्क	28/02/2027	सिद्ध	19/12/2027
भ्राम	05/12/2025	भद्रि	07/03/2026	उल्क	19/08/2026	सिद्ध	16/04/2027	संक	25/02/2028
भद्रि	14/12/2025	उल्क	27/03/2026	सिद्ध	24/09/2026	संक	09/06/2027	मंग	04/03/2028
उल्क	24/12/2025	सिद्ध	20/04/2026	संक	03/11/2026	मंग	16/06/2027	पिंग	21/03/2028
सिद्ध	05/01/2026	संक	17/05/2026	मंग	08/11/2026	पिंग	30/06/2027	धांय	16/04/2028
संक	18/01/2026	मंग	20/05/2026	पिंग	19/11/2026	धांय	20/07/2027	भ्राम	19/05/2028

सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय	
19/05/2028		29/09/2029		20/04/2031		30/06/2031		19/11/2031	
29/09/2029		20/04/2031		30/06/2031		19/11/2031		19/06/2032	
सिद्ध	24/08/2028	संक	02/02/2030	मंग	22/04/2031	पिंग	08/07/2031	धांय	07/12/2031
संक	13/12/2028	मंग	18/02/2030	पिंग	26/04/2031	धांय	19/07/2031	भ्राम	30/12/2031
मंग	26/12/2028	पिंग	21/03/2030	धांय	02/05/2031	भ्राम	04/08/2031	भद्रि	29/01/2032
पिंग	23/01/2029	धांय	08/05/2030	भ्राम	09/05/2031	भद्रि	24/08/2031	उल्क	04/03/2032
धांय	05/03/2029	भ्राम	10/07/2030	भद्रि	19/05/2031	उल्क	17/09/2031	सिद्ध	15/04/2032
भ्राम	30/04/2029	भद्रि	27/09/2030	उल्क	31/05/2031	सिद्ध	14/10/2031	संक	01/06/2032
भद्रि	08/07/2029	उल्क	30/12/2030	सिद्ध	14/06/2031	संक	15/11/2031	मंग	07/06/2032
उल्क	29/09/2029	सिद्ध	20/04/2031	संक	30/06/2031	मंग	19/11/2031	पिंग	19/06/2032

सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग	
19/06/2032		30/03/2033		20/03/2034		20/05/2035		28/02/2037	
30/03/2033		20/03/2034		20/05/2035		28/02/2037		20/05/2037	
भ्राम	20/07/2032	भद्रि	18/05/2033	उल्क	30/05/2034	संक	11/10/2035	मंग	02/03/2037
भद्रि	29/08/2032	उल्क	16/07/2033	सिद्ध	21/08/2034	मंग	30/10/2035	पिंग	06/03/2037
उल्क	15/10/2032	सिद्ध	24/09/2033	संक	24/11/2034	पिंग	05/12/2035	धांय	13/03/2037
सिद्ध	09/12/2032	संक	11/12/2033	मंग	05/12/2034	धांय	28/01/2036	भ्राम	22/03/2037
संक	11/02/2033	मंग	21/12/2033	पिंग	29/12/2034	भ्राम	09/04/2036	भद्रि	02/04/2037
मंग	19/02/2033	पिंग	10/01/2034	धांय	03/02/2035	भद्रि	08/07/2036	उल्क	16/04/2037
पिंग	06/03/2033	धांय	09/02/2034	भ्राम	22/03/2035	उल्क	24/10/2036	सिद्ध	02/05/2037
धांय	30/03/2033	भ्राम	20/03/2034	भद्रि	20/05/2035	सिद्ध	28/02/2037	संक	20/05/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क	
20/05/2037		29/10/2037		30/06/2038		20/05/2039		29/06/2040	
29/10/2037		30/06/2038		20/05/2039		29/06/2040		29/10/2041	
पिंग	29/05/2037	धांय	18/11/2037	भ्राम	05/08/2038	भद्रि	16/07/2039	उल्क	18/09/2040
धांय	11/06/2037	भ्राम	15/12/2037	भद्रि	19/09/2038	उल्क	21/09/2039	सिद्ध	22/12/2040
भ्राम	29/06/2037	भद्रि	18/01/2038	उल्क	12/11/2038	सिद्ध	09/12/2039	संक	09/04/2041
भद्रि	22/07/2037	उल्क	28/02/2038	सिद्ध	14/01/2039	संक	08/03/2040	मंग	23/04/2041
उल्क	18/08/2037	सिद्ध	16/04/2038	संक	27/03/2039	मंग	20/03/2040	पिंग	20/05/2041
सिद्ध	18/09/2037	संक	09/06/2038	मंग	05/04/2039	पिंग	11/04/2040	धांय	29/06/2041
संक	25/10/2037	मंग	16/06/2038	पिंग	23/04/2039	धांय	15/05/2040	भ्राम	22/08/2041
मंग	29/10/2037	पिंग	30/06/2038	धांय	20/05/2039	भ्राम	29/06/2040	भद्रि	29/10/2041

संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम	
29/10/2041		20/05/2043		30/05/2043		20/06/2043		20/07/2043	
20/05/2043		30/05/2043		20/06/2043		20/07/2043		30/08/2043	
सिद्ध	16/02/2042	मंग	20/05/2043	पिंग	31/05/2043	धांय	22/06/2043	भ्राम	25/07/2043
संक	23/06/2042	पिंग	21/05/2043	धांय	02/06/2043	भ्राम	26/06/2043	भद्रि	30/07/2043
मंग	09/07/2042	धांय	22/05/2043	भ्राम	04/06/2043	भद्रि	30/06/2043	उल्क	06/08/2043
पिंग	09/08/2042	भ्राम	23/05/2043	भद्रि	07/06/2043	उल्क	05/07/2043	सिद्ध	14/08/2043
धांय	25/09/2042	भद्रि	24/05/2043	उल्क	11/06/2043	सिद्ध	11/07/2043	संक	23/08/2043
भ्राम	28/11/2042	उल्क	26/05/2043	सिद्ध	15/06/2043	संक	18/07/2043	मंग	24/08/2043
भद्रि	14/02/2043	सिद्ध	28/05/2043	संक	19/06/2043	मंग	18/07/2043	पिंग	26/08/2043
उल्क	20/05/2043	संक	30/05/2043	मंग	20/06/2043	पिंग	20/07/2043	धांय	30/08/2043

मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक		पिंग - पिंग	
30/08/2043		19/10/2043		19/12/2043		28/02/2044		19/05/2044	
19/10/2043		19/12/2043		28/02/2044		19/05/2044		29/06/2044	
भद्रि	06/09/2043	उल्क	30/10/2043	सिद्ध	02/01/2044	संक	17/03/2044	पिंग	22/05/2044
उल्क	14/09/2043	सिद्ध	10/11/2043	संक	18/01/2044	मंग	20/03/2044	धांय	25/05/2044
सिद्ध	24/09/2043	संक	24/11/2043	मंग	20/01/2044	पिंग	24/03/2044	भ्राम	30/05/2044
संक	05/10/2043	मंग	26/11/2043	पिंग	24/01/2044	धांय	31/03/2044	भद्रि	04/06/2044
मंग	07/10/2043	पिंग	29/11/2043	धांय	30/01/2044	भ्राम	09/04/2044	उल्क	11/06/2044
पिंग	10/10/2043	धांय	04/12/2043	भ्राम	07/02/2044	भद्रि	20/04/2044	सिद्ध	19/06/2044
धांय	14/10/2043	भ्राम	11/12/2043	भद्रि	16/02/2044	उल्क	04/05/2044	संक	28/06/2044
भ्राम	19/10/2043	भद्रि	19/12/2043	उल्क	28/02/2044	सिद्ध	19/05/2044	मंग	29/06/2044

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृष 3 वर्ष 6 मास 13 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : श्रवण - 1 अपसव्य
देह : कर्क जीव : धनु

वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
10/07/1971		21/01/1975		21/01/1984		21/01/1989		21/01/2010	
21/01/1975		21/01/1984		21/01/1989		21/01/2010		21/01/2020	
	00/00/0000	मिथु	31/12/1975	सिंह	07/05/1984	कर्क	09/03/1994	धनु	22/03/2011
	00/00/0000	सिंह	09/07/1976	कर्क	27/07/1985	धनु	17/08/1996	मक	08/09/2011
	00/00/0000	कर्क	20/09/1978	धनु	24/02/1986	मक	08/08/1997	कुंभ	24/02/2012
	00/00/0000	धनु	07/10/1979	मक	20/05/1986	कुंभ	31/07/1998	मीन	24/04/2013
	00/00/0000	मक	08/03/1980	कुंभ	13/08/1986	मीन	08/01/2001	मेष	15/02/2014
	10/07/1971	कुंभ	08/08/1980	मीन	13/03/1987	मेष	24/09/2002	वृष	27/12/2015
कुंभ	23/11/1971	मीन	25/08/1981	मेष	09/08/1987	वृष	21/08/2006	मिथु	12/01/2017
मीन	03/10/1973	मेष	20/05/1982	वृष	14/07/1988	मिथु	01/11/2008	सिंह	13/08/2017
मेष	21/01/1975	वृष	21/01/1984	मिथु	21/01/1989	सिंह	21/01/2010	कर्क	21/01/2020

मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष	
21/01/2020		21/01/2024		21/01/2028		21/01/2038		21/01/2045	
21/01/2024		21/01/2028		21/01/2038		21/01/2045		00/00/0000	
मक	29/03/2020	कुंभ	29/03/2024	मीन	21/03/2029	मेष	17/08/2038	वृष	13/01/2048
कुंभ	05/06/2020	मीन	15/09/2024	मेष	12/01/2030	वृष	06/12/2039	मिथु	16/09/2049
मीन	22/11/2020	मेष	12/01/2025	वृष	23/11/2031	मिथु	29/08/2040	सिंह	21/08/2050
मेष	21/03/2021	वृष	11/10/2025	मिथु	09/12/2032	सिंह	25/01/2041	कर्क	18/07/2054
वृष	18/12/2021	मिथु	13/03/2026	सिंह	10/07/2033	कर्क	11/10/2042	धनु	28/05/2056
मिथु	20/05/2022	सिंह	06/06/2026	कर्क	18/12/2035	धनु	05/08/2043	मक	24/02/2057
सिंह	13/08/2022	कर्क	29/05/2027	धनु	15/02/2037	मक	02/12/2043	कुंभ	09/07/2057
कर्क	05/08/2023	धनु	15/11/2027	मक	04/08/2037	कुंभ	29/03/2044		00/00/0000
धनु	21/01/2024	मक	21/01/2028	कुंभ	21/01/2038	मीन	21/01/2045		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - मिथु		कुंभ - सिंह		कुंभ - कर्क		कुंभ - धनु		कुंभ - मक	
11/10/2025		13/03/2026		06/06/2026		29/05/2027		15/11/2027	
13/03/2026		06/06/2026		29/05/2027		15/11/2027		21/01/2028	
मिथु	27/10/2025	सिंह	18/03/2026	कर्क	01/09/2026	धनु	17/06/2027	मक	18/11/2027
सिंह	05/11/2025	कर्क	08/04/2026	धनु	12/10/2026	मक	25/06/2027	कुंभ	21/11/2027
कर्क	12/12/2025	धनु	17/04/2026	मक	29/10/2026	कुंभ	03/07/2027	मीन	29/11/2027
धनु	30/12/2025	मक	21/04/2026	कुंभ	15/11/2026	मीन	23/07/2027	मेष	04/12/2027
मक	06/01/2026	कुंभ	25/04/2026	मीन	26/12/2026	मेष	06/08/2027	वृष	17/12/2027
कुंभ	13/01/2026	मीन	05/05/2026	मेष	24/01/2027	वृष	06/09/2027	मिथु	24/12/2027
मीन	31/01/2026	मेष	12/05/2026	वृष	01/04/2027	मिथु	24/09/2027	सिंह	28/12/2027
मेष	12/02/2026	वृष	28/05/2026	मिथु	08/05/2027	सिंह	04/10/2027	कर्क	14/01/2028
वृष	13/03/2026	मिथु	06/06/2026	सिंह	29/05/2027	कर्क	15/11/2027	धनु	21/01/2028

मीन - मीन		मीन - मेष		मीन - वृष		मीन - मिथु		मीन - सिंह	
21/01/2028		21/03/2029		12/01/2030		23/11/2031		09/12/2032	
21/03/2029		12/01/2030		23/11/2031		09/12/2032		10/07/2033	
मीन	11/03/2028	मेष	14/04/2029	वृष	19/05/2030	मिथु	02/01/2032	सिंह	22/12/2032
मेष	14/04/2028	वृष	09/06/2029	मिथु	29/07/2030	सिंह	24/01/2032	कर्क	11/02/2033
वृष	02/07/2028	मिथु	10/07/2029	सिंह	07/09/2030	कर्क	27/04/2032	धनु	08/03/2033
मिथु	16/08/2028	सिंह	27/07/2029	कर्क	19/02/2031	धनु	10/06/2032	मक	18/03/2033
सिंह	10/09/2028	कर्क	08/10/2029	धनु	09/05/2031	मक	28/06/2032	कुंभ	28/03/2033
कर्क	22/12/2028	धनु	11/11/2029	मक	10/06/2031	कुंभ	16/07/2032	मीन	22/04/2033
धनु	10/02/2029	मक	25/11/2029	कुंभ	12/07/2031	मीन	29/08/2032	मेष	09/05/2033
मक	01/03/2029	कुंभ	09/12/2029	मीन	29/09/2031	मेष	29/09/2032	वृष	17/06/2033
कुंभ	21/03/2029	मीन	12/01/2030	मेष	23/11/2031	वृष	09/12/2032	मिथु	10/07/2033

मीन - कर्क		मीन - धनु		मीन - मक		मीन - कुंभ		मेष - मेष	
10/07/2033		18/12/2035		15/02/2037		04/08/2037		21/01/2038	
18/12/2035		15/02/2037		04/08/2037		21/01/2038		17/08/2038	
कर्क	12/02/2034	धनु	06/02/2036	मक	23/02/2037	कुंभ	12/08/2037	मेष	07/02/2038
धनु	27/05/2034	मक	26/02/2036	कुंभ	03/03/2037	मीन	01/09/2037	वृष	18/03/2038
मक	08/07/2034	कुंभ	16/03/2036	मीन	23/03/2037	मेष	15/09/2037	मिथु	08/04/2038
कुंभ	18/08/2034	मीन	05/05/2036	मेष	06/04/2037	वृष	16/10/2037	सिंह	21/04/2038
मीन	30/11/2034	मेष	08/06/2036	वृष	07/05/2037	मिथु	03/11/2037	कर्क	10/06/2038
मेष	10/02/2035	वृष	26/08/2036	मिथु	25/05/2037	सिंह	13/11/2037	धनु	05/07/2038
वृष	26/07/2035	मिथु	10/10/2036	सिंह	04/06/2037	कर्क	24/12/2037	मक	14/07/2038
मिथु	28/10/2035	सिंह	03/11/2036	कर्क	15/07/2037	धनु	13/01/2038	कुंभ	24/07/2038
सिंह	18/12/2035	कर्क	15/02/2037	धनु	04/08/2037	मक	21/01/2038	मीन	17/08/2038

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - सिंह		मेष - कर्क		मेष - धनु	
17/08/2038		06/12/2039		29/08/2040		25/01/2041		11/10/2042	
06/12/2039		29/08/2040		25/01/2041		11/10/2042		05/08/2043	
वृष	14/11/2038	मिथु	03/01/2040	सिंह	07/09/2040	कर्क	26/06/2041	धनु	15/11/2042
मिथु	02/01/2039	सिंह	18/01/2040	कर्क	13/10/2040	धनु	07/09/2041	मक	29/11/2042
सिंह	30/01/2039	कर्क	24/03/2040	धनु	31/10/2040	मक	06/10/2041	कुंभ	13/12/2042
कर्क	26/05/2039	धनु	24/04/2040	मक	06/11/2040	कुंभ	04/11/2041	मीन	16/01/2043
धनु	20/07/2039	मक	06/05/2040	कुंभ	13/11/2040	मीन	16/01/2042	मेष	09/02/2043
मक	12/08/2039	कुंभ	19/05/2040	मीन	01/12/2040	मेष	08/03/2042	वृष	06/04/2043
कुंभ	03/09/2039	मीन	19/06/2040	मेष	13/12/2040	वृष	02/07/2042	मिथु	07/05/2043
मीन	28/10/2039	मेष	11/07/2040	वृष	09/01/2041	मिथु	05/09/2042	सिंह	24/05/2043
मेष	06/12/2039	वृष	29/08/2040	मिथु	25/01/2041	सिंह	11/10/2042	कर्क	05/08/2043

मेष - मक		मेष - कुंभ		मेष - मीन		वृष - वृष		वृष - मिथु	
05/08/2043		02/12/2043		29/03/2044		21/01/2045		13/01/2048	
02/12/2043		29/03/2044		21/01/2045		13/01/2048		16/09/2049	
मक	10/08/2043	कुंभ	07/12/2043	मीन	03/05/2044	वृष	11/08/2045	मिथु	17/03/2048
कुंभ	16/08/2043	मीन	21/12/2043	मेष	27/05/2044	मिथु	03/12/2045	सिंह	22/04/2048
मीन	29/08/2043	मेष	31/12/2043	वृष	22/07/2044	सिंह	04/02/2046	कर्क	18/09/2048
मेष	08/09/2043	वृष	22/01/2044	मिथु	22/08/2044	कर्क	27/10/2046	धनु	28/11/2048
वृष	30/09/2043	मिथु	03/02/2044	सिंह	08/09/2044	धनु	03/03/2047	मक	26/12/2048
मिथु	13/10/2043	सिंह	10/02/2044	कर्क	19/11/2044	मक	22/04/2047	कुंभ	24/01/2049
सिंह	20/10/2043	कर्क	10/03/2044	धनु	24/12/2044	कुंभ	12/06/2047	मीन	05/04/2049
कर्क	18/11/2043	धनु	24/03/2044	मक	07/01/2045	मीन	16/10/2047	मेष	25/05/2049
धनु	02/12/2043	मक	29/03/2044	कुंभ	21/01/2045	मेष	13/01/2048	वृष	16/09/2049

वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - धनु		वृष - मक		वृष - कुंभ	
16/09/2049		21/08/2050		18/07/2054		28/05/2056		24/02/2057	
21/08/2050		18/07/2054		28/05/2056		24/02/2057		00/00/0000	
सिंह	05/10/2049	कर्क	05/08/2051	धनु	05/10/2054	मक	10/06/2056	कुंभ	08/03/2057
कर्क	27/12/2049	धनु	18/01/2052	मक	06/11/2054	कुंभ	22/06/2056	मीन	09/04/2057
धनु	05/02/2050	मक	24/03/2052	कुंभ	08/12/2054	मीन	24/07/2056	मेष	01/05/2057
मक	21/02/2050	कुंभ	29/05/2052	मीन	25/02/2055	मेष	15/08/2056	वृष	21/06/2057
कुंभ	08/03/2050	मीन	11/11/2052	मेष	21/04/2055	वृष	04/10/2056	मिथु	09/07/2057
मीन	17/04/2050	मेष	08/03/2053	वृष	25/08/2055	मिथु	02/11/2056		00/00/0000
मेष	15/05/2050	वृष	28/11/2053	मिथु	04/11/2055	सिंह	18/11/2056		00/00/0000
वृष	17/07/2050	मिथु	26/04/2054	सिंह	14/12/2055	कर्क	23/01/2057		00/00/0000
मिथु	21/08/2050	सिंह	18/07/2054	कर्क	28/05/2056	धनु	24/02/2057		00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : मेष 9 वर्ष 0 मास 0 दिन

मेष 9 वर्ष	
10/07/1971	
09/07/1980	
वृष	09/04/1972
मिथु	07/01/1973
कर्क	08/10/1973
सिंह	09/07/1974
कन्या	09/04/1975
तुला	08/01/1976
वृश्चि	08/10/1976
धनु	09/07/1977
मक	09/04/1978
कुंभ	08/01/1979
मीन	09/10/1979
मेष	09/07/1980

वृष 1 वर्ष	
09/07/1980	
09/07/1981	
मेष	08/08/1980
मीन	08/09/1980
कुंभ	08/10/1980
मक	08/11/1980
धनु	08/12/1980
वृश्चि	07/01/1981
तुला	07/02/1981
कन्या	09/03/1981
सिंह	09/04/1981
कर्क	09/05/1981
मिथु	09/06/1981
वृष	09/07/1981

मिथुन 1 वर्ष	
09/07/1981	
09/07/1982	
वृष	09/08/1981
मेष	08/09/1981
मीन	08/10/1981
कुंभ	08/11/1981
मक	08/12/1981
धनु	08/01/1982
वृश्चि	07/02/1982
तुला	10/03/1982
कन्या	09/04/1982
सिंह	09/05/1982
कर्क	09/06/1982
मिथु	09/07/1982

कर्क 6 वर्ष	
09/07/1982	
09/07/1988	
मिथु	08/01/1983
वृष	10/07/1983
मेष	08/01/1984
मीन	09/07/1984
कुंभ	07/01/1985
मक	09/07/1985
धनु	08/01/1986
वृश्चि	09/07/1986
तुला	08/01/1987
कन्या	10/07/1987
सिंह	08/01/1988
कर्क	09/07/1988

सिंह 2 वर्ष	
09/07/1988	
09/07/1990	
कन्या	08/09/1988
तुला	08/11/1988
वृश्चि	07/01/1989
धनु	09/03/1989
मक	09/05/1989
कुंभ	09/07/1989
मीन	08/09/1989
मेष	08/11/1989
वृष	08/01/1990
मिथु	10/03/1990
कर्क	09/05/1990
सिंह	09/07/1990

कन्या 2 वर्ष	
09/07/1990	
09/07/1992	
तुला	08/09/1990
वृश्चि	08/11/1990
धनु	08/01/1991
मक	10/03/1991
कुंभ	10/05/1991
मीन	10/07/1991
मेष	08/09/1991
वृष	08/11/1991
मिथु	08/01/1992
कर्क	09/03/1992
सिंह	09/05/1992
कन्या	09/07/1992

तुला 8 वर्ष	
09/07/1992	
09/07/2000	
वृश्चि	09/03/1993
धनु	08/11/1993
मक	09/07/1994
कुंभ	10/03/1995
मीन	08/11/1995
मेष	09/07/1996
वृष	09/03/1997
मिथु	08/11/1997
कर्क	09/07/1998
सिंह	10/03/1999
कन्या	08/11/1999
तुला	09/07/2000

वृश्चिक 2 वर्ष	
09/07/2000	
09/07/2002	
तुला	08/09/2000
कन्या	08/11/2000
सिंह	07/01/2001
कर्क	09/03/2001
मिथु	09/05/2001
वृष	09/07/2001
मेष	08/09/2001
मीन	08/11/2001
कुंभ	08/01/2002
मक	10/03/2002
धनु	09/05/2002
वृश्चि	09/07/2002

धनु 11 वर्ष	
09/07/2002	
09/07/2013	
वृश्चि	09/06/2003
तुला	09/05/2004
कन्या	09/04/2005
सिंह	10/03/2006
कर्क	07/02/2007
मिथु	08/01/2008
वृष	08/12/2008
मेष	08/11/2009
मीन	09/10/2010
कुंभ	08/09/2011
मक	08/08/2012
धनु	09/07/2013

मकर 8 वर्ष	
09/07/2013	
09/07/2021	
धनु	10/03/2014
वृश्चि	08/11/2014
तुला	10/07/2015
कन्या	09/03/2016
सिंह	08/11/2016
कर्क	09/07/2017
मिथु	10/03/2018
वृष	08/11/2018
मेष	10/07/2019
मीन	09/03/2020
कुंभ	08/11/2020
मक	09/07/2021

कुम्भ 1 वर्ष	
09/07/2021	
09/07/2022	
मीन	09/08/2021
मेष	08/09/2021
वृष	08/10/2021
मिथु	08/11/2021
कर्क	08/12/2021
सिंह	08/01/2022
कन्या	07/02/2022
तुला	10/03/2022
वृश्चि	09/04/2022
धनु	09/05/2022
मक	09/06/2022
कुंभ	09/07/2022

मीन 4 वर्ष	
09/07/2022	
09/07/2026	
मेष	08/11/2022
वृष	10/03/2023
मिथु	10/07/2023
कर्क	08/11/2023
सिंह	09/03/2024
कन्या	09/07/2024
तुला	08/11/2024
वृश्चि	09/03/2025
धनु	09/07/2025
मक	08/11/2025
कुंभ	10/03/2026
मीन	09/07/2026

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मीन - कुंभ	
08/11/2025	
10/03/2026	
मीन	18/11/2025
मेष	28/11/2025
वृष	08/12/2025
मिथु	18/12/2025
कर्क	29/12/2025
सिंह	08/01/2026
कन्या	18/01/2026
तुला	28/01/2026
वृश्चि	07/02/2026
धनु	17/02/2026
मक	27/02/2026
कुंभ	10/03/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

चर दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मीन	
10/03/2026	
09/07/2026	
मेष	20/03/2026
वृष	30/03/2026
मिथु	09/04/2026
कर्क	19/04/2026
सिंह	29/04/2026
कन्या	09/05/2026
तुला	20/05/2026
वृश्चि	30/05/2026
धनु	09/06/2026
मक	19/06/2026
कुंभ	29/06/2026
मीन	09/07/2026

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	8
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	77%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
माणिक्य	सूर्य	73%	पराक्रम, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	70%	व्यावसायिक उन्नति, सुख
नीलम	शनि	67%	धन, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	67%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	64%	व्यावसायिक उन्नति, धन
पुखराज	गुरु	52%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, कम खर्च
पन्ना	बुध	34%	ग्रह कलेश, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	31%	पराक्रम हानि, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

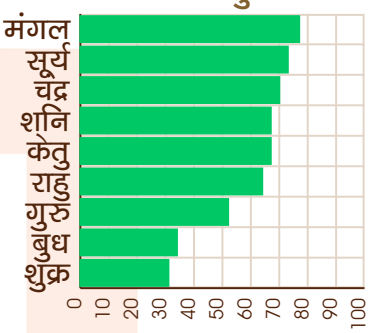

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	21/02/1980	80%	83%	77%	47%	52%	31%	67%	52%	55%
मंगल	21/02/1987	80%	77%	89%	9%	58%	31%	67%	52%	73%
राहु	20/02/2005	61%	58%	64%	34%	52%	44%	73%	77%	55%
गुरु	20/02/2021	80%	77%	83%	9%	64%	6%	67%	64%	67%
शनि	21/02/2040	61%	58%	64%	47%	52%	44%	80%	70%	55%
बुध	20/02/2057	80%	58%	77%	55%	52%	44%	67%	64%	67%
केतु	21/02/2064	61%	58%	83%	34%	52%	44%	55%	52%	80%
शुक्र	21/02/2084	61%	58%	77%	47%	52%	53%	73%	70%	73%
सूर्य	21/02/2090	86%	77%	83%	34%	58%	6%	55%	52%	55%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए माणिक्य, मोती, नीलम, लहसुनिया, गोमेद एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना व हीरा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास

करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला ग्रह है। यद्दिप अष्टम भाव का स्वामी शुभ नहीं होता, परन्तु लग्नेश भी होने के कारण मंगल अष्टम दोष से मुक्त है। मंगल रत्न मूंगा शुभ ग्रह होकर आपके स्वास्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, आरोग्यता, स्वाभिमान, अधिकार, प्रभुत्व और नेतृत्व शक्ति का विकास कर सकता है। मंगल अष्ट्मेश भी है इसलिए मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपके जीवन की बाधाओं में भी कमी आ सकती है। आप मूंगा धारण कर अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ा सकते है। मूंगा धारण करने से आपके आत्मविश्वास, दृढ़निश्चयता और साहस भाव में वृद्धि हो सकती है। लग्नेश का रत्न होने के कारण मूंगा आपके लिए जीवन रत्न भी है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण से आपके पराक्रम, प्रताप एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपकी कठोरता और अनुशासनप्रियता में कमी करेगा। आपको उदार, हितकारी बनाने में सहयोग करेगा। इसकी शुभता से आप धैर्यवान, पुरुषार्थी एवं स्वाभिमानी गुणों से परिपूर्ण होंगे। माणिक्य रत्न आपकी आत्मा व चित्त की शुद्धि करेगा। भाई-बहनों का प्रियजन बनायेगा। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में भी वृद्धि करने में भी सक्षम है। इसके अलावा सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में

स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र लग्नेश मंगल का मित्र है। चंद्र रत्न मोती की शुभता आपको सौम्य सरल स्वभाव, स्वाभिमानी, आत्मसम्मानी, महत्वकांक्षा का गुण दे सकती है। इसके अतिरिक्त मोती आपको धन, प्रतिष्ठा, यात्रा ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन प्राप्त, कल्पना और प्रगतिशील विचारधारा भी प्रदान कर रहा है। चतुर्थेश का रत्न होने के कारण चंद्र रत्न मोती आपको माता सुख, कर्तव्यनिष्ठा, वाहन, जमीन-जायदाद से सुखी कर सकता है। इसलिए चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंब तथा लाभवान बनायेगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख संपदा, समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति देगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता देगा। नीलम रत्न पैतृक सम्पति की वृद्धि करेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। कर्मेश शनि का रत्न नीलम आपके कार्यक्षेत्र की समस्याओं का निवारण कर सकता है। यह रत्न आपकी योग्यता के अनुसार सफलता दिला सकता है। आत्मबल और मनोबल की वृद्धि कर सकता है। इसके अतिरिक्त नीलम रत्न आपके कार्य क्षेत्र को अनुकूल कर आपको उन्नति और विकास के अवसर प्राप्त करने में सहयोग करेंगे। शनि आयेश भी है इसलिए शनि रत्न नीलम धारण करने से आपकी आजीविका और आय दोनों क्षेत्रों से सुखद परिणाम प्राप्त हो सकते है। आप आय और कार्यक्षेत्र को सौहार्दपूर्ण बनाने के लिए शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न

आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु मकर राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी शनि दूसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं

जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। इसलिए आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न की शुभता से आप को पैतृक धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न आपको दीर्घायु प्रदान कर आपको चिरंजीवी बनायेगा। रत्न प्रभाव से आपको तीर्थ यात्राएं करने के अवसर प्राप्त हो सकते है। स्वजनों से अत्यधिक लगाव बनाये रखेगा। पुखराज आपको पारिवारिक संस्कार और परंम्पराओं का पालन करने में सुख का अनुभव करायेगा। पुखराज रत्न से आपको अच्छ मित्रों की संगति प्राप्त होगी।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते है। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे है तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्यो में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन, शयन सुख को बढ़ाया सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते है। इस रत्न से आपकी वाद-वाद की योग्यता प्रभावित हो सकती है। यह

आपके धैर्य और ज्ञान में कमी करेगा। आपके अपने बंधु बांधवों से वैचारिक मतभेद हो सकते है। स्मरण शक्ति आपके काम नहीं आएगी। रत्न प्रभाव से आप कुसंगति के प्रभाव में आ सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आराम और विलासिता में पडकर आप अपने लक्ष्य को भूल सकते है। समाज में सम्मान की कमी हो सकती है। गणित जैसे विषय शिक्षा में आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं षष्ठ भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं ऋणेश बुध अपने शुभ फल नहीं दे पाएंगे। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप रोगग्रस्त हो सकते है। आपके परिश्रम भाव में कमी हो सकती है। पन्ना रत्न धारण करने पर बौद्धिक योग्यता, शिक्षा का सुख प्राप्त करने में कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपके भाई-बंधुओं से प्राप्त होने वाले सुख-सहयोग को भी बाधित कर सकता है। शत्रुओं की अधिकता आपके जीवन की प्रगति को मन्द कर सकती है। पन्ना रत्न आपको सेवकों, सहोदरों आलोचनात्मक लेख लेखन का स्वभाव दे सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा बुद्धि युक्त विषयों में त्रुटि हो सकती है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा आपके उत्साह, विनम्रता और व्यवहार कुशलता में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी वाणी की मधुरता में भी कमी ला सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपको कला और यात्राओं में सुख की कमी करा सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में कुछ विसंगतियां आ सकती है। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहकर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकती है। हीरा रत्न आपके धन लाभ और संपन्नता में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी संकल्पशक्ति भी आंशिक रूप से प्रभावित हो सकती है। विवाह में विलम्ब भी यह रत्न आपको दे सकता है.

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तम भाव के स्वामी होकर परम मारकेश हो जाते है। अतः इस ग्रह का हीरा रत्न धारण करने से आपको धन हानि, पारिवारिक मतभेद एवं वैवाहिक जीवन में कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। हीरा रत्न के प्रभाव से आप भ्रमणकारी, व्यसनी और चंचल स्वभाव के हो सकते है। रत्न की अनुकूलता कम होने के कारण इस रत्न को पहनने के बाद आप की सत्यवादिता में कमी आ सकती है। आपके परिवारिक स्नेह में भी कमी के योग बन सकते है। हीरा सप्तमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न धारण से आपके ग्रहस्थ सुख में अत्यधिक उतार चढ़ाव आ सकते है। भाईयों से वियोग, स्वजनों से विरोध और कलह उत्पन्न हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(20/02/2021 - 21/02/2040)

शनि की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मूंगा, माणिक्य, मोती, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(21/02/2040 - 20/02/2057)

बुध की दशा में आपका माणिक्य व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, लहसुनिया, गोमेद, मोती, पन्ना व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(20/02/2057 - 21/02/2064)

केतु की दशा में आपका मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मोती, नीलम, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(21/02/2064 - 21/02/2084)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, लहसुनिया, गोमेद, माणिक्य, मोती, हीरा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(21/02/2084 - 21/02/2090)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

चन्द्र - 21/02/1980

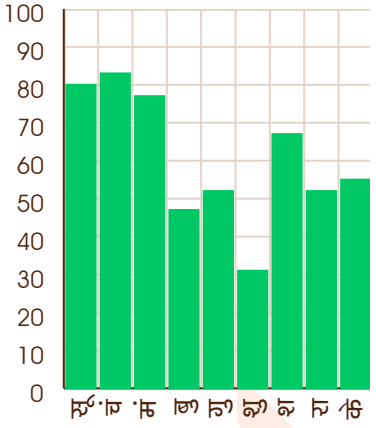

मंगल - 21/02/1987

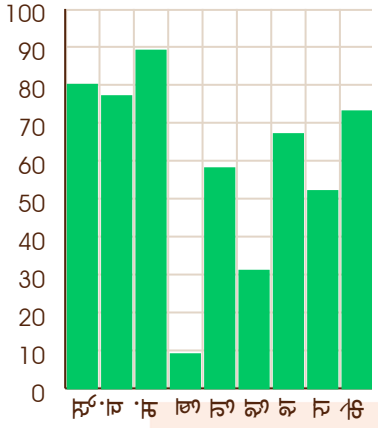

राहु - 20/02/2005

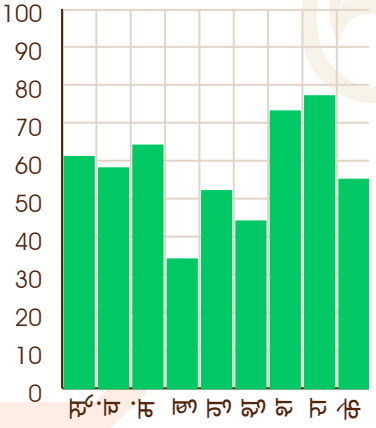

गुरु - 20/02/2021

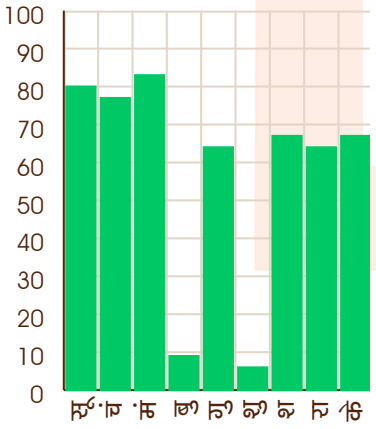

शनि - 21/02/2040

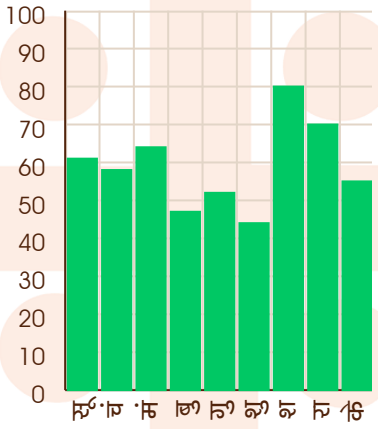

बुध - 20/02/2057

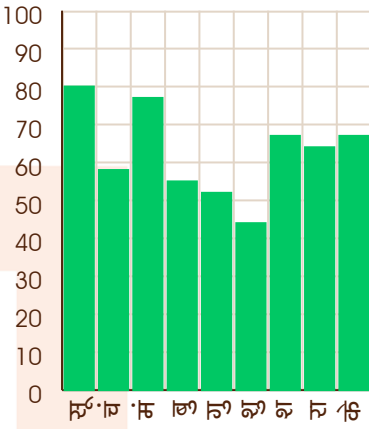

केतु - 21/02/2064

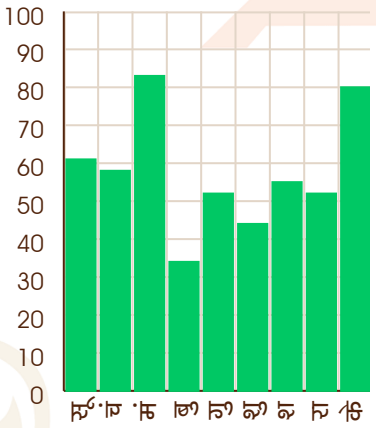

शुक्र - 21/02/2084

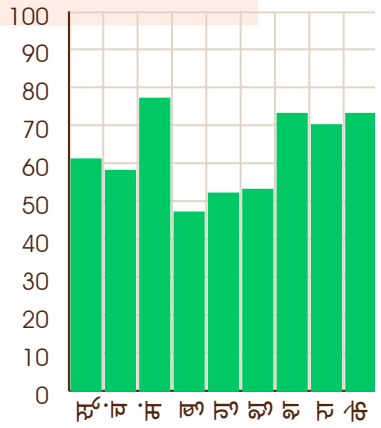

सूर्य - 21/02/2090

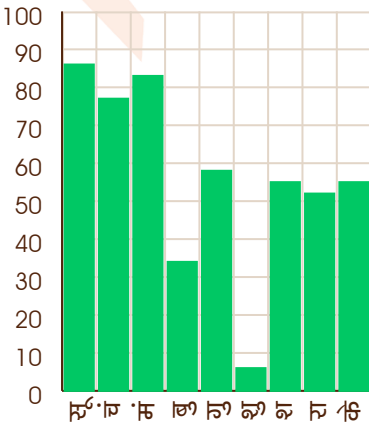

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गारनेट

आपका जन्म मेष राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी मंगल होता है। मंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह चंद्र के पश्चात पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मेष राशि के लग्न वाले जातकों को मेष राशि के स्वामी ग्रह मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। मंगल ग्रह के लिये गारनेट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी मंगल सेनापति पद व ऊर्जा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को लीडरशिप गुण की प्राप्ति तथा अपनी टीम में नायक का गुण व टीम से सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को छोटे भाई का सहयोग भी प्राप्त होता है। मंगल ग्रह शक्ति एवं छोटे भाई का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको रक्त से संबंधित रोग जैसे उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप या रक्त संबंधी संक्रमण जैसे रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जातक में साहस व शक्ति का संचार होता है।

गारनेट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्यकी अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य ग्रह मंगल को अपना मित्र ग्रह मानता है। गारनेट रत्न मंगल का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। गारनेट को यदि मंगलवार के साथ-साथ मंगल के नक्षत्र अर्थात् मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गारनेट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, मंगल के 108 मंत्रों का जाप करते हुए अभिमंत्रित करके माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

मंगल का मंत्र - ऊँ अं अंगारकाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि मंगल से संबंधित पदार्थ जैसे गेहूं, तांबा, गुड़, सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो गारनेट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन मंगल का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें तो यह गारनेट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाना इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मेष लग्न वाले जातक यदि गारनेट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते है। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरूषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहिनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता हैं। इसका स्वामी जिस भाव में जाता हैं उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता हैं। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शात्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान हैं। इस भाव का स्वामी अर्थात अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता हैं। और अशुभ फलों में वृद्धि होती हैं। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव हैं। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग,कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह हैं। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता हैं। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती हैं। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता हैं। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता हैं।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि हैं। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही हैं। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती हैं। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान हैं। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि हैं। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढेसाती तृतीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ स्थित है, यद्यपि चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु मानसिक रूप से आप यदा कदा परेशानी की अनुभूति करेंगी। स्वभाव में उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में अनावश्यक विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व भी असफल हो सकती हैं। इससे आपके पति का स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे परेशान हो सकते हैं।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा साथ ही लग्न से चतुर्थ में दृष्टि के कारण आपको जीवन में भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति परिश्रम पूर्वक होगी। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाविक तेजी या क्रोध का भाव उनमें विद्यमान रहेगा जिससे यदा कदा संबंधों में मधुरता की न्यूनता रहेगी। साथ ही अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा उनकी सिद्धि में विलम्ब होगा परन्तु स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

अतः मंगल के अशुभ प्रभावों को कम करने तथा दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इस दोष के भंग होने पर आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा जीवन में आवश्यक भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही इनका उपभोग भी करेंगी। चल एवं अचल सम्पति की भी आपको प्राप्ति होगी। पति के साथ भी संबंधों में मधुरता रहेगी। जीवन में आप धन ऐश्वर्य सौभाग्य एवं शुभ प्रभावों से युक्त

होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

कुंडली मिलान के समय जिस युवक की कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ हो यदि आवश्यक न हो तो ऐसे विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल की स्थिति से दोनों का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा इसके अतिरिक्त अन्य भावों में स्थित मंगल दोष भंग कर देगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उचित मिलान करके अंतिम निर्णय लेना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से अलग रहता है। माता-पिता का स्नेह अधिक नहीं मिलता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। नाना-नानी या दादा-दादी का प्रायः वियोग होता है। इस योग के प्रभाव से सन्तान कभी अस्वस्थ हो जाते हैं और जातक चिन्ता व परेशानी के घेरे में आ जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। नौकरी व्यवसाय में भी कभी कुछ व्यवधान उपस्थित हो जाता है पर कालान्तर में वह स्वतः नष्ट हो जाता है। जातक को भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है और सरकारी अधिकारियों से कभी अनबन भी हो जाती है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी अशान्त या कष्टमय हो जाता है। घर में सुख-शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। सुख-प्राप्ति के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और मित्र गण समय पर धोखा दे जाते हैं। परिणामस्वरूप जातक को आंशिक रूप में नुकसान उठाना पड़ता है। आय में कमी रहती है। फलस्वरूप आर्थिक संकट समय-समय पर घेर लेता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है जिसमें जातक को विशेष रूप से प्रसिद्धि मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्धानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दस है। एक एवं शून्य का जोड़ एक होता है जोकि अंक ज्योतिषानुसार आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य और शून्य को ब्रह्म या शिव माना गया है। इनके प्रभाववश आप अपने क्षेत्र में एक प्रभावशील महिला होंगी। सूर्य जिस तरह से प्रकाशित एवं अस्त होता है वैसे ही आपके जीवन में काफी ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आपको सफलताऐं प्राप्त होंगी। कभी-कभी अस्त सूर्य के समान असफलता का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आप असफलता से पीछे नहीं हटेंगी। कुछ दिन शिव की तरह शांत रहकर पुनः सफलता अर्जित करेंगी। संघर्ष, साहस, धैर्य एवं उच्च महत्वाकांक्षायें आप में अधिक रहेंगी।

आप स्थिरवादी, दृढ़ निश्चयी, वचनशील महिला होंगी। इन गुणों वश मेहनत एवं ईमानदारी से सफलता अर्जित करेंगी। संघर्षों से पीछे नहीं हटेंगी। समाज में नाम तथा यश प्राप्त करेंगी। आप परोपकारवादी, बहुतों की पोषक बनेंगी। आर्थिक स्थिति आपकी मध्य अवस्था में काफी ठीक रहेगी। समाज में आपका अच्छा नाम होगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की रहेगी। इससे आपको पराधीन रहकर कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी के आधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग अधिक करेंगी। आप अपने कार्य करने के ढंग में स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अधिक पसन्द करेंगी।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुई हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगी। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगी। आपकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगी। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी।

आपका मूलांक 1 तथा भाग्यांक 8 है। मूलांक के स्वामी सूर्य ग्रह का भाग्यांक 8 के स्वामी ग्रह शनि से मित्र संबंध होने के कारण आपको इन दोनों ही ग्रहों के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। सूर्य एवं शनि के प्रभाव से आपकी सामाजिक स्थिति धीरे-धीरे उन्नतिशील हो कर स्थायी ख्याति एवं लाभ प्राप्त होगा। सूर्य के प्रभाव से आप प्रकाशित होंगी एवं शनि के प्रभाव से स्थिरता प्राप्त होगी। सूर्य शीघ्र सफलता देता है, शनि अवरोध पैदा करता है। अतः आपके कार्य रुकावटों के साथ पूर्ण होंगे। शनि के प्रभाव से आप नीचे से, अपनी मेहनत के द्वारा, धीरे-धीरे ऊपर की ओर उच्चता को प्राप्त करेंगी। आपके कार्यों में देरी अवश्य होगी, लेकिन

कार्य स्थायी बनेंगे।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 8 के प्रभाववश आपका प्रारंभिक भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 28 वर्ष की अवस्था तक विशेष सफलताएं अर्जित करेगा। इसके पश्चात् 35 वर्ष की अवस्था से 37 वर्ष की अवस्था के मध्य विशेष लाभ प्राप्त होंगे।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्यक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन आपके लिये विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु आपको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23, एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उक्त तरीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं आपकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उक्त मूलांक वाली महिलाओं से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां आपके लिए सहायक एवं लाभ पूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आप यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

वास्तु एवं निवास

आपके ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

शुभ वाहन नं

यदि आप वाहन आदि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

आपका मूलांक 1 है। अतः आपके लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए आपके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा, जो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। आपकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

हृदय पक्ष आपका कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट आपको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा - कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे आप सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से आपको हर समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकल स्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार-व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

व्रतोपवास

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

माणिक आपका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस किया को करने पर आप विभिन्न रोंगो तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र - आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

वनस्पति धारण

आप रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

योग्य व्यक्ति के लिए सूर्य की शांति हेतु सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में जब मेदिनीय क्षितिज पर मेष लग्न उदित था उस समय हुआ था। आपके जन्म काल धनु राशि का नवमांश एवं धनु राशि द्रेष्काण का प्रभाव पड़ रहा था। आपके जन्म प्रभाव से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप अपना जीवन सुख पूर्वक आरामदायक वातवारण के साथ व्यतीत करेंगी।

बुनियादी तौर पर आप अपने कर्म पर विश्वास करने वाली प्राणी हैं। तथाकथित रूप से आप अपने जीवन को सेवा योग्य एवं मानवता युक्त विचार से संभावित रूप में व्यतीत करेंगी। अस्तु वह संभाव्य है कि आप अपने अगले पुनर्जन्म में ज्योतिर्मय आत्मा से प्रवेश करेंगी। अर्थात् वर्तमान जीवन के कार्य कलाप उत्तमता से प्रस्तुत कर संपादित करेंगी।

आप दुबली-पतली, औसतन लंबे, मांसल शरीर से युक्त, एक संयमी प्राणी होंगी। आप में अदम्य उत्साह, संभव शक्ति, संपन्न, आध्यात्मिक भावनाओं से युक्त, आत्मनिश्चयी, अपने उद्देश्य के पीछे चलने वाली तथा अपने कार्य कलापों को सीमा तक ले जाने वाली महिला हैं। आपकी यह जन्मजात प्रवृत्ति ईश्वरीय प्रदत्त है कि आप हर संभव प्रयत्नशील रहकर पूर्ण धन प्राप्त करके अपना कामप्रिय एवं सुखमय जीवन व्यतीत करेंगी।

आप बुद्धिमान एवं उच्चकोटि की महत्वकांक्षी सत्तालोलुप प्राणी हैं। आप में अपनी पूर्ण योजनाओं अर्थात् कार्यकलापों को व्यवस्थित ढंग से सुविधापूर्वक संचालित करने की क्षमता विद्यमान है। आप में दूसरा यह गुण भी विद्यमान है कि आप चाहे कोई भी कार्य शुरू करने का निश्चय करती हैं। उसको निश्चित रूप से पूरा कर लेती हैं।

आप अपनी आंतरिक चतुरता से जिस कार्य में हाथ लगाती हैं। उसको कठोरता पूर्वक ग्रहण कर अन्दरूनी समस्याओं को समाधान करने में सक्षमता प्राप्त कर सकती है। आप किसी भी समस्याओं का सामना करने के लिए तथा अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उसके पीछे पड़ जाती हैं। इस क्षण चाहे किसी की किसी भी प्रकार की अच्छी राय या सबक हो उसे कठोरता पूर्वक नकार देती हैं। आपका यह सहजता पूर्वक अपने-अपने कार्य के प्रति अग्रसर होना तथा परिस्थिति को नियंत्रित रखना, आपकी विशेष योग्यता का परिचायक है।

विशेषतः आपकी साहसिक प्रवृत्ति एवं अपरिवर्तनीय आकर्षण से विपरीत योनि के कोई भी सदस्य आपकी विनोदप्रियता के कारण इच्छा रख कर भी प्रेमालिंगन नही कर पाते हैं। परंतु इसका यह अर्थ नही कि आपका दांपत्य जीवन भी अस्त व्यस्त है। अर्थात् आप अपने पति के प्रति पूर्ण आस्थावान और समर्पित हैं।

आप अपनी माता के लिए सभी कुछ त्याग कर भी अपनी माता के साथ अच्छी प्रकार से तारतम्य मिलाकर अपने बच्चों एवं पति को भी प्यार करती हैं। वास्तविकता तो यह है कि आपके कंधे पर पारिवारिक संपूर्ण दायित्व निर्भर है, तथा आपके द्वारा ही परिवार का पर्याप्त हित संभाव्य है।

आप मसालेदार और रूचिकर भोजन पसंद करती और बहुत अधिक खाती हैं।

स्वाभाविक रूप से बहुत भोजन करना, जिससे अच्छी पाचन क्रिया न हो वैसा भोजन आपके लिए दुःखकारक होगा। इसलिए वासी, अम्लीय खाद्य तथा अचार, मसाला युक्त व्यंजन नही ग्रहण करें। आपको सदैव और लगातार हरी शाक-सब्जी भोजन करना चाहिए। आपके लिए संचालित व्यवसाय से संबंधित विभिन्न प्रकार के कार्य, अथवा रसायनिक वस्तुओं का उत्पादन करना आपके लिए अनुकूल व्यवसाय होगा।

आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति गंभीर रूप से सतर्क रहने की आवश्यकता है। सामान्यतया छोटी मोटी कोई चोट आदि की आशंका है। दुर्घटना से आपके माथे पर कोई गंभीर चोट न लग जाए। अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति सदैव जागरूक रहना चाहिए। आपको सदैव ही भीड़-भार से बचकर अपेक्षित और सतर्कता पूर्वक पथ को पार करना चाहिए। आपको अपने पारिवारिक चिकित्सक से समय-समय पर अपने सिरो वेदना के तकलीफ से छुटकारा पाने के लिए राय लेनी चाहिए। आपको साधारण तौर पर मस्तिष्क से संबंधित अथवा अनिद्रा जैसी छोटे रोग की संभावना है। आपको स्वस्थ जीवन बिताने के लिए संबंधित सतर्कता बरतनी चाहिए। स्वास्थ जीवन बिताने के लिए उपाय से अधिक रोग से बचाव करना श्रेयस्कर होगा।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार एवं सोमवार उपयुक्त एवं भाग्यशाली दिन है। शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार तीन दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं व्ययकारी होंगे।
आपके लिए व्यवहारणीय अंक 9 एवं 1 अंक भाग्यशाली अंक है।

आपके व्यवहार के लिए लाभदायक एवं अनुकूल रंग, लाल, ताम्रवर्णी, स्वर्णिम एवं पीला रंग के वस्त्रादि है। इसके अतिरिक्त काला रंग या काले रंग का वस्त्रादि आपके लिए अनुकूल नही हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर

रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिस कास्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते है तथा उनमें पराक्रम साहस एवं तेजस्विता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है। इसके साथ ही जीवन में वे स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उन्नति मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होते हैं। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ रहते है तथा कठिन से कठिन कार्य को परिश्रम पूर्वक सफल बनाना उनके लिए आसान कार्य होता है।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी बिना किसी भय के अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होंगी। इससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही आप प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि भी अर्जित करेंगी। आप एक स्वाभिमानी महिला होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सम्मान जनक स्थिति में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप में प्रारम्भ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इसी परिपेक्ष्य में यथा कदा आप क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी फलतः इससे आपको कई बार अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः अनावश्यक क्रोध के भाव का यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगी तथा आनंद पूर्वक सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगी।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की स्थिति के प्रभाव से आप एक सत्यभाषी महिला होंगी तथा सत्यानुपालन में यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगी। आप तेजस्वी एवं साहसी महिला होंगी तथा अपने पराक्रम से किसी उच्च एवं प्रतिष्ठित पद को अर्जित करने में समर्थ होंगी जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी प्रवृति दानशीलता के भाव से भी युक्त होगी तथा समय समय पर दीन दुखियों को अपनी ओर से सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगी। आपमें महत्वाकांक्षा का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूति के लिए नित्य परिश्रमशील रहेंगी। शारीरिक रूप से आप बलिष्ठ रहेंगी तथा उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहकर अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। कार्य क्षेत्र में व्यापार की अपेक्षा नौकरी आपके लिए उत्तम रहेगी अतः व्यवसाय के प्रति उपेक्षा का ही भाव रखें।

इस प्रकार आप अपने साहस पराक्रम तेजस्विता एवं योग्यता से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके इच्छित मात्रा में धनैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगी तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करके आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सांसारिक सुखों तथा धन ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इस राशि के प्रभाव से जीवन में आपको किसी निकट संबंधी की धन सम्पति की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी क्योंकि अपने निकट संबंधियों से आपका व्यवहार सद्भावना से परिपूर्ण रहेगा तथा उनकी सुख दुख में पूर्ण सेवा तथा सहायता करने में तत्पर रहेंगी। बागवानी के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा समय समय पर आप इसमें तत्पर रहेगी।

जीवन में आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ समय व्यतीत करेंगी साथ ही समाज में भी एक आदरणीय महिला रहेंगी तथा अन्य लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक भी रहेंगी तथा इस प्रवृति का समय समय पर प्रदर्शन भी करेंगी। मिष्ठान भक्षण के प्रति आप रूचिशील रहेंगी तथा इससे आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी । अन्य जनों से सामान्यतया वार्तालाप में आप अत्यंत ही मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन आदि से भी युक्त रहेंगी तथा बहुमूल्य वस्तुओं तथा रत्नों को अर्जित करके सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी भी बात को समझने में दक्षता का परिचय देंगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने या दर्शन शास्त्र आदि के क्षेत्र में सर्वदा रूचिशील रहेंगी। साथ ही लेखन क्षेत्र में भी आपको सम्मान एवं ख्याति अर्जित होगी। चचेरे भाई बहिनों से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको इच्छित सुख एवं सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगी ।

आप एक बुद्धिजीवी महिला होंगी तथा शारीरिक बल की अपेक्षा बौद्धिक कार्य ही अधिक मात्रा में सम्पन्न करेंगी। अतः समाज में बुद्धिमती महिला के रूप में जानी जाएंगी। आप एक निर्भीक तथा साहसी महिला होंगी साथ ही कलम की शक्ति भी आपके पास रहेगी। अतः समय के अनुसार आप उच्चाधिकारियों या नेताओं के विरूद्ध भी लिख सकती है। आप एक साहसी महिला होंगी तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी। आधुनिक संचार के उपकरणों यथा टेलीफोन, टेलीविजन, वाहन या अन्य साधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक उनका उपभोग करेंगी। साथ ही सूचना केंद्रों में कार्यरत भी हो सकती हैं। संगीत एवं कला के प्रति भी समय समय पर आप अपनी रूचि प्रदर्शित करेंगी तथा वाद्ययंत्रों के प्रयोग में आपको आनन्दानुभूति होगी। समीपस्थ यात्राओं से आपको लाभ श्रखयाति तथा मधुर स्मृतियों की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही समाचार पत्र में संपादक या संवाददाता के रूप में भी कार्य कर सकती है। इसके अतिरिक्त आप पति एवं परिवार से प्रेम तथा उदारता के भाव से युक्त होकर सत्य के पालन में रूचिशील रहेंगी तथा कुल में श्रेष्ठ रहेंगी। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरूषों से आपको हमेशा सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्कराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होंगी तथा सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी। साथ ही ऐश्वर्य एवं समृद्धि भी आपकी बनी रहेगी तथा समाज में उच्चस्तर पर स्थापित होंगी। लेकिन उपरोक्त सुख आपको स्वपराक्रम बुद्धिमता एवं परिश्रम से ही प्राप्त होंगे तथा केतु के प्रभाव से न्यूनाधिक विलम्ब भी हो सकता है।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल संपत्ति से युक्त रहेंगी। साथ ही जमीन जायदाद के अच्छे योग बनते है। आप को नाना-नानी की ओर से कुछ सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा समाजिक प्रभाव भी बढेगा। चूंकि आप पराक्रमी एवं परिश्रमी महिला है। अतः अपने इन गुणों से भी आप इच्छित धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी।

आपका गृह सुख भी अच्छा रहेगा तथा एक सुंदर एवं आकर्षक घर की स्वामिनी होंगी। घर की तरफ से आप पूर्ण सक्रिय होंगी तथा स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रहेंगी एवं भौतिक उपकरणों से आकर्षण में वृद्धि करेंगी। आपको घर में सभी वस्तुएं यथास्थान में ही अच्छी लगेंगी तथा उनके इघर उघर होने पर आप काफी नाराजगी का प्रदर्शन करेंगी। इसके लिए अन्य पारिवारिक जनों को भी आप प्रेरित करेंगी। इस प्रकार आप सुख पूर्वक घर में निवास करेंगी। साथ ही उत्तम वाहन सुख की भी प्राप्ति होगी।

आपकी माता जी एक शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। सारे परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य एवं अपनत्व का भाव होगा एवं समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप भी माता का सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रहेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आपके आपसी संबंधो में भी मधुरता रहेगी।

अध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा प्रारंभिक कक्षाओं में ही अच्छे अंको में परीक्षाएं उतीर्ण करेंगी। अध्ययनशील प्रवृति होने के कारण आप अन्य कक्षाओं में भी अच्छे अंक अर्जित करेंगी। स्नातक परीक्षा आप आसानी से उतीर्ण करेंगी तथा इससे आप उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होंगी। समाज में भी आपके मान एवं सम्मान में वृद्धि होगी तथा आप में आत्म विश्वास की वृद्धि होगी ।

चतुर्थ भाव में केतु के प्रभाव से जीवन में आपको यदा कदा रक्त चाप एवं हृदय रोग संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। यद्यपि इसका दुष्प्रभाव अधिक नहीं होगा तथापि युवावस्था से ही आपको खान-पान पर नियंत्रण रखना चाहिए तथा ऐसे भक्ष्य पदार्थो का सीमित उपयोग करना चाहिए जो रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानियों को उत्पन्न करता है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर तो होंगी ही साथ ही सामाजिक जनो में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा वे आपकी बुद्धिमता का आदर करेंगे। आपकी बुद्धि व्यावहारिक होगी तथा शीघ्र एवं व्यावहारिक रूप से किसी भी समस्या का समाधान करने में समर्थ होंगी। वैदिक शास्त्रों एवं साहित्य में आपकी रूचि कम होगी परंतु आधुनिक शास्त्रों के प्रति विशेष लगाव होगा तथा इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी जिससे आपकी विद्वता समाज में दूर दूर तक व्याप्त होगी।

पंचमभाव में सिंह राशि की स्थिति के प्रभाव से आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा भावुकता के भाव की आप में न्यूनता होगी। प्रेम प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि कम ही होगी तथापि यदि कोई प्रसंग चला भी तो इसमें आप आदर्शवादिता एवं मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखेंगी क्यों कि आप स्वाभिमानी एवं आदर्शवादी महिला है। इससे आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है लेकिन प्रेम में भावुकता को कोई स्थान नहीं देंगी।

सिंह राशि की स्थिति पंचमभाव में होने के कारण आपको सन्तति का सुख अवश्य प्राप्त होगा तथा पुत्र की भी विलंब से परंतु निश्चित प्राप्ति होगी। आपकी संतति संख्या अल्प ही होगी तथा सभी योग्य कुशल परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगी। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथापि दोंनो को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता पिता की अवश्य सलाह लेंगी। अतः बच्चों से आप सुखी एवं संतुष्ट रहेंगी तथा उनसे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रूचि होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। वे तेजस्वी बुद्धिमान एवं व्यावहारिक होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों, समीपरस्थ संबंधियों एवं मित्रवर्ग के मध्य अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे जिससे वे सबके स्नेह एवं आदर के पात्र होंगे। बच्चों के इनगुणों से आप भी अभिभूत होंगी तथा स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। अतः इसके प्रभाव से आप यदा कदा नाक कान या गले से संबन्धित परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। आप में सहनशीलता के भाव की न्यूनता रहेगी तथा समय समय पर चर्म रोगों से भी आपके लिए समस्या उत्पन्न होगी। आपको क्रोध एवं उत्तेजना के भाव पर नियंत्रण रखना चाहिए अन्यथा इसके दुष्प्रभाव से आपके मित्रों की संख्या में न्यूनता आएगी तथा शत्रु पक्ष की वृद्धि होगी। आपके शत्रु या विरोधी पक्ष में बन्धु पड़ोसी एवं सरकारी प्रतिनिधि मुख्य रहेंगे तथा इनसे आपको समय समय पर परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। अतः आप अपने क्रोधी स्वभाव पर नियंत्रण रखें तथा किसी भी व्यक्ति की अनावश्यक रूप से आलोचना न करें। इससे आपके शत्रु एवं विरोधियों की संख्या में न्यूनता आएगी ।

आपके लिए धन संबन्धी झगड़े या मुकद्दमे अनुकूल नहीं रहेंगे तथा इनसे आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी अतः यत्न पूर्वक ऐसे मुकद्दमों की उपेक्षा करें। नौकर-चाकरों से आप युक्त रहेंगी तथा इनकी आपको आवश्यकता होगी परन्तु यदा कदा धन या अन्य प्रकार से इनके द्वारा हानि हो सकती है। अतः इनकी नियुक्ति के समय पूर्ण जानकारी के बाद ही उन्हें नौकरी पर रखें । ऋण आदि लेने की भी आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगी तो ऋण भार से आपको जीवन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। मामा मामी का सुख एवं सहयोग भी आपको समय समय पर प्राप्त होता रहेगा तथा बाल्यावस्था में अधिक मिलेगा।

इसके अतिरिक्त खान पान आदि में तेज मसालों का उपयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा इससे उदर या गुर्दे संबन्धी परेशानी हो सकती है। साथ ही शत्रु पक्ष का दमन करने में भी आप समर्थ रहेंगी परन्तु अनावश्यक व्यय की प्रवृत्ति का आपको त्याग करना चाहिए तभी जीवन में सुख एवं शान्ति प्राप्त हो सकेगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया तुला राशि चंचल भ्रमण प्रिय प्रियवक्ता तथा माता पिता एवं गुरू जनों पर श्रद्धा रखने वाली होती है। यह वायुतत्व राशि है जिससे जातक सौम्य एवं गंभीर स्वभाव का होता है। लेकिन मंगल नैसर्गिक रूप से तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं अग्नितत्व ग्रह है तथा तुला राशि में स्थित होने के कारण जातक की प्रबल कामेच्छा रहती है।

अतः इनके प्रभाव से आपके पति का स्वभाव सौम्यता के साथ साथ तेजस्वी भी होगा तथा अवसरानुकूल वे इस भाव का प्रदर्शन करेंगे। साथ ही साहस एवं पराक्रम का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र में वह दक्ष होंगे एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे। पाक शास्त्र के प्रति उनकी विशेष रूचि रहेगी तथा यदा कदा उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट व्यंजन सबको प्रिय लगेंगे।

आपके पति लालिमा लिए गौर वर्ण के पुरूष होंगे तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा तुला राशि के प्रभाव से उनके सौंदर्य एवं व्यक्तित्व में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही शारीरिक स्वस्थता एवं अंगों की पुष्टता के लिए वे व्यायाम या यौगिक क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगे। अग्नि तत्व ग्रह मंगल के प्रभाव से उनकी शारीरिक संरचना में पतलापन रहेगा परन्तु आकर्षण में कोई कमी नहीं आएगी।

सप्तम भाव में तुला राशि के प्रभाव से आपका विवाह उचित समय पर होगा तथा इसमें कोई अनावश्यक परेशानी नहीं होगी। आपका विवाह विज्ञापन या किसी समीपी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा तथा सुख दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को एक दूसरे की सहमति से पूरा करेंगे। इससे आपस में विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह समृद्ध परिवार में होगा तथा ससुराल पक्ष के लोग धनऐश्वर्य से सुसम्पन्न होंगे। विवाह के समय ससुराल से आपको प्रचुर मात्रा में दहेज तथा उपहारों की प्राप्ति होगी जिससे आर्थिक समृद्धि में वृद्धि होगी।

सास ससुर के प्रति आपके पति का विशेष सेवा एवं सम्मान का भाव होगा।जिससे उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी साथ ही साले एवं सालियों से भी सौम्य स्वभाव के कारण उनके मैत्री पूर्ण संबंध बनेंगे।

व्यापार या अन्य योजनाओं में साझेदारी की दृष्टि से आप के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक व्यावहारिक महिला होंगी तथा आधायात्म या ज्यौतिष विषयों पर अधिक विश्वास नहीं करेंगी। आप भाग्य की अपेक्षा कर्म पर अधिक विश्वास करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जमीन जायदाद मुकद्दमे तथा अन्य किसी भी प्रकार से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होता रहेगा। साथ ही पैतृक सम्पत्ति या किसी संबन्धी आदि की जायदाद मिलने के योग भी बनते है। इससे आपकी खुशहाली तथा वैभव में वृद्धि होगी। पति के लिए भी आप भाग्यशाली रहेंगी तथा विवाह के बाद सर्वत्र उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे जिससे ससुराल से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा स्नेह प्राप्त होगा।

जीवन में आपके घर में चोरी आदि की संभावनाएं अल्प मात्रा में ही होंगी तथा कोई ऐसी घटना होगी भी तो उसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः इस विषय में आपको कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए फिर भी सावधानी वश अपनी बहूमूल्य वस्तुओं तथा आभूषणों को उचित सुरक्षा में रखना चाहिए। आपका स्वयं का अथवा अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं का बीमा अवश्य कराना चाहिए क्योंकि बीमे आदि से आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा। साथ दीर्घावधि बीमा की अपेक्षा लधु अवधि के बीमों से आपको शीघ्र लाभ प्राप्त होगा। आप सामान्यतया स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होंगी तथापि वाहन चालन आदि में आपको सावधानी रखनी चाहिए तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार आप का सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करती रहेंगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की यात्रा करने की भी इच्छुक रहेंगी। आप प्रतिदिन न्यूनाधिक समय दैनिक पूजापाठ में व्यतीत करेंगी। समाज में धर्म के क्षेत्र में आप कई कार्य सम्पन्न करेंगी तथा धर्म का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आपके विचार से उसकी इच्छा से ही समस्त संसार संचालित होता है। इसके साथ ही कर्म की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करेंगी।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी अतः किसी भी विषय में पूर्वाभास के द्वारा आपको अनुभूति होगी साथ ही यदा कदा आपकी भविष्य वाणी भी सत्य सिद्ध हो सकती है। धर्म संबधी क्षेत्र में आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगी तथा लम्बी दूरी की तीर्थ यात्राएं भी सम्पन्न करेंगी। जीवन में आपको सामाजिक तथा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता प्राप्त होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे साथ ही मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। आपके विचार में वर्तमान काल में जो भी शुभ या अशुभ फल प्राप्त होते है वे सब पूर्व जन्म के अर्जित कार्यो पर आधारित होते है अतः मानसिक शान्ति आपकी बनी रहेगी। पौत्रों से आपको उचित सुख एवं आनंद की प्राप्ति होगी तथा आपकी वे पूर्ण सेवा करेंगे। साथ ही ज्यौतिष तथा तंत्र मंत्र का ज्ञान अथवा इनके प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा ।

इसके अतिरिक्त आप धर्मानुपालन में तत्पर देवता तथा ब्राह्मणों की सेविका, महात्माओं की आज्ञा का पालन करने वाली तथा परम्परागत धर्म से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाली होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही राहु भी मित्र राशि में दशम भाव में ही स्थित है। मकर राशि भूमि तत्व एवं राहु वायुत्व ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य सामान्यता श्रमसाध्य होगा एवं बौद्धिकता तथा मानसिक क्रिया का इसमें अल्प समावेश होगा। साथ ही राहु के प्रभाव से आप अपने स्वंतत्र व्यवसाय को करने में विशेष रूचिशील रखेंगी तथा इसमें आपको इच्छित उन्नति एवं सफलता की भी प्राप्ति होगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायु सेना, एअर लाइन्स, खनिज विभाग रासायनिक क्षेत्र, लोहे की उत्पादन वाली फैक्टरियां, उद्योग, पेट्रोलियम विभाग, फैक्टरी कर्मचारी, नौकरी, आदि क्षेत्रो में आजीविका प्रारम्भ करके वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी। साथ ही इन क्षेत्रों में कार्य करने से आप को सतत उन्नति की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा तथा आपके मन में भी शांति तथा सन्तुष्टि की भावना बनी रहेगी। व्यापारिक क्षेत्र में इच्छित उन्नति एवं सफलता के लिए आप भारी उद्योग, फैक्टरी, प्रेस, लोहे से संबंधित कार्य, हवाई ट्रेवल एजेन्सी, खनिज तथा पेट्रोलियम पदार्थो का व्यापार, को व्यवसाय के रूप में अपना सकती है। यदि आप इन्हीं क्षेत्रों में अपना व्यापार स्थापित करेंगी तो आपको वांछित सफलताएं मिलेंगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। साथ ही उन्नति के क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित करने में समर्थ होंगी।

मित्रराशि में दशम भावस्थ राहु के प्रभाव से जीवन में आप उच्चाधिकार एवं सम्मानित पद प्राप्त करने में समर्थ होंगी तथा इसमें आपको जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी। यद्यपि राहु एक नैसर्गिक पापी एवं वाधा कारक ग्रह है। अतः जीवन में मान सम्मान एवं उच्चाधिकार प्राप्त होने में किंचित व्यवधान एवं विलम्ब हो सकता है। इसलिए आपको इस ओर से मन में निराशा की भावना नहीं रखनी चाहिए तथा ईमानदारी एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए। राहु के प्रभाव से आपको राजनीति के क्षेत्र में शीध्र एवं अप्रत्याशित सफलता भी मिल सकती है।

दशम भाव में राहु के प्रभाव से आपके पिता पराक्रमी, तेजस्वी एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा स्वभाव से वे क्रोधी भी होंगे लेकिन उनका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य जनों के ऊपर उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सहयोग की भावना रहेगी तथा आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही उच्च शिक्षा के प्रति विशेष चिन्तित होंगे। आपको उनके प्रभाव से भी काफी मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी लेकिन नैसर्गिक पाप ग्रह राहु के प्रभाव से यदा कदा संबंधो में तनाव तथा मतभेद उत्पन्न होंगे तथापि आप सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगी तथा अप्रिय स्थिति से सदैव सुरक्षित होंगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप सौभाग्य से युक्त रहेंगी तथा अपनी अधिकाशं इच्छाओं एवं मनोकामनाओं को परिश्रम पूर्वक पूर्ण करने में समर्थ रहेंगी। आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा मन में कई उमंगे विद्यमान रहेंगी लेकिन अन्य जनों की अपेक्षा आपकी अधिकांश इच्छाएं सरलता से पूर्ण हो सकेंगी । अतिरिक्त आय स्रोतों में वृद्धि करने के लिए आप मूल संबन्धी व्यापार, लकड़ी या खनिज पदार्थो अथवा पेट्रोलियम आदि से इच्छित धनार्जन करने में समर्थ हो सकती है। यदि आप कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त साधनों से आपके पति की आय हो सकती है।

आप स्थाई मित्रता की इच्छुक रहेंगी अतः आपका मित्र मंडल अधिक विस्तृत नहीं होगा। मित्रों के मध्य आपको हार्दिक प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। साथ ही उनसे इच्छित लाभ सहयोग एवं सम्मान भी प्राप्त होता रहेगा लेकिन आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों से अधिक मित्रता करना पसंद करेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी होगा। प्रौढ़ या वृद्धावस्था में मित्रों के मध्य आप अत्यंत ही आदरणीया रहेंगी तथा सभी को समय समय पर उचित सलाह या मार्ग निर्देशन प्रदान करेंगी।

सामाजिकता की भावना से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा सामूहिक उत्सव या मनोंरजन आपके लिए परमानन्द दायक रहेगा। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा आदरणीया रहेंगी तथा सभी लोग आपको इच्छित आदर प्रदान करेंगे। बड़े भाइयों एवं बहिनों से आपको विशेष अपनत्व स्नेह तथा सहयोग की प्राप्ति होगी तथा आपका वे हर क्षेत्र में पूर्ण ध्यान रखेंगी। इसके अतिरिक्त यदा कदा बाऐं कान संबन्धी परेशानी से कष्ट होगा परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक मामलों में प्रारंभ से ही सौभाग्यशाली रहेंगी लेकिन यदा कदा बिना सोचे समझें उन्नमुक्त रूप से धन व्यय करेंगी इससे आपको ऐसे समय में आर्थिक परेशानी हो सकती है यदि आप बुद्धिमता पूर्वक योजना बनाकर व्यय करेंगी तो आर्थिक परेशानियों से आप सुरक्षित हो सकती हैं।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति की महिला होगी तथा धार्मिक कार्य कलापों, तीर्थ यात्राओं, मन्दिर निर्माण, परोपकार संबंधी कार्यो पर काफी व्यय करेंगी। बच्चों की आप पूर्ण चिन्ता करेंगी तथा उनके रहन सहन, खान पान एवं पठन पाठन के प्रति विशेष ध्यान रखेंगी तथा उनका स्तर बढ़ाने के लिए उचित व्यय करेंगी। आप उन्हें अच्छे स्कूलों या कालेजों में प्रवेश दिलाने की इच्छुक रहेंगी। साथ ही आपके मित्र एवं संबंधी भी अधिक होंगे। अतः समय समय पर इन पर आपका व्यय होता रहेगा। घर की साज सज्जा की वस्तुओं फर्नीचर आदि तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी समय समय पर व्यय करती रहेंगी। लेकिन आप व्यय के बाद बजट देखेंगी इससे आपको कर्ज आदि भी लेना पड़ सकता है लेकिन इससे विशेष परेशानी नहीं होगी तथा आसानी से कर्ज चुका देंगी ।

नवीन ज्ञान तथा विचारों को प्राप्त करने के लिए आप यात्रा आदि सम्पन्न करेंगी। आपकी यात्राएं सामान्यतया शिक्षा या व्यावसायिक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको इच्छित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप समयानुसार विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगी एवं काफी समय तक वहां रह भी सकती हैं । इस प्रकार जीवन में आपका प्रत्येक स्तर पर क्षेत्र बढ़ता रहेगा।

नक्षत्रफल

आप श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि वानर, वर्ण वैश्य, गण देव, वर्ग मार्जार तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "खि" या "खी" से प्रारम्भ होगा।

शास्त्रों के अध्ययन में आप हमेशा रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रमपूर्वक इनका ज्ञानार्जन करने में सफल रहेंगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा। अतः आप के मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगी। साथ ही कन्याओं की अपेक्षा आपके पुत्रों की संख्या का अनुपात अधिक रहेगा। भद्र पुरूषों एवं विद्वान लोगों के प्रति आपके मन में अगाध श्रद्धा तथा आदर का भाव रहेगा एवं उनको हादिक सम्मान प्रदान करेंगी। शत्रु का नाश करने में आप हमेशा सफल रहेंगी तथा वे भी आपसे अत्यन्त भयभीत एवं पराजित से रहेंगे। इसके अतिरिक्त धार्मिक भाषणों या प्रवचनों को सुनने में आप की तीव्र रूचि रहेगी तथा आप इसके लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अत्यन्त ही श्रद्धा तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा समय समय पर आप हृदय से इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी। आप विपुल धन की स्वामिनी होंगी तथा आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। साथ ही अपनी योग्यता तथा बुद्धि के बल पर किसी उच्चाधिकार या सम्माननीय पद को प्राप्त करने में भी समर्थ हो सकेंगी। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धालु होंगी तथा समस्त धार्मिक कार्य कलापों का आप अत्यन्त यत्नपूर्वक अनुपालन करेंगी।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक आदरणीया तथा सम्माननीया महिला होंगी तथा समाज के सभी वर्गो के लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। नाना प्रकार के शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान होने के कारण समाज में एक विदुषी के रूप में भी आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। आपके अर्न्तमन में दया की भावना भी रहेगी तथा दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों के प्रति इस

भावना का आप पालन करती रहेंगी। आप के पति भी एक बुद्धिमान, गुणवान तथा धनाढ्य व्यक्ति होंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन समस्त सुखसंसाधनो का उपभोग करते हुए आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा।

श्रीमान्श्रछ्वणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप स्वभाव से ही अन्य लोगों से उपकृत होने पर उनके उपकार को स्वीकार करेंगी तथा इस कार्य के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। इस प्रकार की कृतज्ञता के भाव का प्रदर्शन करके आप अन्य जनो के मध्य उचित आदर प्राप्त करेंगी। आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय एवं आकर्षक रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित एवं आकर्षित रहेंगे। आपकी संतति संख्या अधिक होगी तथा आप सर्वगुणों से सुसम्पन्न रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आप ताम्र पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप राज्य या सरकार से नित्य धनलाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। साथ ही आप सन्तोषी स्वभाव से भी युक्त रहेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा। अतः सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। जीवन में विविध प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगी। माता पिता के प्रति आप पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी तथा उनसे भी आपको पर्याप्त धन सम्पत्ति प्राप्त होगी ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा विदुषी के रूप में आपका सम्मान होता रहेगा। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगी तथा वाहन एवं भूमि आदि जायदाद से भी सुसम्पन्न रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी तथा स्वभाव में साहस का समावेश रहेगा। आप परोपकार संबंधी कार्यों में भी में तत्पर रहेंगी तथा सज्जन पुरूषों का नित्य आदर करेंगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगी।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपके कद की ऊँचाई अधिक होगी तथा ललाट भी विस्तृत होगा। आपकी आखें देखने में सुन्दर होंगी एवं शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति आपके मन में नैसर्गिक रूप से ही विशेष आकर्षण रहेगा तथा इसका आप

विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सफल रहेंगी। आप शीत से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी तथा इसे सहन करने में अपने आपको असमर्थ समझेंगी। सत्य का आप सम्पूर्ण जीवन निष्ठापूर्वक पालन करने के लिए प्रयत्नशील तथा रूचिशील रहेंगी। धर्म में आपकी रूचि रहेगी परन्तु केवल अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करने के लिए आप इसका आचरण करेंगी। फिर भी समाज में सभी वर्गो के मध्य आपका मान सम्मान होगा तथा ख्याति भी दूर दूर तक फैली रहेगी। आप में क्रोध की मात्रा अल्प रहेगी एवं समयानुसार इसका प्रदर्शन करेंगी। आप सभी लोगों से समान रूप से प्रेम एवं स्नेह का भाव रखेंगी तथा घृणा या द्वेष की भावना किसी के प्रति भी अपने मन में नहीं रखेंगी। आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्तियों से मिलना तथा मैत्री संबंध स्थापित करना उचित समझेंगी। लेखन कार्य के प्रति रूचि रहने के कारण काव्य शास्त्र में आप सफलता प्राप्त करेंगी। पूर्ण उत्साह का आप में अभाव रहेगा तथा लालची प्रकृति होने से यदा कदा कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पति एवं पुत्र सहित परिवार के पालन में हमेशा व्यस्त रहेंगी। साथ ही आपकी कमर भी पतली होगी। आप शीघ्र ही दूसरे लोगों की बातों से सहमत हो जाएंगी तथा उनके कहे अनुसार ही आचरण भी करेंगी। इसके साथ ही आपका स्वभाव आलसी भी होगा अतः कार्यों में कभी कभी अनावश्यक विलम्ब होगा परन्तु भाग्य की प्रबलता आपके साथ रहेगी तथा कई महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल द्वारा सफल हो जाएंगे। आपकी भ्रमण तथा यात्रा में विशेष रूचि रहेगी। अतः आपका अधिकांश समय यात्रा तथा भ्रमण आदि में ही व्यतीत होगा। आप में मध्यम रूप से शारीरिक बल विद्यमान रहेगा तथा प्रकृति साहस एवं निर्भयता से युक्त रहेगी इसलिए कठिन कार्यों को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने की आपकी इच्छा निरन्तर बनी रहेगी। आपके मन में कठोरता का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं समयानुसार इस प्रवृति का प्रदर्शन भी करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त वायु से उत्पन्न रोगों से कई बार आप पीड़ित रहेगी एवं इनसे व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। साथ ही समस्त सत्वगुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवार में आपको सामान्य रूप से ही मान सम्मान की प्राप्ति होगी। लेकिन कुल की रीति को आगे बढाने में आप निरन्तर यत्नशील रहेंगी तथा समस्त मर्यादाओं का भी पालन

करेंगी। पति के ऊपर पूर्ण नियंत्रण रखने में आप सफलता अर्जित करेंगी तथा वे समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। नाना प्रकार के शास्त्रों के ज्ञानार्जन में रूचि होने के कारण आप परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगी तथा समाज में एक विदुषी के रूप में अपना प्रभाव स्थापित करेंगी। सज्जन एवं सुन्दर पुरूषों द्वारा आपको हमेशा आदर तथा प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। माता से आपका विशेष मोह तथा सम्मान का भाव रहेगा। आप पुत्रादि संततियों से युक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी। बन्धुवर्ग से आपका विशेष आदर होगा तथा आप भी उनकी पूर्ण सहायता करती रहेंगी। धन सम्पति की आप हमेशा स्वामिनी रहेंगी। साथ ही त्याग की भावना भी आप में रहेगी एवं अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी। आपका परिवार भी विस्तृत होगा तथा नित्य सुख की चिन्ता में आप लीन रहेंगी एवं सुख प्राप्ति के लिए भी हमेशा प्रयत्नशील तथा तत्पर रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आपको किसी तीसरे व्यक्ति की सम्पति प्राप्त होगी तथा आप सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगी। आप हमेशा लोगों के कल्याण के लिए भी चिन्तित रहेंगी एवं समय समय पर उनके लिए कल्याणकारी कार्यों को करती रहेंगी एवं नित्य उन्हें अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। सलाह देने के कार्यों में भी आप अत्यन्त ही दक्षता का परिचय देंगी। बन्धुवर्ग के पालन में भी आपकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में उनका पूरा साथ देंगी। इसके साथ ही समस्त शौर्य गुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा साहस पूर्वक जीवन यापन करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीत शास्त्र में अत्यानुराग होने के कारण आप इस क्षेत्र में विशेष सफलता तथा ख्याति प्राप्त कर सकेंगी। आप सुकान्ति एवं लावण्यमय शरीर से युक्त रहेंगी तथा इसके द्वारा आपकी सुन्दरता में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथा मधुरता से युक्त रहेगी।

आपकी बुद्धि सरल रहेगी। आप सुगमतापूर्वक अपने भावों को व्यक्त करेंगी तथा उसी प्रकार अन्य जनों के भावों को ग्रहण करने में समर्थ रहेंगी। आपको थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा एवं अच्छे बुरे की पहचान करने में भी समर्थ रहेंगी। आप स्वयं विद्वानों द्वारा वर्णित उत्तम गुणों से सुशोभित होंगी एवं जीवन में सर्वप्रकार के धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

आपका स्वरूप देखने में सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा। आपकी प्रवृति स्वाभाविक रूप से दानशीलता की रहेगी। अतः जरूरतमन्द लोगों तथा संस्थाओं को आप यथा शक्ति दान देती रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला भी होंगी एवं हमेशा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी। अनावश्यक भौतिकता की आप यत्नपूर्वक उपेक्षा करेंगी। इसके अतिरिक्त एक महान विदुषी के रूप में भी आप दूर दूर तक प्रसिद्ध रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में नैसर्गिक रूप से चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा। अतः आपके अधिकांश कार्य चपलता से ही सम्पन्न होंगे। आपकी मिष्ठान भक्षण में विशेष रूचि रहेगी तथा इस के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेगी एवं इसकी प्राप्ति के समय भी आप अत्यन्त ही आतुरता का प्रदर्शन करेंगी। आप की प्रवृति अन्य जनों से विवाद आदि की भी रहेगी। अतः परस्पर आपका विवाद या कलह प्रायः होता रहेगा। आपकी संततियां सभी गुणवान एवं बुद्धिमान रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इसके साथ ही आप एक साहसी एवं शौर्य गुणों से युक्त महिला भी होंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं

के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर, शकुनि करण तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी नियमित रूप से रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तेल, तिल, कम्बल एवं चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभफलों में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री मातृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर वजन में चांदी लेकर उसी दिन दरिया में बहा देवे।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग

हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ,

अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य तीसरे खाने में है। इसकी वजह से आपके ऊपर परिवार की अधिक जिम्मेदारियों का पता चलता है और आपकी बहादुरी का आभास भी मिलता है अर्थात् आप दूसरों की मदद जहां तक कर सकती हैं करेंगी तथा दूसरे लोगों के बर्ताव में आप कहां तक बहादुरी प्रकट सकती हैं करेंगी। आपके घर में आराम के साधन पूरे होंगे। आप उत्साही और फुर्तीली महिला हैं। आपकी दृष्टि की शक्ति अच्छी है। आप अपने घर में रखी पिस्तौल, बंदूक हथियार आदि सावधानी से रखें। आपके भाई-बंधु और रिश्तेदारों की आर्थिक दशा अच्छी रहेगी। आप अधिक धन खर्च करेंगी। आपके भाई-बहन कई होंगे। आपके पति के भाई की आर्थिक हालत अच्छी रहेगी। पति के भाई से अच्छे संबंध रहेंगे और उससे लाभ होगा। आप बाग-बगीचा और फलदार वृक्ष लगाएंगी। युवावस्था में आपको कलह से दूर रहना चाहिये। जवानी में बहुत तरक्की करेंगी। गणित और ज्योतिष विद्या में रुचि, सरकारी विभाग से लाभ, मुकद्दमें में जीत होगी।

यदि आपने परिवार वालों से झगड़ा किया, समाज में लोगों को गुमराह किया, ससुराल वालों को तंग किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आपके घर में चोरी या बीमारी की आशंका रहेगी। आपके शत्रु भी अधिक होंगे। आपकी किस्मत में उतार-चढ़ाव भी आ सकता है। आपके घर का मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा होना अशुभ है। आपका धन आपकी आंखों के सामने चोरी हो सकता है। ससुराल पर मंदा असर रहेगा। बिना लिखा-पढ़ी के आर्थिक लेन-देन से अशुभ फल होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोरी के माल से दूर रहें।
2. बुरे काम न करें।

उपाय :

1. माता-सास का आर्शीवाद लेवें।
2. परपुरुष से अनैतिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुल की नैया पार लगायेंगी। आपको चीर-फाड़ के या सर्जिकल के सामान से अधिक लाभ होगा। आप चिकित्सक होकर भी डॉक्टर का काम नहीं करेंगी। यदि डाक्टर बन कर डाक्टर का कार्य करती हैं तो अपने पास से दवाई न देवें। आपको माता-पिता/सास-ससुर का पूरा सुख मिलेगा। आपको मकान और ससुराल वालों से लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

यदि आप डाक्टर हैं और पास से रोगी को लिक्विड दवाई दी, समाज विरोधी कार्य किये, बड़े-बुजुर्गों का अपमान किया, रात के समय अपने मकान की नींव रखी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपके प्रेमी या विधुर पुरुषों के कारण धन की बर्बादी होगी। आप अपने जीवन में धोखेबाज और तैरते को पानी में डुबाने वाली होंगी। आपको दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ सकता है। किसी भी पुरुष के साथ नाजायज संबंध आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपका मां/सास से अच्छा सलूक नहीं रहेगा। दवाई के व्यापार से हानि होगी। आपको चोर-डाकू, जुआरी एवं शराबी लोगों से नुकसान हो सकता है। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है। आपकी माता/सास को 10 वर्ष बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू से संबंध न रखें।
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

उपाय :

1. दूध को फटा कर दूध का पानी पीयें (खराब सेहत के समय)
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होती हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जानी-मानी समाज सेविका होंगी। आप अवश्य ही धनवान होंगी। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद की मालकिन बनेंगी। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त या शाही जीवन बिताएंगी। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगी। आपके जन्म के बाद, आपके पिता/ससुर की माली हालत अच्छी होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगी और आप कई मकान की मालकिन होंगी। आप अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगी। आप सोना बेचेंगी तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का

लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर गिर कर, न जले।

उपाय :
1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काले, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से सुख प्राप्त होगा। सरकार द्वारा मान-सम्मान भी प्राप्त होगा। राजसुख प्राप्त होगा। आप लेखक संपादक या एक कुशल व्यवसायी भी होंगी। आप अपने जन्म स्थान के आस-पास ही नौकरी-व्यापार करेंगी। आप भाग्यवान हैं। आपके परिवार, दौलत तथा आपकी उम्र तीनों पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। राजयोग के प्रभाव से आप सरकारी नौकरी में रहेंगी या सरकार से लाभ प्राप्त करेंगी। जीवन व्यस्त परंतु पूर्ण सुखी रहेगा। सुख के सभी साधन उपलब्ध होंगे। निजी भवन और वाहन की प्राप्ति के योग हैं। आप हुनरमंद और कलाकार होंगी। जीवन में बुद्धिमत्ता से काम लेना पड़ेगा। विदेश की यात्रा या आयात-निर्यात के कामों से अधिक लाभ होगा। बहन-मौसी से लाभ होगा।

यदि आपने विधुर या अविवाहित पुरुष से संबंध रखा, लड़की, बुआ, बहन-ननद के धन का उपयोग किया, माता/सास का विरोध या कष्ट दिया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से सब प्रकार से आपको मां/सास का प्यार कम मिलेगा। माता/सास के लिए अरिष्ट सूचक योग है। यदा-कदा आपका मनोबल क्षीण हो जाया करेगा। परंतु आपको घबराना नहीं चाहिए। आपको किसी से गलत मंत्रणा मिल सकती है। पति सुख, धन-दौलत और गृहस्थ सुख पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. ननद-मौसी से झगड़ा न करें।
2. विधुर या अविवाहित पुरुष से संबंध न रखें।

उपाय :
1. तांबे का पैसा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।
2. केसर का तिलक करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दीर्घायु, धनवान रहेंगी। आपकी और आपके पिता/ससुर की लंबी आयु होगी। आप चरित्रवान, शील स्वभाव से अच्छी, विवेकी एवं पूरे परिवार की विपत्ति को अपने सिर पर लेने वाली होंगी। धन और आयु वृद्धि होती रहेगी। अधिक कठिनाई में ईश्वर आपकी मदद करेंगे। आप आध्यात्मिक एवं गुप्त विद्या की माहिर होंगी।

यदि आपने दूसरे के धन का उपभोग किया, भलाई करने वाले का बुरा किया, दीन-दुःखियों को सताया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपको अपने पिता/ससुर से हमेशा दूर रहना पड़ सकता है। आप पिता/ससुर से अलग रहे तो आपका समय खराब होगा। आप अफवाहों की शिकार बनेंगी। आप यदि साध्वी हो जाएं तो दुःखी रहेंगी। आपके परिवार में कई प्रकार की मुसीबतें पैदा हो सकती हैं। कभी-कभी आपके हौसले मंदे पड़ जाएंगे। आपको मूत्र रोग आदि बीमारी या मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बार-बार जन्म लेना पड़ सकता है। मोक्ष मिलने की उम्मीद कम है। आपके कामों में अड़चनें आएंगी। आपके शरीर में सुस्ती रहेगी या हर समय मन बुझा-बुझा सा रहेगा। कोई दुर्घटना या बड़ी मुसीबत का योग बन सकता है। आप अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य कर बैठेंगी जिससे आपको बहुत पछतावा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आवारा साधू का साथ न रखें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. शरीर पर सोना पहनें।
2. दही, आलू, घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपके घर में कभी चोरी नहीं होगी। आपका पति सच्चरित्र होंगे और आप स्वयं भाग्यवान रहेंगी। पति जीवन भर आपका साथ निभांएगे। आप अपने पति से दब कर रहेंगी। आपकी संतान अधिक होंगी। आपको तीर्थ यात्राएं बहुत करनी पड़ेंगी। आप सभी की प्रिय होंगी। धन का व्यय अधिक करेंगी। कभी-कभी अधिक लाभ भी होगा। आपके पति आपके सभी कार्यों में हाथ बटाएंगे या पति के नाम से किये कार्यों से लाभ प्राप्त होगा। पति, लक्ष्मी, गाय की सेवा से अच्छा फल प्राप्त होगा। आप दूसरे पुरुषों पर आशिक होंगी। शत्रु आपका नुकसान नहीं कर सकेगा। कोई भी पुरुष आप पर मोहित हो सकता है। आपको कम परिश्रम करके ही रोटी नसीब हो जाएगी। आपकी

आमदनी अच्छी होगी। आप सभी सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगी, परंतु सुख की नींद नहीं सो सकेंगी। माता-पिता/सास-ससुर का सुख लंबे समय तक मिलेगा। आप कमाऊ महिला होंगी, पति के कंधे से कंधा लगाकर मुसीबत में साथ देंगी।

यदि आपने एक से अधिक पुरुषों से संबंध रखे, बुजुर्गी घर के मुख्य दरवाजे की दहलीज को नष्ट किया, राग-रंग में रुचि रखी तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपका कई पुरुषों से संपर्क रहेगा। आप अपने पति का क्रोध एवं साहस देख कर हैरान होती होंगी। आपके जीवन में भवन सुख दूषित है। यदि मकान बनाएं भी तो वह घर उजड़ सकता है। माता/सास के सुख में बाधा है यदि आपकी आयु के 34वें वर्ष तक मां/सास जीवित रहेंगी तो उसकी दीर्घायु होगी। आप दुःखी लोगों और मुसीबतों से घिरी रहेंगी। धन-दौलत, उम्र बढ़ने के साथ-साथ घटती जाएगी। यदि आपकी सौतेली माता हुई तो उससे कोई लाभ नहीं होगा। ससुराल पक्ष से यदि कोई साझेदारी करें या वे लोग आपके काम में सहयोग करें तो हानि होगी। आपके भाई-बंधुओं के हाथों धन की हानि होगी। पैतृक संपत्ति आपके काम नहीं आएगी। आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बुजुर्गी घर की दहलीज को खराब न होने देवें।
2. राग-रंग में रुचि न रखें।

उपाय :

1. पति की सेवा करें।
2. मंगल की चीजों का प्रयोग करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पैतृक संपत्ति और ससुराल से लाभ रहेगा। आप मान-प्रतिष्ठा से युक्त होंगी। आप ईश्वर भक्त और पूजा-पाठ करने वाली होंगी। आप आजन्म मुखिया बनी रहेंगी। कमाई और खर्चा बराबर होगा। आप अपने पहले पुत्र का लालन-पालन अपने पिता को सौप दें तो आपके लिए फायदेमंद होगा। आपको जीवन में जीने की इच्छा प्रबल रहेगी। आप बाहर से देखने में प्रभावशाली नहीं लगेंगी परंतु आप शक्ति और अक्ल में बहुत बलवान होंगी। कभी-कभी आप इस दुनिया से सन्यास लेने को भी उत्सुक हो सकती हैं। आपको माता/सास का पूर्ण सुख मिलेगा। पिता/ससुर के सुख में न्यूनता आ सकती है। आप में अक्ल की बारीकी और आध्यात्मिक शक्ति होगी। कोयला, चमड़ा, मकान-मशीनरी के कामों से अधिक लाभ होगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का सेवन किया, सांप को मारा या सांप के जहर बेचने या प्रयोग करने से संबंधित कार्य किये या कानी भैंस पाली तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप विचारों की

कच्ची, मुर्दादिल और पस्त हौसले वाली होंगी। 28वें और 39वें वर्ष की आयु रोग और बीमारी में बीत सकती है। आपकी किसी के साथ दुश्मनी भी हो सकती है। आपका तंबोला आदि खेलना आपके ससुराल के लिए बुरा हो सकता है। आपके विवाह के समय ससुराल में अग्निकांड हो सकता है। विद्या अधूरी रहे, ऐसी आशंका है। सगाई के दिन से ससुराल को हानि होना शुरु हो जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. माथे पर तिलक की जगह सरसों तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

उपाय :

1. नंगे पैर धर्म स्थान में जावें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शील संपन्न, अच्छे स्वभाव की, शूरवीर, साहसी होंगी। आपका हर काम सराहनीय होगा। आपके उच्च विचार होंगे। आपको सबसे यथोचित सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारखाने की मालकिन होकर या उच्च पद पर रहकर बहुत बड़ी संपत्ति कमाएंगी। आपके जीवन में राजयोग रहेगा और अच्छा सुख प्राप्त होने की उम्मीद है। आप निश्चित ही बड़ी व्यापारी और धनवान होंगी। फिजूल के खर्चों से सावधान रहें। धन-दौलत का अच्छा असर रहेगा। सिर के बाल जल्दी सफेद हो जाएंगे मगर उनको डाई न करें। आपका चरित्र बहुत ऊंचा होगा।

यदि आपने अपना सिर नंगा रखा अर्थात् सिर पर टोपी/पगड़ी न रखी, मौके के आफिसर से झगड़ा किया, अपने परिवार को तोड़ा तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से माता-पिता/सास-ससुर को कष्ट की आशंका है। शरीर में कोई विकार उत्पन्न होगा। धन-संपत्ति का नुकसान हो सकता है। आपमें कोई न कोई व्यसन विद्यमान हो सकता है, सावधान रहें। आप अपने हाथों संपत्ति को बेच भी सकते हैं। आपकी तंगदिली से दूसरों के साथ बैर पैदा हो सकता है। परिवार के लोगों से अनबन रहेगी। माता/सास के लिए कष्टकारक समय भी आ सकता है। आंखों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है। सिर दर्द से आपकी परेशानी बढ़ सकती है। कोई काला आदमी आपकी धन-संपत्ति का नाश कर सकता है। ऊंची जगह से गिरने का भय, सरकारी अधिकारी से झगड़ा करने पर जुर्माने आदि का भय रहेगा तथा बीमारी पर धन का खर्च हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़े अर्थात् नंगा सिर न रखें।
2. मौके के अधिकारी से झगड़ा न करें।

उपाय :
1. सिर पर टोपी सफेद-शरबती चुनरी जरूर डालें।
2. जौ अंधेरी जगह में बोझ के नीचे दबायें।
3. मीठा भोजन अंधों को बांटें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के चाथे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप पूर्ण आस्तिक होंगी। हर काम धीरज के साथ करेंगी। सभी के साथ आपका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहेगा। आप आशावान, गुरु और पिता/ससुर की सेवा में संलग्न, चरित्रवान और जो मिले उसी में संतोष प्राप्त करने वाली होंगी। आपकी कन्या भाग्यवान और आपके लिए लक्ष्मी स्वरूपा होंगी। कन्या के जन्म के बाद आपका घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा। आपको पिता/ससुर का लम्बे समय तक सुख मिलेगा। पिता/ससुर और गुरु की भक्ति करने वाली होंगी। आपको जायदाद संबंधी कानूनी समस्या खड़ी हो सकती है। आप स्वयं एवं आपके पुत्र दीर्घायु होंगे।

यदि आपने कुत्ते को मारा या किसी दूसरे से मरवाया, कुत्ता पानी में गिराया, कुल पुरोहित से झगड़ा किया या उससे नाता तोड़ा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो देर से संतान पैदा होगी या संतान सुख में कमी बताता है। पुत्र संतान की अपेक्षा कन्या संतान अधिक होंगी, ऐसी आशंका है। पुत्र जन्म के बाद माता/ससुर को कष्ट की आशंका है। मधुमेह रोग की आशंका है। रीढ़ की हड्डी, पेशाब की बिमारी होगी ऐसी आशंका है। दुर्घटना या ऊपर से गिरने का भय है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. कुत्ते को चोट न मारें।
2. माता/सास से दूर न रहें।

उपाय :
1. चने की दाल, केसर धर्मस्थान में देवें।
2. कुल गुरु या कुल पुरोहित का आशीर्वाद प्राप्त करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि चतुर्थ स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा कार्य व्यवसाय में अच्छा लाभ होगा। व्यापार में बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर सफलता प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च के बाद द्वादस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। इस समय के अंतराल में कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो 14 मई के बाद लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगा जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। रत्न आभुषण इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का योग बन रहा है। 30 मई के बाद राहु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है उस समय आपको अचानक धन लाभ होगा जिससे आपको पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना होने से सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 14 मई के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे और समाजिक उत्थान के लिए कोई संस्था का संचालन भी कर सकते है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगा। 14 मई के बाद दूसरी संतान के लिए समय बहुत उत्तम है।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं। तो गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में बच्चों के साथ भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं।

समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

29 मार्च से समय बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बेरोजगार लोगों को रोजगार मिलने का प्रबल योग बन रहा है। गुरु के गोचर के बाद सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक मेहनत करनी पड़ेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधनी बहुत जरूरी है, क्योंकि 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि सम्पन्न करेंगे एवं तीर्थ यात्रा कर

पुण्यार्जन भी करेंगे।

• शनिवार के दिन सुबह-सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
• बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः मन्त्र का पाठ करें।
• नित्य प्रति हनुमान चालीस का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अतः आपका धनार्जन पूर्ण मात्रा में होगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग तथा सामाजिक लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। सन्तति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित होता रहेगा। आपकी बुद्धि में इस मास निर्मलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही समय आप यात्रा से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको सम्मान प्राप्त होगा तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप वांछित सहयोग अर्जित करेंगी एवं उनसे आपके मधुर संबध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र सम्माननीया रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख अर्जित करेंगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। इस प्रकार समस्त सुखों से युक्त होकर आप समाज से यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आप प्रोन्नति भी प्राप्त कर सकती है। मित्रों एवं बन्धुओं से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्राप्त करेंगी तथा उनके कल्याण संबधी कार्यो में भी तत्पर रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही अन्य साधनों द्वारा भी आप धनार्जन करेंगी तथा अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं को इस समय पूर्ण करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपने शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में यात्रा के द्वारा भी लाभ प्राप्त करेंगी। इस समय आपको नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या स्वर्णाभूषणों की उपलब्धि भी हो सकती है।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय सौभाग्य से आप युक्त रहेंगी तथा पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप इच्छित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगी। बन्धुवर्ग एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही वे आपको अपना पूर्ण सहयोग भी प्रदान करेंगे। इस समय आप वांछित द्रव्यों को प्राप्त करेंगी एवं उनके उपभोग से सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगी तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप पति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा उनसे आपको अपेक्षत सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा वांछित धन लाभ तथा सुख अर्जित करने में आप सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आपको समाज से पूर्ण सम्मान तथा यश प्राप्त होगा एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका व्यय अधिक होगा तथा दुष्ट व्यक्तियों से आपका मेल जोल रहेगा जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगी ।साथ ही धनाभाव की समस्या भी उत्पन्न होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आप बैचेन तथा अशान्त रहेंगी। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम के उपरान्त भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का भी उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि के योग बन सकते है। इस मास में आपके मित्र तथा बन्धुवर्ग से अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे। शत्रु पक्ष से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। फलतः कष्ट पूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगी।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी तथा आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी आप इस मास में कर सकेंगी।

मई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आाप शारीरिक रूप से सामान्यतया स्वस्थ रहेंगी तथा मानसिक रूप

से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आपके आय स्त्रोंतो में इस समय उन्नति होगी फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ रहेगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष दुर्बल रहेगा एवं आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेगा। इस समय आप अपने उच्चाधिकारी वर्ग से सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। अपने प्रमुख कार्य के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोंतो से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस मास में समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे।आपके सौभाग्य में भी इस समय वृद्धि होगी तथा कई विलम्बित महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। अतः आप यदा कदा गर्मी या पितदोष से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय किसी किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त अग्नि के कारण भी कोई हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए तथा शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

जून 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह से प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में सफल रहेंगी। सामाजिक जनों के मध्य इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही पारिवारिक लोगों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे उचित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा।उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सम्मान अर्जित करेंगी तथा आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होते रहेंगे। इस समय आपकी मिष्ठान्न भक्षण में भी अधिक रूचि रहेगी। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस मास में शत्रुपक्ष आपसे पराजित, भयभीत तथा चिन्तित रहेगा तथा व्यापार एवं अन्य कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल सिद्ध होंगी। इस प्रकार आपका पारिवारिक जीवन भी सुखी तथा शान्त रहेगा।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या स्वर्णादि के आभूषणों को भी अर्जित करने में सफल हो सकती हैं। अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फलों को भी प्राप्त करेंगी। इस समय आप स्व पराक्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुख का उपभोग भी करेंगी। सामाजिक जनों के मध्य इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही

आप सामाजिक लोगों के परोपकार संबधी कार्यों को भी इस मास में सम्पन्न करेंगी। आपका स्वास्थ्य इस समय सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगी। आपके मित्रों तथा बन्धुओं से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी। अतः आप वात जनित या ठंड से उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी इसके अतिरिक्त आग द्वारा भी आपको किसी प्रकार की क्षति हो सकती है। अतः सोच समझकर सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी जिससे आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करती रहेंगी। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। साथ ही मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी। इस मास में आपकी नौकरी या व्यापार में मंदी आयेगी तथा अनावश्यक बाधाएं भी उत्पन्न होंगी जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान होंगी। इसके साथ ही आपका कोई जीविका संबधी कार्य बंद होगा या उसमें कोई परिवर्तन होगा। समाज में लोगों से भी आपके विवाद तथा संघर्ष होते रहेंगे अतः आपके सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि एवं शरीर में किसी रोग के उत्पन्न होने की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में आप ठण्ड या बात से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे बाद में पछताना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि द्वारा भी आपको किसी प्रकार की हानि पहुँच सकती है। अतः इस मास में सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में वृद्धि होगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगी। सन्तति पक्ष से आपको इस मास में पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ की भी संभावना बनेगी। आपके प्रभुत्व को इस समय सभी लोग स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। साथ ही अच्छे समाचार आपको मिलेंगे। इस समय आपके सभी सांसारिक कार्य पूर्णतया सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा निष्ठा पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करती

रहेंगी। इसके अतिरिक्त सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा एवं इनसे धनार्जन भी प्रचुर मात्रा में होगा।आपकी महत्वपूर्ण आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्रों से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। इस समय आप नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण भी प्राप्त करने में सफल रहेंगी। अतः यह माह आपके लिये अत्यंत शुभफलदायक रहेगा तथा आप सुख पूर्वक इसे व्यतीत करेंगी।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों को ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर से आप कमजोर रहेंगी। साथ ही शत्रुपक्ष के बलवान होने के कारण आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। अतः सावधान रहने की आवश्यकता रहेगी। इस मास में आप अपने उच्चाधिकारियों का पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा उनसे आप किसी प्रकार दंडित भी हो सकती है।आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य इस मास में कम ही सफल होंगे तथा असफलता ही अधिक मिलेगी। इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकती है जिसके बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। आपके बन्धु एवं मित्रों से इस समय संबध तनाव पूर्ण रहेंगे एवं मधुरता का अभाव रहेगा। साथ ही समाज में भी आपके सम्मान में कमी आएगी। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पित से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार का भय भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आपको किसी प्रकार की क्षति या नुकसान हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक आप अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अल्प तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति या पुरूष वर्ग से आप कष्ट की अनुभूति करेंगी तथा शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भी नित्य भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में होगा।साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। जिससे आप मानसिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा धनाभाव की समस्या का भी सामना करना पड़ेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लालच की प्रवृति में वृद्धि होगी। फलतः सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से तनाव पूर्ण संबध होने के कारण उनसे भी आपको कोई सहयोग प्राप्त नहीं होगा तथा वे मित्र होकर शत्रु की तरह आपसे व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका सामाजिक जनों से वाद विवाद भी होगा। अतः

धैर्यपूर्वक समस्याओं का सामना करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप पति तथा बन्धुओं से सहयोग प्राप्त कर सकेंगी तथा अपनी बुद्धि के द्वारा महत्वपूर्ण कार्यो को भी सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचि का प्रदर्शन करेंगी।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप मध्यम रूप से व्यतीत करेंगी तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा। अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही धर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। इस महीने में आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक कष्ट की अनुभूति करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा ही रहेगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक एवं मानसिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी जिससे शरीर में दुर्बलता भी रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्राएं भी कर सकती है। इस समय आपके सांसारिक कार्यो में व्यवधान उत्पन्न होंगे फलतः इनमें आपको अल्प सफलता ही प्राप्त होगी। इसके कारण आप मानसिक रूप से तनाव तथा अशान्ति का अनुभव करेंगी। इसके अतिरिक्त मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है। अतः बुद्धिमता पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की अभिवृद्धि होगी जिसके कारण महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त धन भी आप प्रचुर मात्रा में अर्जित करेंगी तथा धर्मानुपालन में प्रवृत रह कर समाज में यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में न्यूनाधिक सफल रहेंगी।

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादशभाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि सेवर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नही होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिसके फलस्वरूप आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि सेयह वर्ष सामान्यरहेगा।एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान केशनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक ब्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको भुमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है।31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपने बच्चे की शिक्षा पर धने खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहींरहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा।तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा।

सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान मेंगुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे।आपको मित्रोंका भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा है।यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा हैयह समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा।द्वादशस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित भोजन अपनायें व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होनाशुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों कीअध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावनासफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातकों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथलम्बी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकीविदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सुख एवं सौभाग्य को प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आपके उच्चाधिकारी भी इस मास में आपसे पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे। इस समय आपके घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। संतति पक्ष से इस मास में आपको सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगी। इस मास में आपका यश भी समाज में दूर दूर तक व्याप्त रहेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की कोई लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे वांछित सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा सम्मान में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों एवं उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी तथा आपके कार्य क्षेत्र में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्यों की प्राप्ति करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण सफलता तथा लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। अपने उच्चाधिकारी वर्ग को इस समय आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफल रहेंगी अतः कार्य क्षेत्र में विशेष उन्नति मिलेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथ उनसे वांछित सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही उनकी भलाई भी आप यत्नपूर्वक करती रहेंगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी समय में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इस मास में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक जन आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। आपका यश भी समाज में इस समय दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। इसके अतिरिक्त इस महीने में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकती हैं।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा आपकी अधिकाशं मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी। इसके साथ ही धन एवं सुख का उपभोग करते हुए प्रसन्नता पूर्वक आप इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगी।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सर्व प्रकार के शुभ फलों को अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप लाभार्जन तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। अतः आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न हो जाएंगे। साथ ही आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी फलतः मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित लाभ प्राप्त करेंगी। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन करने के लिए आपके मन में इच्छा उत्पन्न होगी। मित्र एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होगा एवं आप मनोवांछित द्रव्यों को इस समय अर्जित करेंगी। संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा रहेगी एवं पूर्व विलम्बित संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। इस समय आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं बुद्धिमता पूर्वक आप धन तथा सुख को प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म के अनुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा समाज एवं बन्धु वर्ग में पूर्ण रूप से आदरणीया रहेंगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा तथा दुष्ट लोगों की संगति प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय आपके कार्य पराक्रम एवं अत्यंत परिश्रम करने के बाद भी अल्प मात्रा में ही सफल होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी।धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक मात्रा में विद्यमान रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकती हैं। बन्धुओं एवं मित्रों से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। अतः इनसे आपको किसी विशेष प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगी उनमें अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस समय प्रबल रहेगा तथा उससे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी इच्छित आशाएं भी इस समय पूर्ण नहीं होगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः आप इस मास में सतर्कता पूर्वक बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सुख तथा शान्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय शरीर से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगी एवं मन से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी फलतः शत्रु आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके लाभ मार्ग

भी नित्य प्रशस्त रहेंगे। इस समय आर्थिक स्थिति पूर्णरूप से सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करती रहेंगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सफल होंगे तथा विलम्बित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में भी सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। अपने मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको वांछित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा इनकी ओर से निश्चिन्त रहेंगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र तथा वस्तुओं को प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगी। अतः यह मास आपके लिए सौभाग्यशाली रहेगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अत्यधिक उत्साह के साथ धनार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही समाज से भी आप को पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा यश भी दूर दूर तक फैलेगा। इस समय परिवार एवं मित्रजनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही इनसे आप मान सम्मान भी अर्जित करेंगी। उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य को भी सिद्ध करने में भी सफल रहेंगी। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय आप भोजन में मिष्ठान्न का अधिक उपयोग करेंगी। आपका शत्रुपक्ष इस मास में क्षीण रहेगा अतः उनको पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। पति से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी तथा व्यापारिक कार्यो से अतिरिक्त आय एवं लाभ अर्जित करने में आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातोत्पन रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त करेंगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुखोपभोग करने में भी समर्थ रहेंगी। सामाजिक जनों से इस मास में आपको पूर्ण यश तथा प्रतिष्ठा मिलेगी एवं सभी लोग आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही दूसरे लोगों के परोपकार संबधी कार्य भी आपके द्वारा सम्पन्न होंगे। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा अपने

शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपके बन्धु एवं मित्रों से इस समय मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी इच्छाएं भी इस समय में पूर्ण होंगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होगा।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे। अतः आप शीत से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप न्यूनाधिक मात्रा में हानि प्राप्त कर सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी तथा शुभ फल अत्यल्प मात्रा में होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा नाना प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस मास में शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी तथा वे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में मन्दी आएगी या कोई कार्य छूट सकता है या बन्द हो सकता है। इसके साथ ही कार्य क्षेत्र में आप परिवर्तन भी कर सकती हैं। सामाजिक लोगों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा तथा यदा कदा वाद विवाद भी होगा जिससे आपके समाजिक सम्मान में न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी अर्जित करेंगी। इससे आप पति एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इस मास में नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित कर सकती हैं।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य पदार्थो को अर्जित करेंगी तथा पुत्र से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी इस मास में आप रूचिशील रहेंगी। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस मास में आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा शुभ समाचारों को भी आप प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा उचित लाभ प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा पूर्ण रूप से मानसिक शान्ति प्राप्त करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी प्रकार से रक्त विकार की संभावना भी रहेगी। अतः अपने समस्त कार्यो को सावधानी पूर्वक सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फल शुभ फलों की अपेक्षा अधिक अर्जित करेंगी जिससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी। इस समय शत्रुपक्ष से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी एवं उनसे आप अनावश्यक कष्ट भी प्राप्त करेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है। अतः सतर्क रहना श्रेयस्कर रहेगा। इस समय आपको उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पूर्ण पालन करना चाहिए तथा किसी भी प्रकार से उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अन्यथा आप दण्डित हो सकती हैं। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे। साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आप आर्थिक रूप से परेशान रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगी जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे विशेष सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगी तथा आपकी आशाएं भी कम ही पूर्ण होगी। अतः धैर्यपूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। अतः आप पति से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धि के कौशल से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुखार्जन करने में सफल रहेंगी। साथ ही समाज में आप यश प्राप्त करने में भी समर्थ हो सकेंगी।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपके पति तथा बन्धुवर्ग किसी भी प्रकार से कष्ट प्राप्त करेंगे या आपको कष्ट देंगे। आपके शत्रु इस मास में बलवान रहेंगे तथा आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। अतः आप इनसे चिन्तित एवं भयभीत रहेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा मन में लोभ के भाव की वृद्धि होगी।साथ ही धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा। अतः धनाभाव से भी आप दुःखी रहेंगी। इस समय आपके उत्साह में कमी आएगी तथा शरीर में निर्बलता भी रहेगी। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही ऐसे समय में मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से भी कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। इस समय पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी आप का विवाद होता रहेगा।अतः संयम पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे पुरूष वर्ग से आपको पूर्ण लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा अपनी बुद्धि से आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों

को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी तथा अन्य प्रकार से भी धनार्जन एवं सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। अतः शत्रु पक्ष से आप दुःखी रहेंगी एवं उनसे चिन्तित तथा भयभीत भी रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे धनाभाव से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस समय कई प्रकार से बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा कार्यो में सफलता अल्प मात्रा में ही मिलेगी। धर्म के प्रति आपके मन में सामान्यतया उपेक्षा का ही भाव विद्यमान रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही इस मास में आप दूर समीप की यात्रा भी सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में आप परिश्रमपूर्वक सफलता प्राप्त करेंगी तथा मुकद्दमे आदि में भी धन व्यय होगा। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल भी अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपको पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा एवं बुद्धिबल से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगी एवं समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगी।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश में आजाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकते हैं जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं जिससे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति या स्थानान्तरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे परन्तु 26 नवम्बर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप के कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समय के अंतराल में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केशनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाए नहीं तो नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा। सब लोगों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठ में वृद्धि होगी। 26 नवम्बर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा, उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति सन्तान की रूचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान के इच्छुक दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है। वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य सन्तान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए

आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु अस्थिरता की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनिपर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भण्डारा इत्यादि भी करेंगे। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी और आप अध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मन्त्र, पाठ एवं यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करेंएवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा एवं आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुके या फंसे हुए पैसे भी मिल सकते हैं। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से पैसा बचाना शुरु कर दें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाईयों का सहयोग

मिलेगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु 28 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो जायेगा ।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान पान पर ध्यान दें नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां होती रहेंगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। कभी-कभी बीमार नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। शारीरिक व्याधिओं को दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यवसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगारों जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बहुत जरूरी है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वन्दता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ दान पुण्य कम ही कर पाएंगे। 28 फरवरी के बाद पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। मन्त्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगे। गुरु के दिये गये उपदेशो का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, सन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। या शनि मन्त्र का जाप करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी नये कार्य में भाग्य आजमा सकते हैं। अचानक बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे परन्तु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियन्त्रण पा लेंगे। मार्च से अगस्त तक समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय फिर से अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों के आय के स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या बड़े लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा जिससे आप कार्यों में बहुत उन्नति करेंगे। काम-काज में पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक उन्नति होगी। इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में आपका व्यय होगा। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर अंकुश लगाएं नहीं तो अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होगा जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद आपका मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगे। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगे परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के है तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता हैं। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। अचानक आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उनको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्राए होंगी।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभाविता हो रहा है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व शनि मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि प्रथम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं अष्टम में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

आजीविका के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान के शनि आपको आलसी बना सकते हैं। कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। व्यापार में हानि या किसी से धोखा मिल सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखें व सतर्क रहें और किसी पर भी बहुत ज्यादा विश्वास न करें। अपने आत्मविश्वास को बनाए रखें।

1 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको अच्छा लाभ मिलेगा। इष्ट मित्रों या सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। साझेदारी के लिए यह समय अनुकूल है। कानून से जुड़े लोग जैसे वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे फिर भी बड़े अधिकारियों से निश्चित दूरी बनाए रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। धनागम में कमी व मानसिक कष्ट भी हो सकता है। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। लग्न स्थान के शनि शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय करा सकते हैं। अतः अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहें। 17 अप्रैल के बाद आपके संचित धन में भी कमी आ सकती है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नही तो आपका पैसा फंस सकता है, क्योंकि अष्टम स्थान में राहु-गुरु चण्डाल योग बन रहे हैं।

01 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने से आपके आय स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार में उन्नति व उम्मीद से अधिक लाभ की संभावनाएं बन रही हैं। आपको मित्र व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर पैसा खर्च हो सकता है। नई संपत्ति क्रय-विक्रय करने के लिए अभी समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष की शुरुआत पारिवारिक अनुकूलता के लिए शुभ नहीं रहेगी। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा। आपके माता-पिता का

स्वास्थ्य अच्छा नही रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध खराब हो सकते हैं। ऐसी विपरीत स्थिति में आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे जिससे समाज में आपका कद और बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

01 मई से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपकी संतान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपकी संतान अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेगी। वे परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे आपकी दूसरी सन्तान के लिए यह समय बहुत शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करें व खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

अप्रैल के बाद तकनीकी शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आपकी सारी यात्राएं अकस्मात् ही होंगी।

अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे। लग्नस्थ शनि एवं नवमस्थ राहु आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित कर सकते हैं। पूर्व से निर्धारित कोई धार्मिक कार्य करना चाहते हैं तो वह भी निरस्त हो सकता है। 01 मई के बाद सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को राहु तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर अथक प्रयास करने की आवश्यकता है। क्योंकि इस वर्ष भाग्य आपका साथ नहीं देगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

वर्ष के उतरार्द्ध में कुछ गलत फहमियों के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालाँकि 15 अक्टूबर के बाद आपका ग्रह गोचर अनुकूल हो रहा है। आपके काम करने का तरीका सबसे अलग है इसलिए यह आपके व्यक्तित्व को सबसे जुदा करता है और आपके इस तरीके से कई अधिकारी प्रभावित है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। यह साल जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें। आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

जून के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसे खर्च हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आप अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। जून से सितम्बर तक का समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। सितम्बर के बाद घरेलू वातावरण में अनुकूलता आना शुरु हो जाएगी।

15 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य में

उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से रहना चाहिए अन्यथा गर्भपात भी हो सकता है।

18 फरवरी के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। जून के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने बच्चों पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी। आप स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ नहीं है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 18 फरवरी के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में कोई अड़चन नहीं आएगी। अध्ययन कार्य में आपकी रूचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 15 अक्टूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के शुरु में आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे। कुछ समय के लिए प्रवास भी कर सकते हैं। 15 अक्टूबर के बाद विदेश जाने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होगा। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा। जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत बढ़िया हो रहा है।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करे।
- हनुमान चालीसा या दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं द्वितीय भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं तृतीय में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशिएवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरु का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तसस्थ राहु एवं द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता हैपरन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

12 अगस्त से आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों कापदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि सेवर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर ही उसमें निवेश करें क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होती। 5 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन किया हो तो इस समय के अंतराल में आपको ऋण मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधाओं पर भी अधिक खर्च करेंगे।

23 अक्तूबर से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा।

31 मई से समय आपके छोटे भाई-बहनों के लिए काफी शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग मिलेगा। 12 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि

होगी। गुरु की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। पिताजी के लिए यह समय लाभप्रद सिद्ध होगा। संतान के विवाह आदि का भी शुभ योग बना हुआ है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों कीशिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

आपकी सन्तान के विवाह का पूर्ण योग बन रहा है। भाग्योदय तथा धर्म कार्यों में रुचि के साथ-साथ यात्राओं का योग बना हुआ है। आप अपनी सन्तान के सौभाग्य व सुख से प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं क्योंकि लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगी जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा।शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

12 अगस्त से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अतिसक्रिय बने रहेंगे। सुबह-शाम के सैर-सपाटे या नियमित अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। अभ्यास से आपके अन्दर की ऊर्जा का प्रवाह होगा और दूसरें कार्यों में पूरी तरह से ध्यान केन्द्रित करने में सहज महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मई के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

सप्तमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय प्रतिकूल रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी यात्राएं होती रहेंगी। 05 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

31 मई के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकीविदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों कीउन्नति कारक यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थगुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 5 मार्च के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। 31 अगस्त के बाद आप दान, पुण्य करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष श्रेष्ठमत रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली कहावत आप पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होगी। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी। साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए 18 मार्च से पहले का समय बहुत ही शुभ है।

आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय, या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष भर आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी बनाएंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्नाभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं कि प्राप्ति होगी। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए उत्तम हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंग। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक माहौल काफी अच्छा रहेगा। आप अपनी घरेलू जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। 5 मार्च से आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। अविवाहित व्यक्तियों के लिए विवाह के संकेत हैं। विवाहित व्यक्तियों हेतु संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपका आत्म-सम्मान बढ़ेगा।

आपके भाई-बहनो के लिए समय बहुत शुभ है। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि

होगी। मातुल पक्ष के लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य भी संपन्न होते रहेंगे। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आपको उनके ऊपर अभिमान होगा। उनकी कामयाबी से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपके अन्दर दृढता और सशक्त इच्छाशक्ति जाग्रत होगी। आपको किसी बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। संतुलित आहार के साथ-साथ नियमित व्यायाम/योगा आदि भी करते रहें जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष विद्यार्थी व प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 5 मार्च के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए कोई नया स्रोतों का सृजन करेंगे।

प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले जातकों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है।

द्वादश स्थान पर शनि एवं राहु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- लक्ष्मी जी के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक रूप से अत्यधिक उन्नतिकारक रहेगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति करेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। मार्च के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

वर्ष के उतरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह के प्रतिकूल होने से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगी। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण आय के स्रोत बढ़ेंगे, जिससे धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहें। पैसे के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। संचित धन में कमी आ सकती है। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। नहीं तो धन हानि का योग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से श्रेष्ठ रहेगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। माता पिता के साथ आपके संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही अच्छी है। धर्म पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा व उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी।

13 जुलाई से द्वितीय स्थान के शनि आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न करेंगे। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त रह

सकते हैं। अष्टम स्थान का राहु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पंचमस्थ राहु के कारण आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु मार्च के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। तेल, मसाला व बाहरी भोजन का परित्याग करें। संतुलित आहार के साथ साथ आप नियमित व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। छठे स्थान का राहु एवं एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलैक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रतिकूल होने कारण सफलता के मार्ग प्रभावित होंगे। विद्यार्थिओं की शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर के पास भी हो सकता है। आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

इस यात्रा के अंतराल में पुत्र या परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः यात्रा करते समय सावधानी बहुत जरूरी है। द्वादश स्थान का गुरु आपको विदेश यात्रा भी करा सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा, जिससे निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंग जैसे- गरीबों को खाना खिलाना, भिक्षुओं को दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आदि आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें जिससे राहु का नकारात्मक प्रभाव समाप्त होगा।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि चतुर्थ भाव में और सिंह राशि का राहु पंचम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल व्यवसायियों के लिए मिला-जुला रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। विश्वास पात्र लोगों के साथ कार्य करना लाभप्रद रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 5 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके कार्यों में कुछ सुधार होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। यह सदा सत्य है कि रात के बाद दिन जरूर होता है, इसलिए अपने प्रयासों को जारी रखें, सफलता जरूर मिलेगी। कोई कार्य प्रारम्भ करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात-निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रहा है।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात की जाए तो इसमें कुछ उतार-चढ़ाव रहने की स्थिति बनी रहेगी। चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। आप अत्यधिक क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति हैं। स्वभाव में परिवर्तन करें, यह आपके पारिवारिक जीवन के

लिए अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। माता पिता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। इस समय थोड़ा सावधान रहें और वाद-विवाद में न फंसे। बच्चों के साथ भी कुछ अनबन होने की संभावना है और उनके स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी हो सकती है, अतः उनका ख्याल रखें। आपको जीवनसाथी का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिससे आपकी मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो वह गलत संगत में पड़ सकते हैं। जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है।

पंचम स्थान का राहु संतान को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं दे सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों को ज्यादा ध्यान देने की जरूरत हैं नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक प्रतिकूल रहने वाला है। द्वादश स्थान का गुरु पेट व मोटापे से संबंधित परेशानी दे सकता है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण भी परेशनी हो सकती है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

5 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित बनाएं। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। अपने जीवन में उन्नति करने के लिए अत्यधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। पंचम स्थान का राहु विद्यार्थियों की पढ़ाई में अरूचि उत्पन्न करा सकता है। अतः इस समय के अन्तराल में पढ़ाई में मन को एकाग्र करना भी बहुत जरूरी है। नहीं तो आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

गुरु का गोचर व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अनुकूल सिद्ध होगा। उस समय के दौरान व्यवसायियों को अच्छा लाभ मिलेगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से समय अनुकूल है वर्ष के प्रारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है। 6 अप्रैल से आप लम्बी यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे।

नौकरी करने वालों व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि कम ही रहेगी। यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो उसको भी योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा कार्य में असफलता या यात्रा में व्यवधान आने की आशंका है। 6 अप्रैल से आपका दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। यज्ञ, अनष्ठान, पूजा-पाठ इत्यादि के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे। अपने माता पिता की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म समझेंगे।

- बृहस्पतिवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान (तुला दान) करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में प्रवाहित करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। लग्न का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापर को और सुदृढ़ बना सकते हैं। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें कम समय में अच्छा लाभ होगा। 13 अपैल से चतुर्थ स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु 27 अगस्त के बाद आप उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से सोना, चांदी, रत्न व ज्वैलरी से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागमन तो होगा परन्तु बचत नहीं कर पाएंगे। 13 अप्रैल से समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई क्रय-विक्रय न करें। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। भूमि व वाहन खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें और जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। किसी से उधार पैसा न लें। यह आपके लिए घाटे का सौदा हो सकता है।

अगस्त के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं, तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। 13 अप्रैल से चतुर्थ स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति पारिवारिक माहौल को और भी ज्यादा प्रभावित कर रही है। आपके

माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

27 अगस्त के बाद नैसर्गिक रूप से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में नये सदस्य की बढ़ोत्तरी होगी। मातुल व ससुरल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

पंचम स्थान का राहु अचानक आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। नव विवाहित व्यक्तियों संतान प्राप्ति के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 13 अप्रैल के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी।

शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है, तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

15 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। उस समय सिर दर्द, गैस, व पेट से संबंधित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु अगस्त के बाद आपका समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। शनि एवं गुरु का गोचर अच्छा होने के कारण आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। परन्तु आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण आप मानसिक परेशान रह सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

अगस्त के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को नौकरी

मिल सकती है परन्तु परिश्रम के बाद इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। अप्रैल के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समुद्र व सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होगी।

अप्रैल से अगस्त तक वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है। 27 अगस्त के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपका पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि रखेंगे। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा।

- अगस्त के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तिर्थ यात्रा कर व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले में धारण करें ।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यदि आप व्यापारी हैं तो इस साल आपको काफी लाभ प्राप्त होने वाला है। धन व प्रतिष्ठा दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे। अहंकार का त्याग करें और क्रोध पर काबू रखें। 26 अप्रैल के बाद का समय उन लोगों के लिए अच्छा है जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कारोबार कर रहे हैं। साझेदारी व मित्रता में भी आप कोई कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

नौकरी वालों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। आपका अपने बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है या अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। जो आपके हित में नहीं होगा। चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ लोग आपके खिलाफ साजिस भी कर सकते हैं। परन्तु 16 सितम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद सफलता और समृद्धि आपके साथ रहेगी। 19 अक्टूबर के बाद बिना रुकावट उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। 26 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा पैसा बचाना आपके लिए फायदेमंद होगा। 16 सितम्बर के बाद से आपको लाभ होने लगेगा और जमापूंजी में भी वृद्धि देखने को मिलेगी।

19 अक्टूबर के बाद फिर से विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

घर-परिवार, समाज

26 अप्रैल तक पारिवारिक वातावरण बहुत ही उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के

प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। चतुर्थ स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। मेष लग्न के जातक जल्द ही नाराज हो जाते हैं और बाद में अफसोस भी जाहिर नहीं करते हैं। जीवनसाथी के साथ बेहतर रिश्ते निभाने के लिए आपको अपने स्तर पर प्रयासरत रहना होगा।

माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है, जो आपकी अंतःक्लेश का कारण होगा। इसलिए अंतःक्लेश को अपने ऊपर हावी न होने दें। संतान का स्वास्थ्य अचानक खराब हो सकता है, जिससे आपको परेशानी हो सकती है, अतः संतान के स्वास्थ्य का उचित ख्याल रखें। 19 अक्टूबर के बाद आपकी समाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

26 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही उत्तम हो रहा है। उसके साथ संबंधो में मधुरता आएगी, जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। आप बच्चों की सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। 26 अप्रैल के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी। लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं। जैसे-पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

वजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका वजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ राहु के कारण आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 16 सितम्बर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा, जिससे आपकी आरोग्यता बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। 26 अप्रैल के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 19 अक्टूबर के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। कार्यस्थल पर आपके कार्यों की प्रशंसा होगी और आय में वृद्धि होगी। वरिष्ठ आधिकारी आपकी हर सम्भव मदद करेंगे। आपके प्रदर्शन से आगे कॅरियर में काफी लाभ होगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 29 अप्रैल के बाद से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

16 सितम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनिय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ शनि के कारण आपके सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 26 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान करें एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। सितम्बर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं पंचम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं चतुर्थ में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर 11 मई को पुनः कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष व्यवसायियों के लिए अनुकूल रहेगा। अपने मन को शांत और एकाग्र करके व्यवसाय को बढ़ाने या फिर नए व्यवसाय को शुरू करने के बारे में सोचने की जरुरत है। आपका कुछ समय बर्बाद हो सकता है। परन्तु आप परेशान न हों और अपनी कोशिश को जारी रखें तो सफलता मिलना तय है। सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको व्यवसाय से लगातार आमदनी होती रहेगी। आपके सभी कार्य शीघ्र ही पूरे होंगे। वित्तीय कार्यों से जुड़े लोगों को धन-हानि हो सकती है। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर नौकरी करने वालों के लिए बहुत ही शुभ है। पदोन्नति के साथ मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

22 अक्टूबर के बाद आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ, सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखिम उठाने से परहेज करें। यह हम सभी जानते हैं कि धन की प्राप्ति कठिन परिश्रम और काम के प्रति ईमानदारी से ही होती है। इसलिए धन से सम्बन्धित कोई भी फैसला सोच समझ कर ही लें और कोई भी जोखिम ना उठाएं। अगर आप शेयर बाजार से जुड़े हुए हैं तो उससे थोड़ी दूरी बना लें और कहीं भी निवेश करने से पहले सौ बार सोचें। थोड़े समय बाद आपको खुद ज्ञात होगा कि यह साल अनावश्यक रूप से पैसे खर्च करने के लिए बिल्कुल नहीं था। 11 मई के बाद समय अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है।

7 अक्टूबर के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोत खुलेंगे, जिससे आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे जिसमें आप अच्छा खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहने वाला है। कभी-कभी आप ज्यादा क्रोधित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें। 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भुमिका होगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु बड़े भाई एवं संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा।

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी भी हो सकते हैं।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उस समय आपके बच्चों की आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपकी दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। बजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। मई के बाद आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

अक्टूबर के बाद समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे एवं

सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रहों का प्रभाव होने से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। विदेश में आपको सफलता मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद मुख्यतः सारे ग्रह अनुकूल हो रहे हैं। उस समय आप समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ से ही छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। मई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

अक्टूबर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन सभी यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि तीर्थ यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। मई के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को दान देना, भिक्षुओं को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आप धर्म समझेंगे। कर्म ही पूजा है इस सिद्धांत के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा और आप अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- सातमुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

मुख्यतः सारे ग्रहों को गोचर अनुकूल होने के कारण वर्ष का प्रारम्भ काफी श्रेष्ठ रहेगा। कार्य व्यवसाय में वांछित उन्नति करेंगे। आपके सारे प्रतिद्वन्दी शान्त होंगे। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। परन्तु मार्च के बाद आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं।

पारिवारिक समस्याओं के कारण कार्य व्यवसाय प्रभावित होगा। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय ज्यादा प्रतिकूल रहेगा। राजनीति व शेयर बाजार से जुड़े लोगों को भी अचानक हानि हो सकती है। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा नहीं है तथा साझेदार से भी अनबन हो सकती है। हालांकि 13 जुलाई के बाद आप सभी समस्याओं का निदान निकाल लेंगे और फिर से अपने उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो जाएंगे। उस समय के अंतराल में कुछ अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में पंचमस्थ गुरु आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ हैं। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्ति इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। छठे स्थान के शनि शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकते हैं। परन्तु मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। अतः लेन-देन करते समय सावधान रहें।

13 जुलाई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस अवधि में आप उन्नति करेंगे, परन्तु आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपत्ति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। 4 नवम्बर के बाद शेयर, लॉटरी व सट्टे से दूर ही रहें क्योंकि गुरु, राहु एवं शनि से प्रभावित होकर छठे स्थान में पीड़ित है। जो आपके लिए हितकर नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक सुख-समृद्धि के प्रबल योग बने हुए हैं। पत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे तथा उनके स्वास्थ्य में लाभ होगा। संतान के लिए भी यह समय काफी शुभ है। 7 अप्रैल को द्वितीय स्थान में राहु का गोचर अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। अतः आपको परिवार से जुड़ी छोटी छोटी बातो को भी गंभीरता से लेना होगा तथा परिवार में सभी लोगों के साथ भावनात्मक लगाव बनाए रखें।

पंचम स्थान के शनि आपकी संतान के लिए शुभ नहीं हैं तथा परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित कर सकता है। परन्तु 13 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय घर परिवार में कोई शुभ कार्य होंगे, जिसके प्रभाव से आपके परिवार में स्नेह-सौहार्द का संचार होगा। सामाजिक रूप से यह साल अच्छा रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 5 अप्रैल से समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

13 जुलाई से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि के कारण आप किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे तथा शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आप खूब परिश्रम भी करेंगे। आपकी कार्य क्षमताएं निश्चित रूप से बढ़ेंगी। 5 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। स्वास्थ्य में कुछ उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। मौसम जनित बीमारियों से भी आप प्रभावित रहेंगे।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि 13 जुलाई के बाद समय में फिर से सुधार आएगा। रोगों से शीघ्र मुक्ति मिलेगी। हाथ पैर के दर्द में सुधार होगा और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए श्रेष्ठ है। रोजगार के नये

अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

13 अप्रैल के बाद सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से उन्नति के मार्ग प्रभावित होंगे। जुलाई के बाद आपका नई नई तकनीकि विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिकयात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। दान-पुण्य में भी आप तत्पर्य रहेंगे। साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। मार्च के बाद आलस्य बढ़ेगा, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। जुलाई से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आप गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित करें एवं उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- श्रीखण्ड चन्दन में केसर मिलाकर वीरवार के दिन तिलक करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

काम काज की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक दायरा बढ़ाना चाहते हैं तो मार्च के बाद ही इसके बारे में सोचें क्योंकि मार्च से पहले समय अच्छा नहीं रहेगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी वालों के लिए समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

6 अप्रैल से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपके उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा। व्यापार में उम्मीद से अधिक उन्नति मिलेगी। जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ेगा और आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे। वर्षान्त आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु संचित धन में कमी कर सकता है। निवेश व लेन-देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप व्यापार में अनुकूलता आएगी। शेयर, सट्टा व जुआ से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। सम्पत्ति क्रय करने का सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन, वसीयत व अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होगी।

जून के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। चोरी, बीमारी व दुर्घटना इत्योदि में आपका धन व्यय होने की संभावना बन रही है। यदि धन सम्पत्ति से संबंधित कोई मामला कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें अनुकूलता प्राप्त होगा। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। किसी से ब्याज पर व उधार पैसे लेने की संभावना बन रही है। इस समयांतराल में आपको अपनी धैर्य शक्ति बढ़ानी होगी क्योंकि नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है तथा उसके बाद आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति

अनुकूल नहीं रहने से आप चिन्तित रहेंगे। द्वितीयस्थ राहु के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसे में आपको अपनी सहनशक्ति को बढ़ाना चाहिए। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अप्रैल से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। मातुल पक्ष के लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे तथा सुख व संपन्नता का भाव बना रहेगा। माता पिता से संबंध मधुर रहेंगे। जून के बाद पारिवारिक माहौल किंचित प्रतिकूल होगा परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ-साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा सामाजिक लोग आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। परन्तु 6 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है।

आपके बच्चे आपकी उम्मीदों से बढ़कर अच्छे कार्य करेंगे, जिससे आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। आपको भी उन पर गर्व होगा। परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं है अतः उनके रहन सहन पर ध्यान दें। दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। हालांकि 6 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि शारीरिक आरोग्यता के लिए श्रेष्ठ रहेगी।

आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, परिणामस्वरूप आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। 11 दिसम्बर के बाद लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को अचानक प्रभावित कर सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। यदि आप विदेश में उन्नति करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। प्रतियोगिता परिक्षार्थियों को वांछित क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक यात्राओं का आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

साल का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। सांस्कृतिक उत्सव में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। 28 जून से आप दान पुण्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान आदि में ज्यादा रुचि लेंगे। धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि।

- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दूर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डू का भोग लगाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवन का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष कवच धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए शुभ रहेगा। व्यापार में वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। नौकरी में पदोन्नति व नई नौकरी मिलने की प्रबल संभावना बन रही है। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे, परन्तु जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

व्यापारिक वर्गों से आपको ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व विवादों से दूर रहें। 25 सितम्बर के बाद कुछ नये निवेशक मिलेंगे। आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के मार्ग प्रशस्त होंगे जिसके कारण आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। नई संपत्ति क्रय करने का योग बन रहा है तथा अकस्मात् धन की प्राप्ति होगी। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आपको बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लेना होगा। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य पर भी कुछ पैसे खर्च करा सकता है। आपको सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा।

वर्ष उत्तरार्द्ध आपके लिए काफी उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ में वृद्धि होगी। बैंक से लोन इत्यादि आसानी से प्राप्त सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ होगा। छठे स्थान का शनि आपको शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकता है। निवेश के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। सितम्बर के बाद आपको अचल संपति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपको भाईयों एवं मातुल पक्ष का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय अच्छा नहीं है। अतः इस अवधि में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। पत्नी के स्वास्थ्य का खास ध्यान रखना आपके लिए हितकारी रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद में न पड़ें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

उत्तरार्द्ध में समय पुनः अनुकूल हो रहा है। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी तथा आपके सारे विरोधी शान्त होंगे। परिवार में आपसी सद्भाव का माहौल बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर रहेंगे तथा समय आनंदपूर्वक व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। परिवार के सदस्य आपकी बुद्धिमता की तारीफ करेंगे। जन्दिगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी।

यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। पूरे वर्ष कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। संक्रमण संबंधित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। जाँघ, जननांग या लीवर संबंधिक बीमारियां भी हो सकती हैं। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमारियों से बचा जा सकता है। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय और भी ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में आप अचानक बीमार हो सकते हैं तथा आप शारीरिक ऊर्जा में कमी का अनुभव करेंगे।

जुलाई के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,

जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्षान्त सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 6 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होने की संभावना बन रही है। नवम स्थान पर राहु की दृष्टि लम्बी यात्राओं का प्रबल योग बना रही है। राहु के कारण अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में मित्रता व किसी पर विश्वास करना आपके लिए हानिकारक हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नहीं पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित रहेगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में मानसिक शान्ति बनी रहेगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वो को खुशी के साथ मनाएंगे। साधु महात्माओं का प्रवच सुनना, सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके अंदर गरीबों व दुखियों की निःस्वार्थ सहायता का भाव उत्पन्न होगा।

- अपने पूजा घर में देशी घी का दीपक जलाकर श्रीसूक्त या कनकधारा स्तोत्र का पाठ नियमित करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- सात एवं आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

दशमेश शनि के सप्तम भाव में उच्च राशि में होने कारण बड़े कार्यों के प्रस्ताव मिलेंगे व आप उन कार्यों को करने में सफल भी होंगे। व्यापार के बड़े निर्णय सावधानी से लें तथा विकास की योजनाओं को पूरी जांच परख करके अंजाम दें। किसी भी कानूनी झंझट में पड ने से बचें।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय साझे में काम करने वालों के लिए शुभ रहेगा। दूसरों की लापरवाही और असफलताओं से आप चिन्तित रह सकते हैं। किसी की झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। किसी कार्य में अधिक आत्मविश्वास दिखाना नुकसान दे सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। इन सबके बावजूद अपने रुचि के क्षेत्र में आप अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप कुछ ऐसे कार्यों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। निरर्थक ही पैसे बर्बाद कर सकते हैं। इस वर्ष कुछ ऐसे खर्च भी आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। जोखिम उठाने वाली प्रवृत्तियों जैसे सट्टेबाजी, जुआ आदि से बचें, क्योंकि इनसे आपको कोई बड़ा घाटा हो सकता है।

जून से अगस्त के अंतराल में कुछ व्यापारिक सौदों के माध्यम से आप अच्छा लाभ कमा सकते हैं। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ हो सकता है। भौतिक सुख सुविधा पर आपका पैसा अधिक खर्च होगा। निवेश के लिए यह समय अनुकूल नहीं है क्योंकि द्वादश स्थान का राहु हानि करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार आपके प्रति वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है।

ईष्ट मित्र के साथ सम्बन्धों में मधुरता कम हो सकती है। आप अपने घर परिवार के सदस्यों के हित के बारे में सोचेंगे। परिवार के सदस्यों के ऊपर धन व्यय करेंगे। इन सबके बावजूद भी बीच-बीच में परिवार के कुछ सदस्यों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अपनी समस्याओं के समाधान के लिये परिवार पर अधिक निर्भरता उचित नहीं होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। जून से अगस्त तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय अधिक कष्टकारक हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु के जलीय राशि में होने के कारण कफ या उदर संबंधित बीमारी से परेशानी हो सकती है। जून से अगस्त तक का समय किंचित अनुकूल रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी। अगस्त के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है।

आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें अन्यथा आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम नहीं है। पढ़ाई-लिखाई व प्रतियोगिता परीक्षा में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

जून से अगस्त तक का समय अच्छा रहेगा। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। मई के बाद व्यवसाय से संबंधित यात्राएं अधिक होगी। ये यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी धार्मिक यात्राएं प्रभावित होंगी।

अगस्त के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है क्योंकि वर्षान्त में राहु ग्रह का गोचर दुर्घटना के योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। अष्टमस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। जून के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। इस समय के अंतराल में आप कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। जैसे- हवन, माता की चौकी इत्यादि। वर्षान्त में तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों की सेवा करें तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार का व्रत करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से कुछ प्रतिद्वंदियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु आपके सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। ब्याज पर पैसे देने के लिए समय उचित नहीं है लेकिन 11 सितम्बर के बाद आपका समय अच्छा होगा तथा आपका भाग्योदय होगा। आपको वांछित उन्नति मिलेगी। नौकरीपेसा जातकों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं या प्रतिकूल स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि के प्रभाव से भुमि, भवन व वाहन के साथ-साथ रत्नाभूषण इत्यादि की प्राप्ति भी हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आप खूब खर्च करेंगे।

द्वादश स्थान का राहु कुछ अनावश्यक खर्चे करा सकता है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है इस पूरे वर्ष को आप आनन्द के साथ बिताएंगे। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके पक्ष में होने की संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपके माता जी के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। बात बात पर क्रोधित न हों क्योंकि यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है । आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। जुलाई से सितम्बर तक का समय प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें तथा उन्नति में व्यवधान आ सकता है। लेकिन चिंता न करें क्योंकि सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा तथा उस समय आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। परन्तु 30 जुलाई के बाद अचानक आपकी सेहत बिगड़ सकती है। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें तथा खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें।

11 सितम्बर को गुरु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य को सुधारने वाला है तथा उसके बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक संतुष्टि प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा।

मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल है। ऐसी स्थिति में अपने कार्यों में किसी प्रकार की जल्दबाजी न करें और उसे अविलंब पूरा करने की कोशिश करें क्योंकि वर्षान्त में सफलता मिलने का पूर्ण योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधनी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता। वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में आपका धन चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि होगी। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर उस मन्त्र की साधना कर सकते हैं। गुरुवाणी व गुरुजी पर आपका अटूट विश्वास होगा।

- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन नीली वस्तु का दान करें एवं निम्नलिखित राहु मन्त्र का जाप करें-

  ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। अच्छे व्यवसाय हेतु अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। 16 फरवरी से नौकरी वाले व्यक्तियों के लिए समय शुभ हो रहा है। उस समय आपकी पदोन्नति होगी। कार्यस्थल पर आपके कार्यों की प्रशंसा की जाएगी तथा आपको बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए काफी मेहनत करने वाला रहेगा क्योंकि शनि के आठवें भाव पर गोचरीय प्रभाव से आपके सारे कार्य धीमी गति से आगे बढ़ेंगे। व्यावसायिक कार्यों के चलते आपको निवास स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। व्यापार वृद्धि के लिए नयी सोच व नयी योजनाओं पर विचार करें। बड़े कार्य में सोच समझ कर ही निवेश करें। लगातार प्रयास और दृढ़ निश्चय से जो भी कार्य करेंगे उनमें आप सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार का विस्तार करने से पहले जोखिम की संभावनाओं को ध्यान में अवश्य रखें। प्रॉपर्टी के काम से जुड़े हुए लोगों को लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी नियमित आय बरकरार रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक ही लाभ मिलने या अतिरिक्त आय प्राप्त होने की उम्मीद है। आपमें साहस की कमी नहीं रहेगी। आप आमदनी के नए मार्ग खोजेंगे। 16 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले जातकों के वेतन में वृद्धि हो सकती है एवं प्रोत्साहन राशि भी प्राप्त हो सकती है। रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर खूब खर्च करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह आदि मांगलिक कार्यों में आपका अधिक व्यय होगा।

धन प्राप्ति के अच्छे योग हैं। लेकिन जोखिम भरे कार्यों में धन का निवेश करने से बचें। किसी को पैसे उधार देने से भी बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए यह समय अच्छा नहीं है। क्योंकि अष्टम स्थान का शनि निवेश के लिए अच्छा नहीं होता। सट्टेबाजी अथवा जाखिम भरे कार्यों में धन न लगाएं, घाटा हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो 16 फरवरी के बाद से समय अनुकूल रहने

वाला है। परिजनों, परिचितों एवं मित्रों से हर कार्य में सहयोग मिलेगा। घर के लिए कुछ आवश्यक सामान की खरीदारी में पैसे खर्च होंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार के लिए कोई नया वाहन लेने की स्थिति बना सकती है। मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से आपके कार्य पूर्ण होंगे। अतिथियों के सत्कार में धन खर्च हो सकता है। घर में मांगलिक या धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन हो सकता है। धार्मिक स्थलों के दर्शन हेतु परिवार एवं मित्रों के साथ आप कोई यात्रा भी कर सकते हैं।

परिवार में भाई-बहन और मित्रों के साथ आपके संबंध पहले से अधिक बेहतर होंगे। इस अवधि में आप अपने परिवार और मित्रों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण का आनंद उठाएंगे। माता-पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है, परन्तु अष्टम स्थान का शनि ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध बिगाड़ सकता है। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का मंगल आपकी प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है तथा उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकती हैं, परंतु 12 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है उस समय आपके बच्चे सफलता के मार्ग पर अग्रसर हो जाएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। दूसरे बच्चे के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप अचानक बीमार हो सकते हैं। अष्टम स्थान का शनि मौसमजनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। आलस्य व मानसिक तनाव से आप ग्रस्त हो सकते हैं। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन सहन पर ध्यान दें, क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा संक्रामक बीमारियों से है।

समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियो के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान पर राहु एवं मंगल ग्रह के प्रभाव से पढ़ाई-लिखाई मे कमी व प्रतियोगिता परीक्षाओं में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। नौकरी करने वालों के

लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। आपकी शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। इस समय यदि आप अपने मन को एकाग्र कर पढ़ाई करेंगे तो अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में धार्मिक यात्राएं अधिक करेंगे। जलीय स्थलों की यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

16 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर तबादला होगा तथा यह परिवर्तन आपके लिए काफि शुभ रहेगा। अपने घर से दूर रहने वाले लोगों की इस वर्ष अपनी जन्मस्थली की यात्रा होगी। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम एवं लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्राओं के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठान व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतीत करेंगे। आप किसी सिद्ध पुरूष को अपना गुरु बना सकते हैं तथा उनसे मन्त्र लेकर उस मन्त्र की साधना कर सकते हैं। वर्ष के उत्तरार्द्ध में तन्त्र मन्त्र व काले जादू के प्रति आप आकर्षित होंगे। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आप तांत्रिक सिद्धि व शाबर सिद्ध प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें तथा नित्य उनका दर्शन करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(20/02/2021 - 21/02/2040)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 20/02/2021 को आरम्भ और 21/02/2040 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है।

शनि आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है और लोग बहुधा इससे डरते हैं। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में यह विलम्ब और बाधाएं उत्पन्न करता है। फल प्राप्ति की दिशा में जातक को कठिन परिश्रम के लिये प्रेरित कर यह उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि चौथे, आठवें और ग्यारहवें भाव पर है और इन भावों के कारकत्व पर इसका प्रभाव है। द्वितीय भाव, जिसमें यह स्थित है, सम्पत्ति, लाभ, सांसारिक सुख, दायीं आँख, कल्पनाशक्ति, जिह्वा, दाँत तथा पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

द्वितीय भाव, जो पारिवारिक सदस्यों का भाव है, में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपको स्वास्थ्य की कोई गम्भीर समस्या अथवा दुर्घटना नहीं होगी और आप प्रसन्न रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

द्वितीय भाव स्थित शनि अपने भाव को प्रबलित कर रहा है। इस दशा के दौरान आपके संसाधनों और चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सम्पत्ति का लाभ उठांएगे और अनीति का सहारा भी लेंगे।

व्यवसाय :

आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, सम्पत्ति तथा साहस के स्वामी शनि की द्वितीय भाव में स्थिति के कारण व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ होंगे। सम्पत्ति का भाव आपको पर्याप्त धन और धनोपार्जन के स्रोत प्रदान करेगा। यदि आप नौकरीपेशा हैं तो आप की पदोन्नति के अनेक मार्ग खुलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो अनेक नये उद्यम आपके मस्तिष्क में उभरेंगे और आप पर्याप्त धन अर्जित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

यह दशा आपके पारिवारिक जीवन के लिए बहुत अनुकूल नहीं है। आपके पारिवारिक जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। आपको पारिवारिक सुख नहीं मिलेगा क्योंकि आपका दूसरी स्त्रियों की ओर झुकाव है और आप दूसरों की सम्पत्ति हड़पना चाहेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति में विकास के लिए यह दशा अनुकूल नहीं है।

अंर्तदशा :- शनि - बुध
(24/02/2024 - 03/11/2026)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 20/02/2021 को प्रारंभ होकर 21/02/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 24/02/2024 को प्रारंभ होकर 03/11/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी संगीत में रुचि होगी। विदेश जा सकते हैं। कार्यक्षेत्र में सम्मान होगा। शिक्षाविद बन सकते हैं। व्यवहार नीतिपूर्ण रहेगा। उच्चपद पर आसीन होंगे।

बुध बुद्धि का कारक है और आपके लिए शुभ है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - केतु
(03/11/2026 - 13/12/2027)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/02/2021 को प्रारंभ होकर 21/02/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 03/11/2026 को प्रारंभ होकर 13/12/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको अच्छे अवसर मिल सकते हैं, पर कुछ विचित्र अनुभव भी हो सकते हैं। कुल मिला कर यह अंतर्दशा अशुभ ही रहेगी। अचल संपत्ति की हानि हो सकती है ; खुशियों में कमी आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(13/12/2027 - 12/02/2031)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/02/2021 को प्रारंभ होकर 21/02/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 13/12/2027 को प्रारंभ होकर 12/02/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी बुद्धि तीव्र होगी, मगर कार्यक्षमता में कुछ कमी आ सकती है। संगीत और कला में रुचि हो सकती है। आर्थिक स्थिति में कुछ गिरावट आ सकती है, क्योंकि आपकी विवादों में दिलचस्पी हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(12/02/2031 - 25/01/2032)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 20/02/2021 को प्रारंभ होकर 21/02/2040 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 12/02/2031 को प्रारंभ होकर 25/01/2032 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में तीसरे भाव में स्थित है। तीसरा भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

तीसरे भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी महत्वपूर्ण व्यक्तियों से लाभदायक मित्रता होगी। साहसी और साधनसंपन्न होंगे। प्रोन्नति हो सकती है; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। हर काम में सफलता मिलेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(25/01/2032 - 25/08/2033)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 20/02/2021 को प्रारंभ होकर 21/02/2040 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। चंद्रमा मन और माता का कारक है।

इस अवधि में आप बाधाओं के बावजूद कार्यक्षेत्र में दक्षता और सफलता प्राप्त करेंगे। समान में लोकप्रिय होंगे; उच्चपद प्राप्त होगा। घरेलू जीवन भी सुखी रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(25/08/2033 - 04/10/2034)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 20/02/2021 को प्रारंभ होकर 21/02/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 25/08/2033 को प्रारंभ होकर 04/10/2034 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 1, 4, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको प्रत्येक कार्य में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, मगर धन खूब कमाएंगे और धनी बनेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं, मगर जल्दबाज और प्रशंसापसंद हो सकते हैं। वाहन सुख रहेगा। विज्ञान और तकनीकी में दक्ष बनेंगे। अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में कच्चे दूध से धोकर, मंगलवार के दिन प्रातःकाल में हनुमानजी, गणेशजी और शिवजी की उपासना के उपरांत धारण करें।

महादशा :- बुध
(21/02/2040 - 20/02/2057)

बुध की महादशा 21/02/2040 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 20/02/2057 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध चतुर्थ भाव में स्थित हैं। बुध की

दृष्टि दसवें भाव पर हैं। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। इसमें आपकी यात्रा, व्यय तथा लाभ हुए होंगे। बुध की वर्तमान दशा में आपको यश, ख्याति, सम्मान, जीवन-वृत्तिमें सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय तथा आशावादी होंगे और आप में स्फूर्ति तथा शक्ति प्रचुर मात्रा में होगी। अत्यधिक क्रियाशीलता के कारण ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक थकावट आदि मामूली बीमारियाँ हो सकती हैं। इनसे बचने के लिए सावधानी बरतें। इन सबको छोड़ कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार में अच्छी आय होगी। आपको अपने माता-पिता से लाभ मिलेगा। सट्टा लाभदायक रहेगा। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। आपको नौकरी में भी लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, ज्योतिष, शिक्षण अथवा कम्प्यूटर प्रोग्रैमर के कार्य का चयन कर सकते हैं। आप बौद्धिक कार्यों के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं। रत्न, पुस्तक लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपोशा लोगों को इस दशा में लाभ, आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी जबकि व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता प्रतिष्ठा मिलेगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की वर्तमान दशा में आपको वाहन तथा जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपको आराम तथा जमीन-जायदाद से लाभ मिलेगा आपका एक सुन्दर मकान होगा। जमीन-जायदाद के सभी मामलों के लिए यह दशा उत्तम है। आपकी शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी तथा शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी और शिक्षा के क्षेत्र में यश और ख्याति मिलेगी। अभी परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक कार्यों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभावान, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में रुचि रखते हैं। आपका दिमाग बौद्धिक और विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। उन पर आपका कुछ-व्यय होगा। उनसे आपको बहुत सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की जीवन-वृत्ति सफल होगी। उनकी उन्नति होगी तथा यश, ख्याति, उत्तम आमदनी और सम्मान मिलेगा। जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनके मित्र होंगे तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता स्फूर्तिवान होंगे कार्यों में रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई बहनों का

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा उन्हें ननिहाल से लाभ और नौकरी में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख और जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी, आप के अनेक मित्र होंगे तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी और वाहन तथा सुख की प्राप्ति होगी। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, छोटी यात्रा तथा सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चन्द्र के कारण बच्चों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा और भाग्यादेय होगा। राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप, यश, ख्याति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के कारण व्यय, यात्रा और कुछ लाभ हो सकता है।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(21/02/2040 - 20/07/2042)

आपके लिए बुध की महादशा 21/02/2040 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 21/02/2040 को प्रारंभ होकर 20/07/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको घरेलू सुख और समृद्धि प्राप्त होंगे। किस्मत साथ देगी। जीवन खुशियों से भरपूर रहेगा। शिक्षा में सफल रहेंगे। बहुत से मित्र होंगे। धनी बनेंगे। अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। विज्ञान, संचार-माध्यम और व्यापार में दक्ष रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता की अध्यात्म में रुचि होगी; प्रसिद्ध होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ, उत्तम शिक्षा, अध्यापन से आय, लेखन, स्पर्धियों पर विजय और उत्तम कार्यालय का संकेत है। आपकी संतान को शिक्षा में सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे और व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हरे वस्त्र, मिश्री और कपूर दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(20/07/2042 - 17/07/2043)

आपके लिए बुध की महादशा 21/02/2040 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 20/07/2042 को प्रारंभ होकर 17/07/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। घर में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। पैतृक संपत्ति मिल सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। निवास जन्मस्थान से दूर हो सकता है। जायदाद से अच्छी आय होगी। प्रसिद्धि और लोकप्रियता की संभावना है। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। अदालत में जीत होगी, व्यापार में लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, धन का संचय होगा। आपकी माता प्रसिद्ध होंगी, धनी बनेंगी, आत्मविश्वास उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, सरकार से लाभ, रिश्तेदारों से अच्छे संबंध, उत्तम

स्वास्थ्य, शत्रुओं पर विजय, दृढ़निश्चय और लक्ष्य की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, यात्राएं हो सकती है, अधिक परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो वातावरण में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा, प्रगति अच्छी होगी। व्यापारी धन कमाएंगे, व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती की मामूली व्याधि का इलाज ठीक से करवाएं। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(17/07/2043 - 17/05/2046)

आपके लिए बुध की महादशा 21/02/2040 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 17/07/2043 को प्रारंभ होकर 17/05/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप स्वयं के प्रयास से सफल होंगे। छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी। बहुत से मित्र होंगे। उत्साह और ऊर्जा से युक्त रहेंगे। लघु, सुखद यात्राएं हो सकती हैं। कला, वाक्शक्ति, और सामान बेचने में दक्ष होंगे। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। धन, संपदा से युक्त होंगे। परिवार से सुख मिलेगा। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। दान-धर्म में भाग ले सकते हैं। अध्ययन में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में धनार्जन अच्छा होगा। माता धन की बचत करेंगी; शत्रुओं पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए मनोरंजन, सुख, उच्चपद, धन, संतान से खुशी, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। अगर वे कार्यरत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, अच्छे मित्र होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे, उच्चाधिकारियों से लाभ होगा, प्रसिद्धि मिलेगी। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्र और कान की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

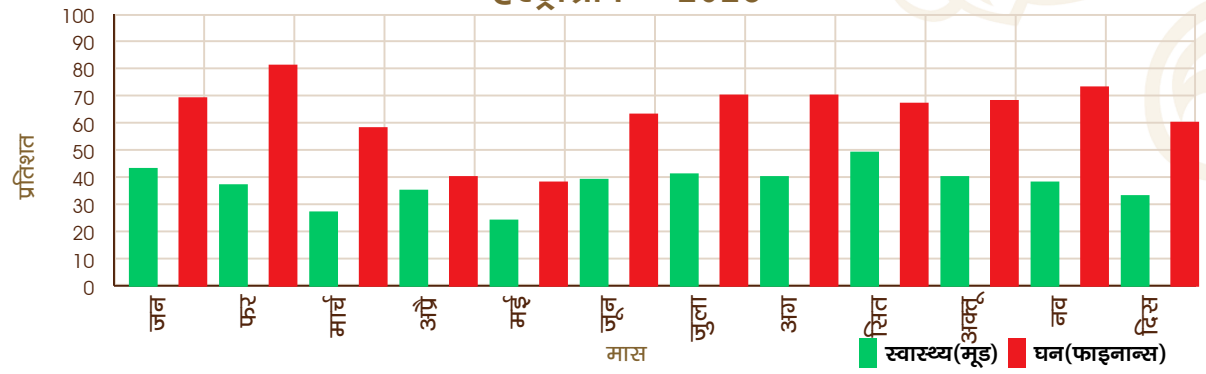

एस्ट्रोग्राफ - 2026

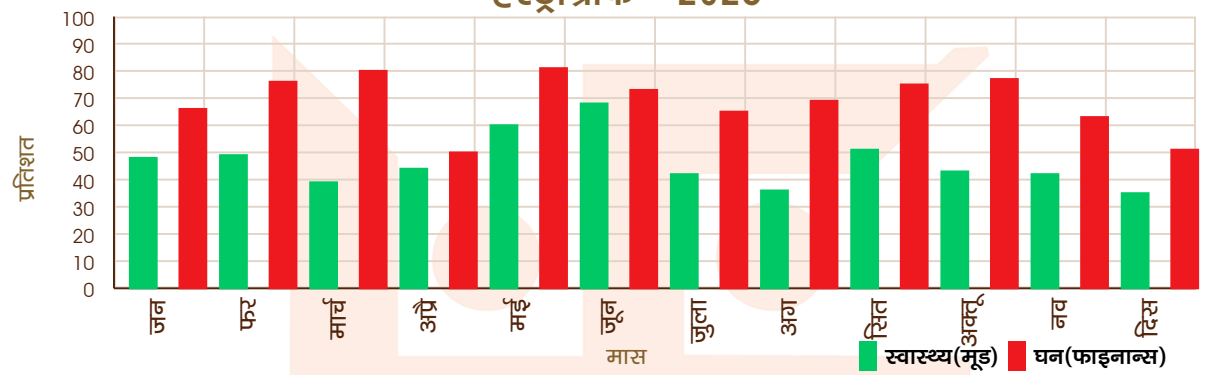

एस्ट्रोग्राफ - 2027

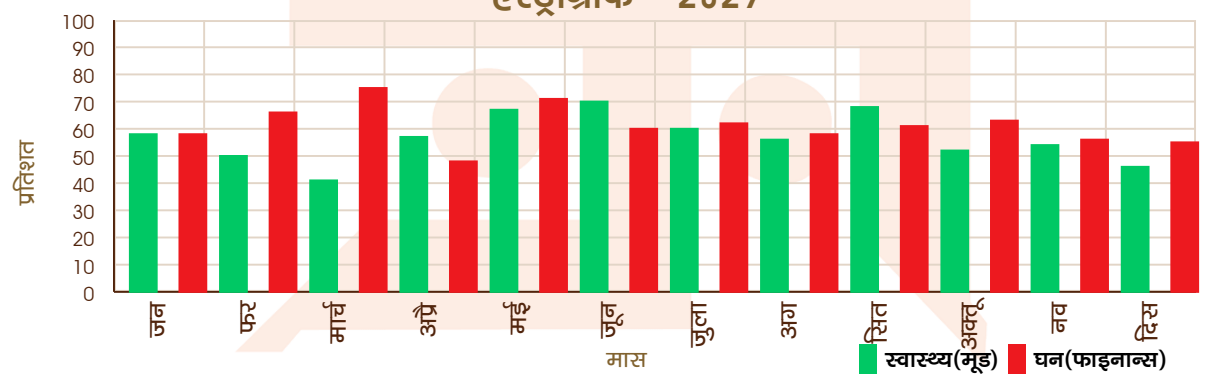

एस्ट्रोग्राफ - 2028

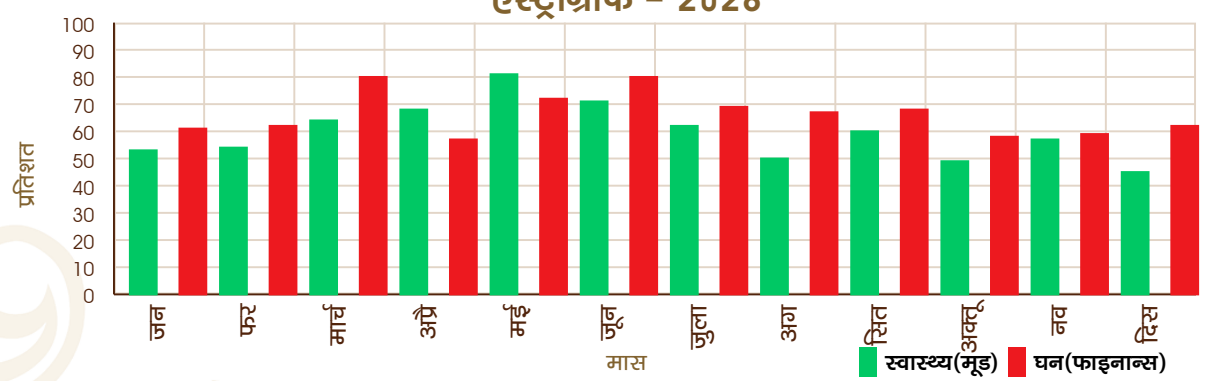

एस्ट्रोग्राफ - 2029

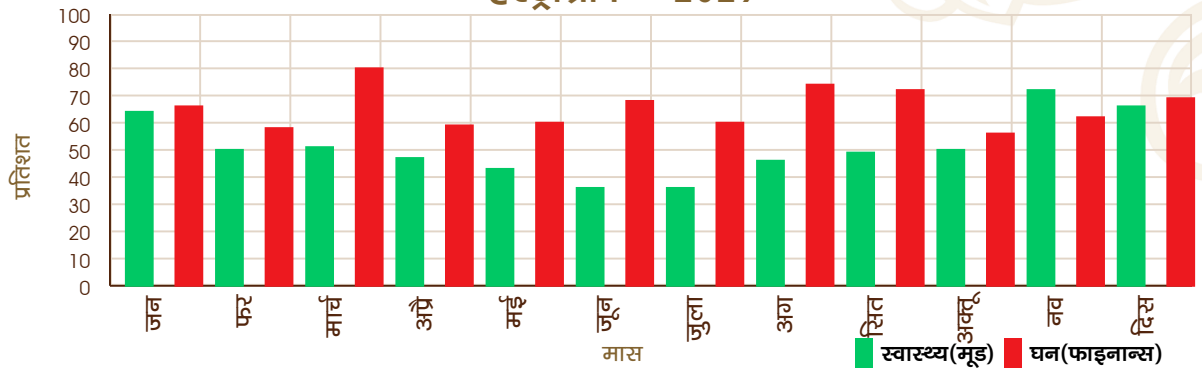

एस्ट्रोग्राफ - 2030

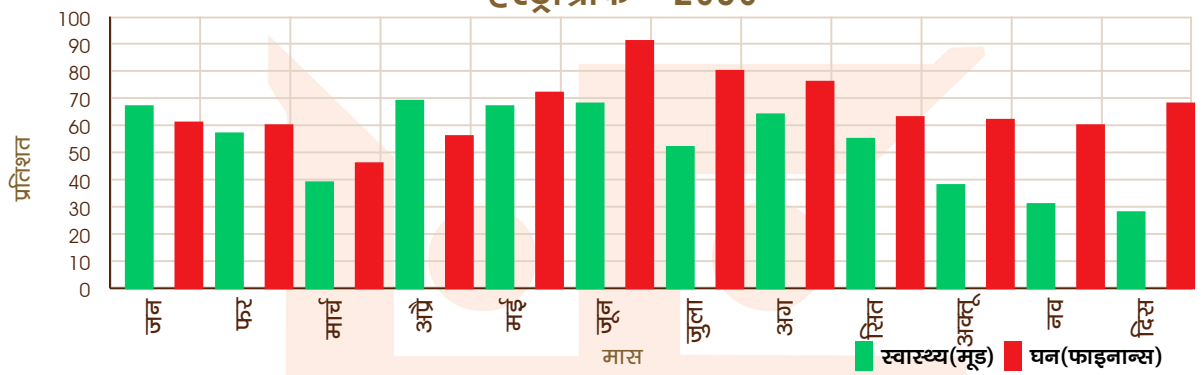

एस्ट्रोग्राफ - 2031

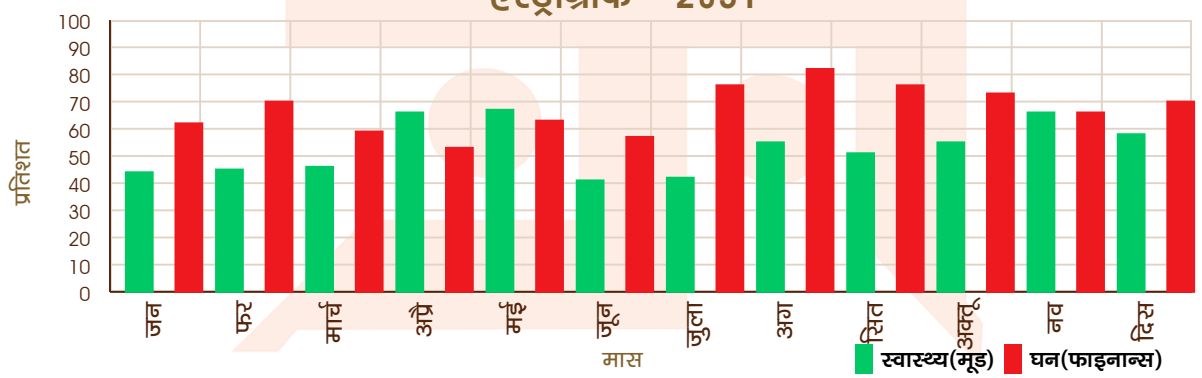

एस्ट्रोग्राफ - 2032

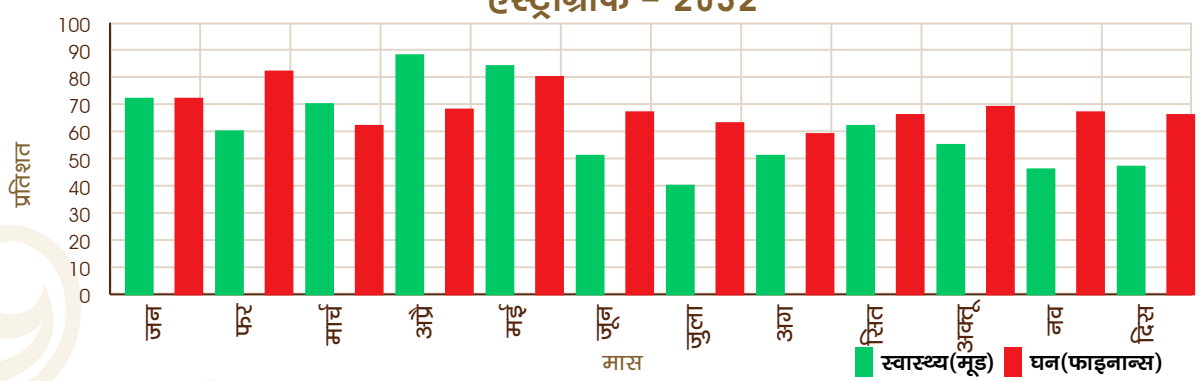

एस्ट्रोग्राफ - 2033

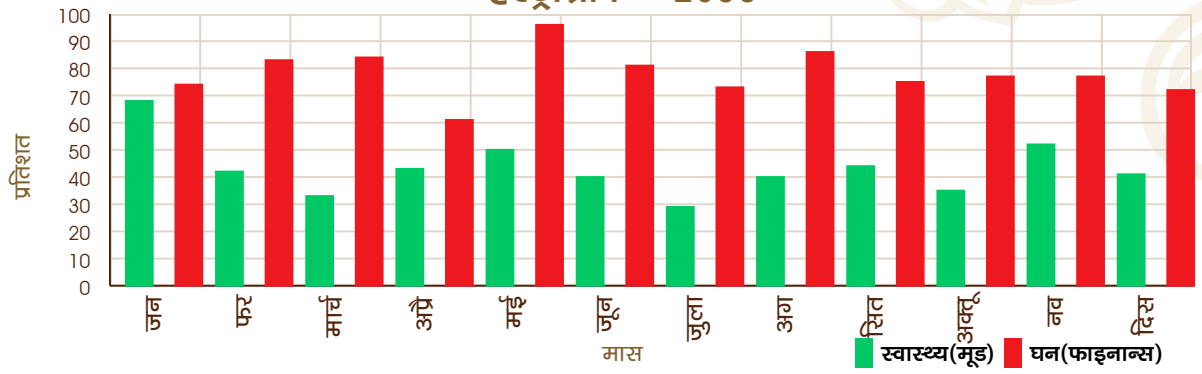

एस्ट्रोग्राफ - 2034

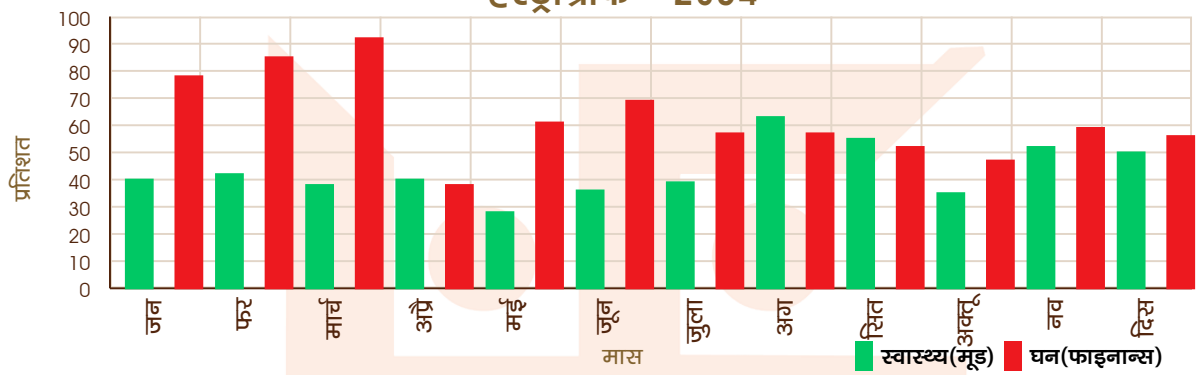

एस्ट्रोग्राफ - 2035

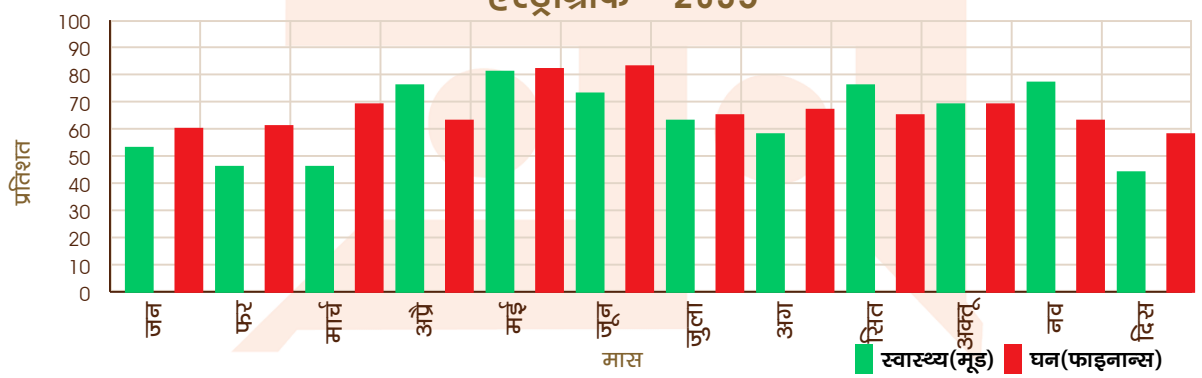

एस्ट्रोग्राफ - 2036

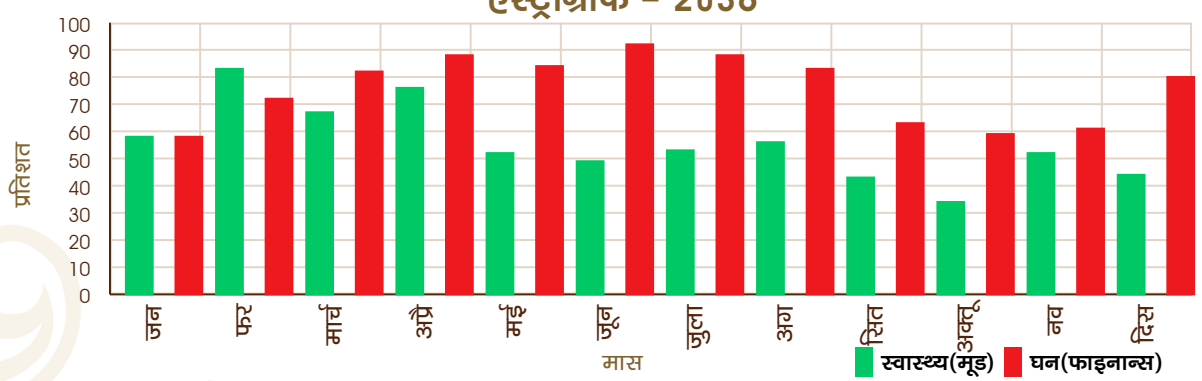

एस्ट्रोग्राफ - 2037

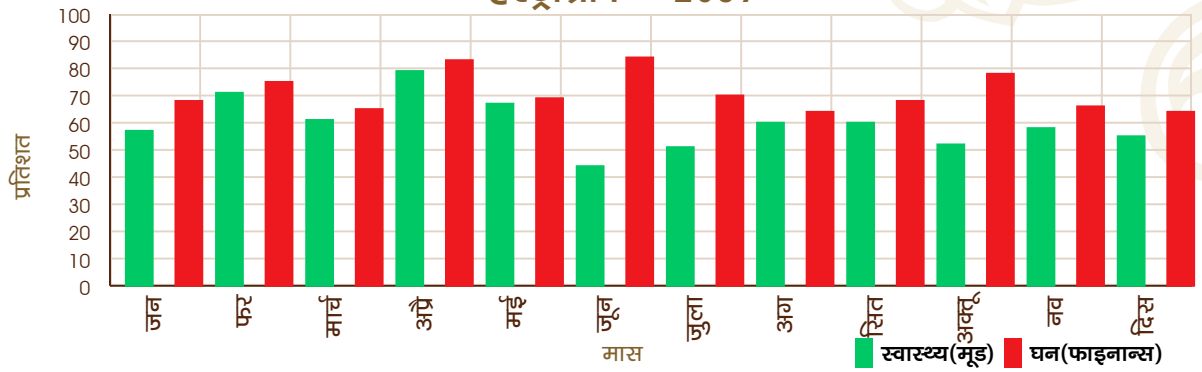

एस्ट्रोग्राफ - 2038

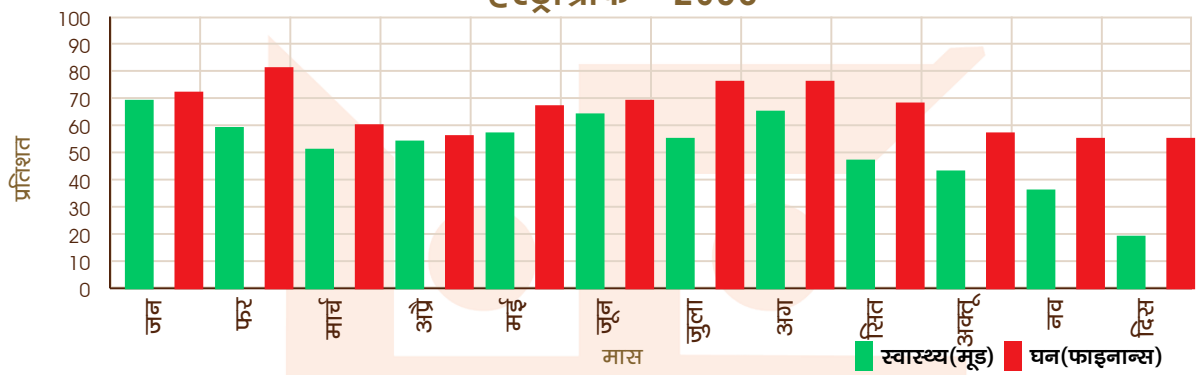

एस्ट्रोग्राफ - 2039

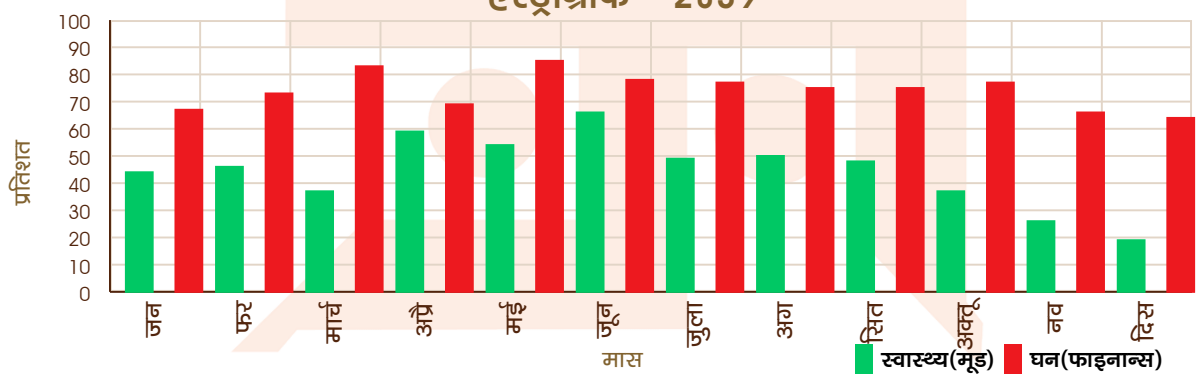

एस्ट्रोग्राफ - 2040

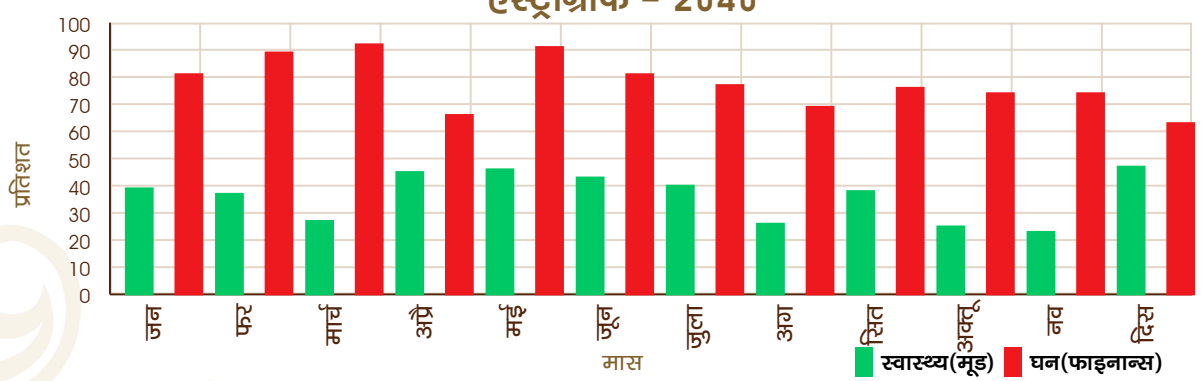

एस्ट्रोग्राफ - 2041

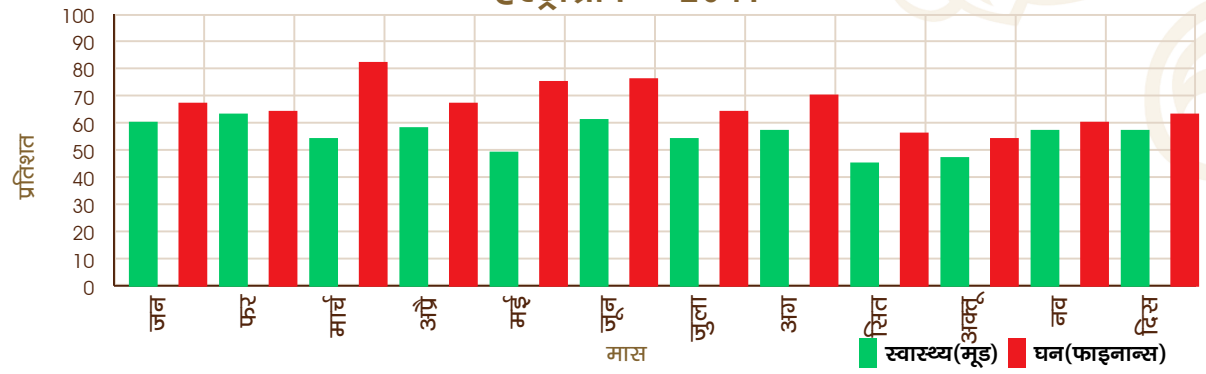

एस्ट्रोग्राफ - 2042

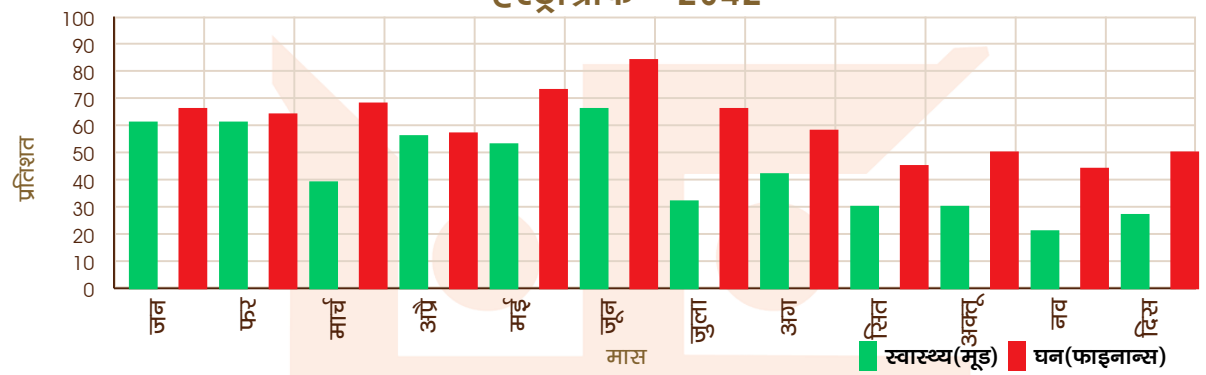

एस्ट्रोग्राफ - 2043

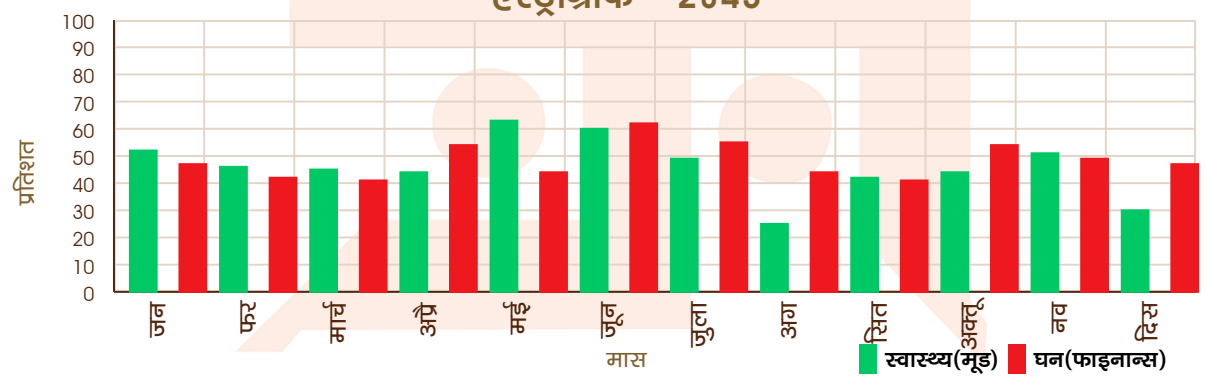

एस्ट्रोग्राफ - 2044

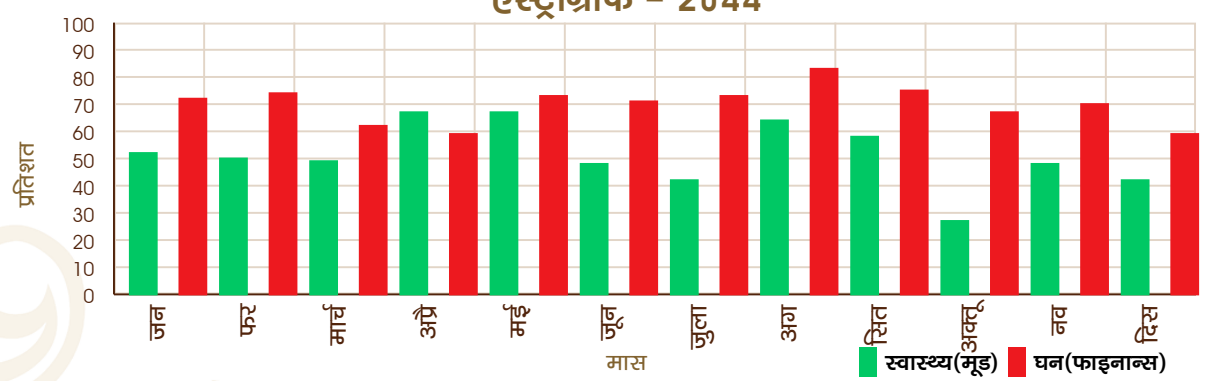

योग

रुचक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
दीर्घाः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरवलः साहसप्राप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्त्तिः।
रक्तःश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः ।
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः।।
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवाणा-
विज्ञाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात्।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्ध्यतुल्यम्।।
सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्य।
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं प्रयाति।।
।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 3-5 ।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर मंगल केन्द्र में हो तो रुचक नामक योग बनता है।

इस योग वाला जातक दीर्घायु होता है। वह सुन्दर कान्ति, शक्तिशाली, साहसी, यश प्राप्त करने वाला, महावीर, मन्त्रवेत्ता, शत्रुओं को भय दिखाने वाला, क्रूरप्रकृति वाला, गुरु वर्गों के समक्ष विनम्र, हाथ पैरों में खट्वाङ्ग (शिव अस्त्र विशेष), पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, विद्या आदि रेखा होती है, ये चिह्न भाग्यशाली मनुष्यों के द्योतक हैं। अच्छी सम्मति देने वाला, युद्धादि अथवा मारणादि प्रयोगों में कुशल होता है। शस्त्राग्नि चिह्न से युक्त जातक देवस्थान के समीप मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में रुचक नामक महापुरुष योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। यह योग अत्यंत ही उत्तम माना जाता है। फलस्वरूप आप एक प्रभावशाली, पराक्रमी, विख्यात् एवं धनेश्वर्य से युक्त होंगे, तथा पराक्रम से उच्चराज योग की प्राप्ति करेंगे। आप सेना, इन्जीनियरिंग, मेडिकल, होटल एवं भवन निर्माण सम्बंधी क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कर सकते हैं।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाद्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।

।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु,गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

कीर्त्ति योग

कर्मस्थानगते चन्द्रे तदीशे तत्त्रिकोणगे।
लग्नेशे केन्द्रभावस्थे सत्कीर्त्तिसहितो भवेत्।।
।। बृहद् पाराशरहोराशास्त्र ।। अ. 12/श्लोक

यदि जन्मकुण्डली में कर्म भाव में चंद्रमा हो और कर्मस्थान से त्रिकोण में कर्मेश हो तथा लग्नेश केंद्रस्थ हो तो जातक कीर्त्तिवान् होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल,गुरु योग की संभावना : 216 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप एक कीर्तिवान् प्राणी होंगे।

अचल लक्ष्मी योग

चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुंचति।।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 8।।

यदि जन्मकुंडली में मंगल के साथ चंद्रमा चाहे जिस भाव में हो जातक के पास सदैव लक्ष्मी निवास करती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके पास सदैव धन रहेगा। आपके घर में स्थिर लक्ष्मी निवास करेगी।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,शुक्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,राहु,केतु,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

हृदय रोग योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश के साथ केतु स्थित हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हृदय रोग के रोगी होंगे ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-59 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-143 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

लग्नेश्वरेण संदृष्टे मातृनाथे चतुष्टये ।
शुभग्रहान्विते दृष्टे मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-149 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश केंद्र में लग्नेश से दृष्ट शुभ ग्रह युक्त वा दृष्ट हो तो जातक को माता से पूर्ण स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र,मंगल योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको माता का पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल,चंद्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वाहन योग

उच्चाह्वये कर्मगते लग्ननाथेन वीक्षिते ।
भाग्याधिपेन वा दृष्टे वाहनाधिपतिर्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-175 ।।

यदि जन्मपत्रिका में उच्च का ग्रह दशम भाव में लग्नेश अथवा नवमेश से दृष्ट हो तो जातक वाहनों का स्वामी होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक वाहनों का सुख प्राप्त होगा ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,चंद्र,बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु,मंगल — योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल,शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,केतु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।